प्रवाह

उत्तरकाशी स्कूल विशेषांक – 6

सितम्बर – नवम्बर 2017

फोटो: संजीव बिजल्वाण

भीतर के पन्नों पर...

- बागानों के मध्य खिलता–संवरता बचपन
- जहां निखरती हैं बेबाक अभिव्यक्तियां
- शैक्षिक उन्नयन पर केन्द्रित
- समुदाय का प्यारा स्कूल

Azim Premji Foundation

चित्र : रानू टाइटस, एकलव्य की पुस्तक ‘दूध-जलेबी जग्गग्गा!’ से साभार।

फिजूलखर्च स्कूल

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है, पर प्रारम्भिक स्तर पर यह सबसे स्पष्ट है। नर्सरी व प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं हैं। वे पहले ही एक ऐसा मूल्यवान साधन बेकार जाने दे रहे हैं, जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहां छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलाएगा।

• कृष्ण कुमार की पुस्तक `बच्चे की भाषा और अध्यापक’ से साभार

सम्पादकीय

बेहतर स्कूलों की ओर प्रवाह

लोकतांत्रिक शिक्षा का इतिहास लोकतांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था के उद्भव और विकास के साथ शुरू होता है। दुनिया भर में ऐसी शिक्षा सामंतवादी शिक्षा जिसमें शिक्षा और ज्ञान शासक वर्ग की संपत्ति माने जाते थे – के निषेध के साथ सामने आती है। लोकतांत्रिक राज्यों ने ही अपने विधानों में सभी के लिए शिक्षा को प्रावधान किया। दुनिया का कोई अन्य देश हो भारत या उसका कोई राज्य सभी अपने नागरिकों के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करने की कोशिश करते रहे हैं। लोकतांत्रिक शिक्षा ने ही सबसे पहले लोकतांत्रिक मनुष्य को परिभाषित किया। उसी ने शिक्षा का लक्ष्य 'मनुष्य का समग्र विकास' घोषित किया और इसे आधुनिक दृष्टि से परिभाषित किया।

व्यक्तित्व के 'समग्र' विकास का यह अर्थ कतई नहीं लगाया जाना चाहिए कि एक ही मनुष्य को सभी प्रकार का विषय ज्ञान हो जाए या वह सभी प्रकार की दक्षताओं और गुणों का पुतला बन जाए उसमें कोई कमी रहे ही नहीं। 'समग्रता' से तात्पर्य मनुष्य के 'शरीर', 'मन' और 'सामाजिक गुणों' के विकास से है। 'शरीर' से आशय है स्वस्थ और निरोग होना, अपने और दूसरों के स्वास्थ्य को एक मूल्य के रूप में स्वीकार करना, अपनी दिनचर्या में 'स्वास्थ्य' अच्छा बनाए रखने की गतिविधियों को जगह देना, 'मन' से आशय है ऐसे विचार और नजरिए जो लोकतांत्रिक धारणाओं/मूल्यों को स्वीकारते हों, जिनमें वर्गगत, जातिगत और धार्मिक भेदभाव के लिए कोई जगह न हो। जो वर्तमान और भविष्य की सुन्दरता में विश्वास रखें। 'सामाजिक गुणों' से आशय है अपने लोकतांत्रिक विचारों के अनुसार आचरण, खुद से ज्यादा समाज की बेहतरी के लिए काम करना, आर्थिक स्वालंबन, साधनहीन और आर्थिक सामाजिक रूप से वंचित समुदायों के लिए सहानुभूति और उन्हें समर्थ बनाने में मदद करना। हमारी स्कूल प्रणाली को इस तरह के व्यक्तित्व बनाने के एक शुरूआती उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। लोकतंत्र में स्कूल नामक यह उपकरण हमारे लोकतांत्रिक उद्देश्यों के अनुसार काम कर रहा है या नहीं, इसकी झलक वहां चल रही गतिविधियों में देखने को मिलती है।

'प्रवाह' स्कूल विशेषांक के क्रम में यह छठवां अंक है। इस अंक में हम उत्तरकाशी के ग्यारह स्कूलों को दस्तावेजीकरण कर पाये हैं। हालांकि ऐसे और भी स्कूल होंगे पर इस पत्रिका की सीमा है। इस अंक में आये रा.प्रा.वि. सेवरी, उ.रा.प्रा.वि. बजलाड़ी, नौगांव, रा.प्रा.वि. फफराला और रा.प्रा.वि. जागटा, मोरी, रा.प्रा.वि. छाड़ा और रा.प्रा.वि. डोरिका, पुरोला, रा.प्रा.वि. जसपुर तल्ली, चिन्यालीसौड़, रा.प्रा.वि. नवागांव और रा.प्रा.वि. फोल्ड, डुण्डा, रा.प्रा.वि. लाटा और रा.प्रा.वि. बोंगा, भटवाड़ी का आभार व शुभकामनाएं कि बेहतरी की दिशा में निरंतर अग्रसर रहेंगे।

आपके

आशीष त्रिपाठी व संजय सेमवाल
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
टीम उत्तरकाशी

मेरा स्कूल...

– रबीन्द्रनाथ टैगोर

अकसर जब लोग मुझसे पूछते हैं कि मेरा स्कूल किस विचार पर आधारित है तो उनके ज़ेहन में यह कौतुक ही बड़ा कारण होता है। इस सवाल का जवाब देना मेरे लिए हमेशा बड़ा मुश्किल होता है क्योंकि प्रश्न पूछने वाले मुझ से खास तरह के उत्तर की उम्मीद करते हैं।

स्कूल जाना मेरे लिए एक बुरा अनुभव साबित हुआ। ऐसा नहीं है कि मेरा स्वभाव कुछ अजीब था या जिन स्कूलों में मेरी पढ़ाई हुई वे कुछ ज्यादा ही बुरे थे। संभव है कि अगर मैं उतना संवेदनशील न होता तो धीरे–धीरे उन दबावों को झेलना सीख जाता और अंततः विश्वविद्यालय की डिग्री भी बटोर ही लेता। पर कुल मिलाकर बात ये है कि सभी स्कूलों के अपने मानक होते हैं। सब अपने हिसाब से अच्छे या बुरे होते हैं।

शिशु का आहार मां का दूध होता है। मां का साहचर्य और भोजन उसके साथ प्राप्त होता है। शिशुओं के शरीर और आत्मिक विकास के लिए यह एक संपूर्ण पौष्टिक आहार होता है। जीवन के इसी बिंदु पर शिशु का साक्षात्कार इस महान सत्य से होता है कि सृष्टि के साथ मनुष्य का वास्तविक संबंध किसी यांत्रिक कार्य–कारण नियम से तय नहीं होता बल्कि निजी प्रेम से तय होता है। अतः, बचपन को जीवन की क्षुधा शांत करने का भरपूर मौका मिलना चाहिए। बच्चों में जीवन के ऐन्द्रिक अनुभवों को जानने की अंतहीन प्यास होती है। बच्चे के मन में यह बात बहुत गहराई से बैठायी जानी चाहिए कि वह मनुष्यों की जिस दुनिया में जन्मा है उसका बाहर की भौतिक दुनिया से भी एक लयपूर्ण संबंध है। और हमारे पारंपरिक स्कूल में उच्चतर ज्ञान का दंभ दिखाकर ठीक इसी बात की अनदेखी की जाती है। पारंपरिक स्कूल बच्चों को ईश्वर की कारीगरी के अनंत रहस्यों और व्यक्तित्व के सूक्ष्म आशयों से भरी दुनिया से जबरन बेदखल कर देता है। ऐसा स्कूल सिर्फ अनुशासन का एक ढंग होता है जिसमें बच्चों और उनकी विशिष्टताओं के लिए कोई जगह नहीं होती। पारंपरिक स्कूल एक खास ढंग के परिणाम तैयार करने का कारखाना बन कर रह गया है। वहां शिक्षा की कथित नहर खोदने की फिराक में एक सीधी लकीर के ऊपर चलने पर जोर दिया जाता है ताकि एक औसत परिणाम प्राप्त किया जा सके। लेकिन जीवन तो कभी सीधी लकीर पर नहीं चलता। उसे औसत की काल्पनिक लकीर के साथ चुहल करने में मजा आता है। और यही वह चीज है जो हमारे पारंपरिक स्कूल को सबसे नागंवार लगती है। दरअसल, स्कूल की व्यवस्था में जीवन को तभी सफल माना जाता है जब उसे काट–छांट कर एक निश्चित सांचे में ढाल दिया जाता है। मेरे स्कूली जीवन की पीड़ा का यही कारण था। स्कूल में दाखिला लेते ही मेरे आसपास की दुनिया गायब होने लगी। उसकी जगह लकड़ी की बैंचों और सपाट–सूनी निगाहों से घूरती रहने वाली दीवारों ने ले ली।

कहते हैं कि ज्ञान का फल चखने के बाद मनुष्य स्वर्ग में नहीं रह सकता। लिहाजा, मनुष्य की संतानों को स्वर्ग त्याग कर एक ऐसी दुनिया में जाने को मजबूर किया जाता है जहां दर्जीखाने की शिष्टता हावी रहती है। तो मुझे स्कूल के उस बेतरह तंग सांचे को कुछ उसी तरह स्वीकार करना पड़ा जैसे एक जमाने में चीनी औरतों को तंग जूते पहनने के लिए मजबूर किया जाता था। यह सांचा हर पल, हर कदम मुझे चुभता था, मुझे छीलता था। परंतु मैं भाग्यशाली रहा कि चेतना सुन्न होने से पहले ही उस जंजाल से बाहर निकल आया।

हम इस दुनिया को अपनाने के लिए आए हैं सिर्फ उसे जानने के लिए नहीं आए हैं। ज्ञान के बल पर हम ताकतवर तो बन सकते हैं पर संपूर्णता सहृदयता से ही आती है। सबसे बड़ी शिक्षा वह होती है जो हमें सिर्फ सूचना से लैस

नहीं करती बल्कि समूची सृष्टि के साथ समरस होना सिखाती है। लेकिन हम पाते हैं कि दूसरे से जुड़ने की इस सहृदयता की स्कूलों में सिर्फ अनदेखी ही नहीं की जाती बल्कि उसका बाकायदा दमन किया जाता है।

बहुत से लोगों को लगता है कि मैं अपने स्कूल में सादा जीवन–शैली के नाम पर मध्यकालीन गरीबी का आदर्शीकरण करना चाहता हूं। शिक्षा के दृष्टिकोण से देखा जाए तो क्या गरीबी सचमुच मनुष्य के लिए वह पहली पाठशाला नहीं है जहां वह जीवन के प्रारंभिक सबक और सबसे जरूरी हुनर सीखता है? जन्म के समय लखपति का बेटा भी निरुपाय और गरीब ही होता है। उसे भी जीवन के सबक शुरू से ही सीखने पड़ते हैं। पैरों के इस्तेमाल से बचने की तमाम सुविधाओं के बावजूद उसे भी एक गरीब बच्चे की तरह चलना सीखना पड़ता है। विपन्नता हमें जीवन और दुनिया के बेहद करीब ला देती है क्योंकि संपन्नता का जीवन एक नकली या कमतर सच्चाई का जीवन होता है। संपन्नता भी सुख और ऐश्वर्य के लिए तो ठीक हो सकती है किन्तु शिक्षा के संदर्भ में वह एक बाधा ही सिद्ध होती है। वह सोने का एक ऐसा पिंजरा होती है जिसमें अमीर आदमी के बच्चों की शक्ति कुंठित हो जाती है। अमीरी की आदतों के शिकार लोग मेरे स्कूल को देख कर खूब नाक–भौं सिकोड़ते हैं। मैंने यहां उसी महान अध्यापक यानी फर्नीचर और साजो–सामान की न्यूनता को तैनात किया है, इसलिए नहीं कि यह गरीबी है बल्कि इसलिए क्योंकि साजो–सामान की अनुपस्थिति दुनिया के साथ हमारे संबंध को और प्रगाढ़ बनाती है।

अपने स्कूली–जीवन में मुझे सबसे ज्यादा रंज इस बात से होता था कि वहां स्वाभाविक दुनिया जैसी परिपूर्णता नहीं थी। वह सिर्फ एक ऐसी जगह थी जहां पाठ पढ़ाने की विशेष व्यवस्था कर दी गई थी। यह जगह उन वयस्क लोगों के लिए तो उचित हो सकती थी जिन्हें ऐसे स्थानों की अहमियत का पता हो और जो जीवन से कटने की कीमत पर भी ऐसी शिक्षा लेने के लिए तैयार हों। परंतु बच्चों में जीवन की ललक होती है। उनका पहला प्यार जीवन ही होता है। उनका ध्यान हमेशा जीवन के रंगों और उसकी चहल–पहल की तरफ रहता है।

क्या इस प्रेम का गला घोंटकर हम वाकई बुद्धिमत्ता का

परिचय देते हैं? बच्चे जन्मजात संन्यासी नहीं होते कि ज्ञान अर्जित करने की एकांत साधना में जुट जाएं। उन्हें जीवन के अनुभवों से ज्ञान पाने दीजिए। ज्ञान के लिए बच्चे इसके बाद ही अपने जीवन को छोड़ सकते हैं। एक बार यह क्रम पूरा हो जाए तो वे पहले से भी ज्यादा परिपक्वता और समझ के साथ जीवन की संपूर्णता की तरप लौटते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सत्य की एकात्मता से परिचित कराना है। अतीत में जब जीवन सरल था तो मनुष्य–जीवन के विभिन्न पक्षों के बीच एक गहरी समरसता विद्यमान थी। किन्तु जब बुद्धि को अध्यात्म और मनुष्य के भौतिक अस्तित्व से अलग कर दिया गया तो स्कूली शिक्षा का सारा जोर मनुष्य की बुद्धि और उसके शारीरिक अस्तित्व पर केंद्रित हो गया। हम सिर्फ बच्चों को सूचना देने में लगे रहते हैं और यह बात भूले रहते हैं कि ऐसा करके हम बच्चे के बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन के बीच अलगाव को गहरा करते जा रहे हैं।

हमारे देश में विद्याश्रमों और गुरुकुलों की परंपरा अभी भी हमारी स्मृति में जीवित है। आधुनिक अर्थों में ये स्थान न तो स्कूल थे और न ही भिक्षुविहार या धार्मिक शिक्षा केन्द्र थे। इन आश्रमों में भी गृहस्थ लोग अपने परिवारों के साथ रहा करते थे। वे ईश्वर में लौकिक दुनिया का संधान करते थे और अपने जीवन को उसके अनुरूप ढालने का प्रयास करते थे। हालांकि ये लोग समाज से बाहर रहते थे किन्तु समाज

के लिए उनका वही महत्व था जो सूर्य का अन्य ग्रहों के लिए होता है। एक ऐसा केंद्र जिससे जीवन और प्रकाश मिलता है। यहां शिक्षार्थी गृहस्थ संसार में प्रवेश करने से पहले शाश्वत जीवन के उच्च आदर्श अंतस्थ करते थे।

इस प्रकार प्राचीन भारत में स्कूल जीवन के स्पंदन के बीच स्थित होता था। वहां विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास ज्ञान और विद्वता के अकादमिक या संन्यासियों के एकांगी और क्षत–विक्षत परिवेश में नहीं होता था। उनका विकास एक ऐसे परिवेश में होता था जहां चारों ओर जीवन धड़क रहा होता था। आश्रमों में छात्र पशुओं को चरागाह ले जाते थे, जलावन की लकड़ी बीनते थे, फल इकट्ठा करते थे। यहां उनके भीतर सभी प्राणियों के प्रति करुणा भावना विकसित होती थी। यहां वे अध्यापकों के सान्निध्य में आत्मिक विकास करते थे। यह सब इसलिए संभव हो पाया क्योंकि आश्रमों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को पढ़ाना नहीं बल्कि ईश्वर की शरण में जीने वालों को आश्रय देना था।

हमारे बीच कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बच्चों की काबिलियत के बारे में कोई न कोई नुक्ताचीनी करते रहते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें लगता है कि बच्चों को बिना डंडे के सुधारा ही नहीं जा सकता। इसके बरक्स हर बच्चे की ग्रहणशीलता का स्तर अलग होता है और अपरिहार्य रूप से बहुत सारी विसफलताएं, भी मिलती हैं।

बच्चों की एक बड़ी संख्या ऐसी होती है जो सफल नहीं हो पाती। बच्चों में आवारगी की प्रवृत्ति कई बार तब प्रकट होती है जब हमें उसका कोई भान तक नहीं होता। इससे कई बार हमें अपने ही आदर्श संदिग्ध लगने लगते हैं। हम सबके जीवन में संदेह और प्रतिक्रिया के दौर आते हैं। लेकिन इस तरह के द्वंद्व और लड़खड़ाहटों का यथार्थ के वास्तविक रूपों से जुड़ाव होता है। जीते–जागते आदर्शों को एक–एक सेकंड का सही–सही ब्यौरा देने वाली घड़ी की सुइयों की तरह खरा नहीं माना जा सकता। उनसे आदर्शों के हर पक्ष के बारे में पल–प्रतिपल का रिकॉर्ड नहीं मिल सकता। और जिन लोगों का अपने विचारों की ताकत में यकीन होता है उन्हें अपने विचारों को विरोध और असफलताओं की कसौटी पर जरूर कस कर देखना चाहिए क्योंकि ये चीजें उन्हें मार्ग से भटकाने के लिए जरूर आती हैं।

जहां तक मेरी अपनी बात है तो मैं पद्धतियों से ज्यादा जीवन के सिद्धांतों और मनुष्य की आत्मा में विश्वास करता हूं। मेरा विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के दिमाग को मुक्त करना है। और यह स्वयं में एक ऐसी चीज है जो स्वतंत्रता के मार्ग पर चलने से आती है। कहना न होगा कि जीवन की तरह स्वतंत्रता के भी अपने खतरे और जिम्मेदारियां होती हैं। ज्यादातर लोग इस बात को भूल चुके हैं कि बच्चे जीते–जागते प्राणी होते हैं।

मेरी राय में वे बड़ों के मुकाबले ज्यादा जीवंत होते हैं। वयस्क व्यक्ति अकसर अपने चारों ओर आदतों का एक खोल खड़ा कर लेते हैं लेकिन बच्चों के साथ ऐसा नहीं है। इसी लिए बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और विकास के लिए सिर्फ स्कूल जरूरी नहीं है। उन्हें एक ऐसी दुनिया भी चाहिए जिसकी बुनियाद प्रेम पर टिकी हो। वह जगह एक ऐसा आश्रम होना चाहिए जहां लोग प्रकृति की शांति में जीवन के उच्च आदर्शों को साधने के लिए इकट्ठा हों तथा जहां जीवन केवल ध्यान तक सीमित न हो और जहां बच्चों पर अपने देश की अंधपूजा का आदर्श न थोपा जाए। वह एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहां उन पर मनुष्य के संसार को ईश्वर का राज्य कहने का दबाव न हो क्योंकि अंततः उन्हें ईश्वर के राज्य की नागरिकता पाने के लिए ही प्रयास करना है। वह एक ऐसी जगह होनी चाहिए जिसमें सूर्योदय, सूर्यास्त और तारों के मौन सौंदर्य को हर रोज अनदेखा न किया जाता हो। जहां मनुष्य प्रकृति के फल और फूल के महोत्सव में स्वेच्छा से शामिल हो। वह एक ऐसी जगह होनी चाहि, जहां युवा और बूढ़े, छात्रा और अध्यापक, सभी दैनिक भोजन और शाश्वत जीवन के भोज के लिए साथ बैठने से न हिचकिचाये।

('मेरा स्कूल' रबीन्द्रनाथ टैगोर, क्षेत्रीय प्रारंभिक शिक्षा संसाधन केन्द्र, (RRCEE) केंद्रीय शिक्षा संस्थान से साभार)

बागानों के मध्य खिलता-संवरता बचपन

राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेवरी, विकासखण्ड नौगांव

- संजीव एवं प्रकाश सैलानी

एक ऐसा समुदाय जो प्रवासी है, जो जीविकोपार्जन के लिए पूर्णतः मजदूरी पर निर्भर है। जिसकी न अपनी जमीन है और न खेती। जो न बहुत पढ़ा–लिखा है और न पैसे वाला। जिसके लिए सड़क तो दूर की बात, रास्ते भी पक्के नहीं हैं, बाजार, विपणन जैसी सुविधाएं तो भूल ही जाइए। इस समुदाय को पता है कि यहां की सरकारें अपने मूल निवासियों, जो उनके लिए वोट बैंक की तरह हैं, के कष्टों को ही दूर नहीं कर पा रहीं हैं तो हम उनके कौन लगते हैं? हम तो उन्हें वोट भी नहीं देते। ऐसे समाज में पल, बढ़ रहे नौनिहाल अच्छी तरह से जानते हैं कि जीवन जीने के लिए कठिन डगर ही एक मात्र रास्ता होता है। उन्हें फर्क नहीं पड़ता कि स्कूल जाने के लिए 3 किमी पैदल चलना पड़े। फिर चाहे शीतकाल में बर्फ व पाले की सफेद परत स्कूल जाने के लिए आगे बढ़ते कदमों को जाम कर दे या फिर बरसात में कीचड़ व मिट्टी से घुटनों तक लतपथ कर देने वाले रास्ते। चीड़ और देवदार के जंगल के बीच से और सेब के बागानों के किनारों से गुजरते सर्पाकार रास्ते यहां के बच्चों के जज्बे के गवाह हैं।

यमुनाघाटी में फल पट्टी के रूप में विकसित और प्रसिद्ध सेवरी प्राकृतिक रूप से बहुत सुन्दर क्षेत्र है। सेवरी में जहां यह विद्यालय स्थित है वहां किसी जमाने में मटियाली गांव हुआ करता था जो अब गुजाड़ी नामक तोक में बसा है। यानी, मूलतः सेवरी मटियाली गांव के क्षेत्रान्तर्गत आता है। सेवरी यहां के अन्य गांवों से बहुत अलग रूप से बसा व विकसित हुआ है। गिने–चुने परम्परागत घर व पक्के मकान देखे जा सकते हैं, अधिकांश घर घास व त्रिपाल के बने हैं,

यहां के बच्चों की आंखों की चमक बता देती है कि उन्हें आत्मविश्वास से जीना आता है। वह कई कठिनाइयों को पार करते हुए स्कूल तक पहुंचने के आदी हो चुके हैं। उन पर दया करने, उन्हें कमजोर, असहाय, बेचारे समझने की भूल न करें।

वह भी बस्ती के रूप में एक साथ, एक जगह पर नहीं, दूर–दूर बिखरे हुए–से। हर बगीचे के साथ एक कच्चा, अधपक्का, झोपड़ी–गौशालानुमा घर।

सेवरी के इस राजकीय विद्यालय प्राथमिक की स्थापना 2006 में हुई थी। अपना भवन न होने के कारण शुरूआती 3–4 वर्षों तक प्राथमिक विद्यायल विंग्सी के साथ इसका संचालन किया गया। 2009 से 2015 तक सेवरी के एक व्यक्ति श्री बादर सिंह रावत ने अपना घर स्कूल चलाने के लिए दिया। यद्यपि 2011 में सेवरी में अपना भवन बनकर तैयार हुआ लेकिन कुछ दिनों में ही वह आपदा की भेंट चढ़ गया। स्वर्गीय बादर सिंह रावत जी स्वयं भी एक शिक्षक थे। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने इस स्कूल को हर संभव योगदान दिया। दो वर्ष बाद विद्यालय का नया भवन बनकर तैयार हुआ। सड़क से इतनी दूर दुर्गम क्षेत्र में किसी सरकारी भवन का इस गुणवत्ता के साथ बनाया जाना बहुत महत्वपूर्ण बात है। ऐसे दौर में जब ठेकेदार से लेकर अधिकारी, बाबू, जे.ई. तक की नजर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की जगह अपने–अपने हिस्से के कमीशन पर रहती है, एक मजबूत, सुन्दर भवन बनाना बच्चों की शिक्षा के प्रति यहां के अभिभावकों की ईमानदारी और गम्भीरता को दर्शाता है।

विकासखण्ड मुख्यालय नौगांव से दक्षिण पूर्व दिशा में 12 किमी सड़क मार्ग से धारी वल्ली, नैणी, किम्मी, पिसाउं से होते हुए विंगसी गांव पहुंचते हैं। यहां से लगभग 3 किमी की खड़ी चढ़ाई वाली पगडण्डी के सहारे सेवरी पहुंचते है। ज़ाहिर है यहां चढ़ते–उतरते समय योग–प्रणायाम के आसन स्वतः होने लगते हैं। समुद्र तल से लगभग 1780 मीटर की ऊंचाई पर स्थित विद्यालय तक पहुंचने में सिर का पसीना पैरों तक पहुंचने लगता है। लेकिन विद्यालय परिसर में पहुंचते ही थकान काफूर होने लगती है जब चारों ओर देवदार, चीड़, बांज, बुरांश के पेड़ों के बीच से बहती ठण्डी हवा रूह हो स्पर्श करती है, जब सेब, अखरोट, चुल्लू के बगीचों पर नज़र पड़ती है, जब स्वच्छ, सुन्दर विद्यालय के परिसर में खेल रहे बच्चों के स्वस्थ, मस्त, हंसते हुए चेहरों से रूबरू होते हैं। उनकी आंखों की चमक बता देती है कि उन्हें आत्मविश्वास से जीना आता है। वह कई कठिनाइयों को पार करते हुए स्कूल तक पहुंचने के आदी हो चुके हैं। उन पर दया करने, उन्हें कमजोर, असहाय, बेचारे समझने की भूल न करें।

वर्तमान में यहां 46 बच्चे अध्ययनरत हैं जिनमें से 23 बालक और 23 बालिकाएं हैं। 40 अभिभावकों हैं जिनमें से अधिकांशतः केवल साक्षरभर हैं। विद्यालय भवन में दो कक्षा–कक्ष, एक कार्यालय और बरामदा है। छत लकड़ी और टिन से बनी है। एक खेतनुमा कच्चा लेकिन साफ–सुथरा प्रांगण है जो प्रातःकालीन सभा, खेल–कूद आदि सामूहिक गतिविधियों के काम आता है। प्रांगण के पास में ही चुल्लू और सेब के पेड़ हैं जिनकी ठण्डी छांव और हवा हर समय

सेवरी में होने का अहसास कराती रहती है। मध्याह्न भोजन हेतु रसोई घर भी पक्का बनाया गया है।

प्रातःकालीन सभा का संचालन नियमित रूप से बच्चों द्वारा किया जाता है। बड़ी कक्षाओं के बच्चे प्रातःकालीन सभा के साथ–साथ व्यवस्थागत कार्यों को भी पूरी जिम्मेदारी से करते हैं। कक्षा 4, 5 के बच्चे विद्यालय प्रबंधन व्यवस्था व शिक्षण कामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस तरह की पत्रिकाओं में शामिल होकर बच्चे कार्य की महत्ता के साथ–साथ मूल्यों को भी आत्मसात करने लगते हैं।

प्रातःकालीन सभा के बाद सीखने–सिखाने की दैनिक गतिविधियां शुरू होती हैं। एक कक्ष में कक्षा 4 और 5 के बच्चे तथा दूसरे में कक्षा 1, 2 व 3 के बच्चे बैठते हैं। सामूहिक गतिविधियों के दौरान कक्षा–कक्षों के साथ–साथ बरामदे व प्रांगण का भी इस्तेमाल किया जाता है। बैठने के लिए टाट पट्टियां न होकर दरियां हैं जिन पर बच्चे खुलकर बैठते हैं, आराम से अपना काम करते हैं। शिक्षक भी शिक्षण कार्य के दौरान अधिकांशतः दरियों पर बैठते हैं।

आज के दिन शिक्षण में कई बाधाएं मानी जाती हैं। जैसे– बच्चे पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते हैं, वह अनुशासित नहीं रहते हैं, उनको 'कंट्रोल' करना मुश्किल हो जाता है, यह बच्चे हैं ही ऐसे जो सीख नहीं सकते, यह गरीबों के, अनपढ़ लोगों के बच्चे हैं, यह घर से ऐसे ही आते हैं, यह भूल जाते हैं...... आदि–आदि। लेकिन यहां के शिक्षक ऐसा नहीं मानते हैं। वे कभी भी इन बच्चों को 'नेपाली' व मजदूरों के बच्चों के नजरिए से नहीं देखते। हर बच्चा सीख सकता है, हर बच्चे को सम्मान, स्नेह के साथ देखते हैं।

यहां के शिक्षकों के लिए कभी भी यह बच्चे पराये नहीं रहे हैं। इनके लिए यह नेपाली, मजदूरों, गरीबों, लाचारों के बच्चे नहीं हैं बल्कि मेहनती, ईमानदार, कर्मठ लोगों के बच्चे हैं। 'हर बच्चा सीख सकता है' की बुनियादी सोच के साथ यहां के शिक्षक काम करते हैं।

प्रकृति के इतने करीब का रिश्ता इन्हें मानसिक–शारीरिक रूप से स्वस्थ व मजबूत बनाता ही है, साथ ही यह माटी और रोटी के रिश्ते की महत्ता को भी समझते हैं। भले ही शहरी–कस्बाई स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों जैसा आधुनिक जीवन शैली का अनुभव इनके पास

रमेश चन्द्र राणा

ललित मोहन पंवार

बहुत कम हो लेकिन प्रकृति तथा मानवीय मूल्यों की समझ तो है।

यद्यपि इस विद्यालय की स्थापना को 10 वर्ष हो चुके हैं लेकिन बेहतर प्रदर्शन की शुरूआत पिछले 3–4 वर्षों में हुई है, अर्थात् जब से नया भवन व परिसर अस्तित्व में आया। यहां से तीन बच्चे नवोदय विद्यालय में प्रवेश पा चुके हैं। संकुल, ब्लॉक व जनपद स्तर पर होने वाली खेलकूद रैलियों और गणित विजार्ड, सामान्य ज्ञान, सुलेख, चित्रकला आदि कार्यक्रमों में भी यहां के बच्चे अव्वल रहते हैं।

यहां के 40 अभिभावकों में से अधिकांश साक्षरभर हैं। अभिभावकों की सक्रियता के कई प्रमाण हैं। हर माह होने वाली विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में दो तिहाई सदस्य हमेशा शामिल होते हैं। अधिकांश अभिभावक घर से नौगांव बाजार या काम करने के लिए आते–जाते समय अक्सर स्कूल से होते हुए शिक्षकों से मिलते रहते हैं। स्कूल के लिए आवश्यक सामग्री जैसे– खाद्यान्न, गैस सिलेण्डर या अन्य सामान आदि को सड़क से स्कूल तक पहुंचाने का काम अभिभावक मिलकर करते हैं। विद्यालय से बाहर होने वाली गतिविधियों, जैसे– रैलियां, प्रतियोगिताएं आदि, में प्रतिभाग करने पर बच्चों की उचित देखभाल करने हेतु यहां के अभिभावक स्वयं भी साथ जाते हैं। इससे शिक्षकों को भी बहुत मदद मिलती है। अभिभावक कलीराम और शेर सिंह कहते हैं कि हम लोग श्रमिक हैं, आर्थिक सहयोग नहीं कर सकते लेकिन दूसरे तरह के सहयोग देने का पूरा प्रयास करते हैं। अभिभावकों का यह भी मानना है कि बच्चों पर जितना ध्यान यहां दिया जाता है उतना ऊपर की कक्षाओं में भी दिया जाए तो बच्चे और आगे बढ़ सकते हैं। यहां से पास आउट हो चुके बच्चे कहते हैं कि दूसरे विद्यालयों और समाज में भी कभी–कभी उन्हें उपेक्षा व अपमान का भी सामना करना पड़ता है। उन्हें नेपाली, गोरखा, मजदूर होने के कारण हेय दृष्टि से भी देखा जाता है। जाहिर है यह उनके लिए किसी संघर्ष से कम नहीं है। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री पोलू के अनुसार श्रीमती सन्तो, श्रीमती माया और श्रीमती बसन्ती कहती हैं कि हमारे समय में गरीबी थी, कपड़े, खाना, किताबें, फीस

देने के लिए मजबूर होते थे, अब सरकार दे रही है और हम भी सक्षम हुए हैं। बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए हमें भी अधिक प्रयास करने की जरूरत है। उन पर किसी तरह का दबाव नहीं डालेंगे। पिछले सत्र में अभिभावकों ने आपसी सहयोग से एक स्वयं सेवक को भी शिक्षण कार्यों में सहयोग करने हेतु नियुक्त किया था। अभिभावक पुनः इस दिशा में सोच रहे हैं।

इस विद्यालय में कार्यरत दो भोजन माताएं श्रीमती छटनी देवी तथा श्रीमती विरेन्द्री देवी अपनी भूमिका के इतर भी इस विद्यालय को अपना योगदान देती रहती हैं। मध्याह्न भोजन के लिए सब्जी से लेकर पानी आदि की व्यवस्था वह अपने घर से भी करती हैं। अभिभावक मानते हैं कि यहां की भोजन माताओं ने न केवल इस विद्यालय को स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है बल्कि यहां बसे अधिकांश परिवारों के सुख–दुःख में बराबर सहयोग देती रहती हैं। भोजन माता श्रीमती विरेन्द्री देवी के अनुसार, 'हम इन बच्चों को अपने बच्चों की तरह समझते हैं, ऐसा भाव हमेशा रहता है कि हम इन बच्चों के लिए अधिक से अधिक क्या कर सकते हैं।' इसी प्रकार दूसरी भोजन माता कहती हैं कि इन बच्चों के माता–पिता हमारे सामने ही यहां पले–बढ़े और बसे हैं। यह लोग बहुत मेहनती हैं। गौरतलब है कि सेवरी के विद्यालय और यहां के परिवारों के विकास में सबसे बड़ा योगदान देने वाले स्वर्गीय बादरसिंह, जो स्वयं भी शिक्षक थे, इन्हीं भोजन माता के पति थे।

प्रधानाध्यापक श्री रमेश चन्द्र राणा के अनुसार, ''शुरुआती कठिनाइयों के बाद हमने विद्यालय को इस स्तर तक लाने में सफलता पायी है। यहां के अभिभावक बच्चों के लिए पूरा समय देते हैं जबकि स्थानीय गांवों के लोग अपनी खेती व पशुपालन आदि कार्यों में ही अधिक व्यस्त रहते हैं। आमतौर पर गांव के बच्चे संकोची होते हैं लेकिन यहां के बच्चे बहुत साहसी व आत्मविश्वासी हैं। हमारा प्रयास बेहतर करने का रहता है और आगे भी रहेगा।''

दूसरे शिक्षक श्री ललित मोहन पंवार कहते हैं, ''स्कूल में आने वाले अधिकारी व अन्य लोग जब सकारात्मक फीडबैक देते हैं तो हमारा उत्साह और बढ़ जाता है। क्षेत्र के लोगों की नजरों में भी हमारा स्कूल अच्छा है। पढ़ाने के तरीकों में बदलाव होते रहने चाहिए। स्वयं का दृष्टिकोण सकारात्मक हो और इच्छा शक्ति हो तो काम बेहतर ढंग से होने लगते हैं। मैं शिक्षक संघ में ब्लॉक महामंत्री होने के साथ–साथ स्वैच्छिक शिक्षक मंच नौगांव से भी जुड़ा हूं।'' वह आगे कहते हैं कि गणित और अंग्रेजी विषयों को कठिन माना जाता है अतः उन्हें नये–नये तरीकों से पढ़ाए जाने की आवश्यकता है। कक्षा एक में आने वाले बच्चों के साथ काम करना सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि वह हिन्दी बोलना सीख ही रहे होते हैं और उनकी प्रथम भाषा नेपाली है, जिसे हम नहीं समझ पाते हैं। यहां के शिक्षक तथा अभिभावक मानते हैं कि विद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। एक ओर स्कूल प्रांगण का पक्का निर्माण, चारदीवारी, पानी की लाईन, एक अतिरिक्त शौचालय आदि भौतिक संसाधन तथा दूसरी ओर शिक्षण में नवाचारी प्रयास।

उप शिक्षा अधिकारी श्री अमित चौहान के अनुसार 'इतने दुर्गम में भी स्कूल को बेहतर ढंग से चलाना अन्य शिक्षकों के लिए भी प्रेरणादायक है। मेरी दृष्टि में यह एक अच्छा विद्यालय है। सेवरी विद्यालय के बारे में नौगांव संकुल के समन्वयक श्री के.एस.चौहान कहते हैं, 'यहां के शिक्षक जितने सक्रिय हैं उतने ही प्रयासरत यहां के अभिभावक भी रहते हैं। बेहतर प्रबंधन और स्वच्छता यहां की खास बातों में शामिल है।'

कुल मिलाकर राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेवरी ने बहुत कम समय में बेहतर प्रदर्शन करके दिखाया है। यह तभी संभव होता है जब शिक्षक और समुदाय मिलकर साझे उद्देश्यों के साथ लयबद्ध होते हैं।

(सहयोग : अवनीश शुक्ल व फोटो : संजीव बिजल्वाण)

मॉडल बनने की ओर अग्रसर

राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा, विकासखण्ड भटवाड़ी

– मो. ओवेश एवं अलका उनियाल

समता आधारित न्यायपूर्ण मानवीय समाज की स्थापना का जो सपना देश के संविधान निर्माताओं ने देखा था उसके चरितार्थ होने के लिए सभी बच्चों तक गुणवत्तापरक शिक्षा की पहुंच अनिवार्य है। आज अच्छी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है। इस नजरिये से स्कूल समाज की बेहद महत्त्वपूर्ण संस्था बन गया है, जहां बच्चे जो समाज का भविष्य हैं, अपने जीवन के लिए नया सीखने आते हैं। बच्चों के आगामी जीवन की दिशा और दशा काफी हद तक स्कूली जीवन से ही तय हो जाती है। इसके लिए जरूरी है कि बचपन से ही बच्चों को सीखने के पूरे अवसर दिए जाएं, उन्हें अपनी रुचि के अनुसार मार्ग चुनने की आजादी हो, अपनी बात कहने का अवसर हो और अपनी कल्पना को विकसित करने का विस्तृत फलक उपलब्ध हो। जहां बचपन हंसता खेलता नये जीवन उपयोगी कौशल अर्जित करता हो। जहां बच्चों में गतिशील ऊर्जा, कुछ नया सृजित करने को उमंग भरती हो। जहां पहाड़ जैसी पथरीली ऊष्ण भूमि में भी कला और सृजन के नये आयाम खुलते हों। इन आदर्शों की स्थापना उन्हीं विद्यालयों में होती है जो अपनी पाठयचर्या के प्रत्येक अंग में शिक्षार्थी को केंद्र में रखते हैं। देश के शहरी और आंचलिक क्षेत्रों में ऐसे अनेक स्कूल संचालित हैं जहां बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को फलने–फूलने के पूरे अवसर दिए जा रहे हैं। ऐसे ही शिक्षालयों में से

इस विद्यालय के हरे भरे परिसर को देख कर ही महसूस होने लगता है कि यहां सीखना और सिखाना सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में हो रहा है। यहां बच्चों और शिक्षकों के साथ हरे-भरे वृक्षों पर पक्षी भी चहकते नजर आते हैं।

एक है उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती जिले उत्तरकाशी का राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा। इस विद्यालय के हरे भरे परिसर को देख कर ही महसूस होने लगता है कि यहां सीखना और सिखाना सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में हो रहा है। यहां बच्चों और शिक्षकों के साथ हरे भरे वृक्षों पर पक्षी भी चहकते नजर आते हैं।

राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा भटवाड़ी विकासखंड में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से लगभग चौबीस किलोमीटर की दूरी पर गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग से करीब दो सौ मीटर की पैदल खड़ी दूरी पर है। प्राकृतिक वैभव व शिक्षकों के अतिरिक्त प्रयासों ने इसे खूबसूरत रंग बख्शे हैं। विद्यालय गांव से दूर एकांत में बसा हुआ है और इसके पास में संकुल संसाधन केंद्र लाटा भी स्थित है। विद्यालय की परिधि में कई पेड़ लगाये गए हैं जो विद्यालय को नन्हें उपवन सी आभा देते हैं। इसकी स्थापना वर्ष 1980 में हुई थी। सन 1991 के भूकंप में विद्यालय का भवन ध्वस्त हो गया था वर्तमान भवन विश्व बैंक की आर्थिक सहायता से बनाया गया है। विद्यालय में तीन कक्षा कक्ष, एक गणित की इंटीग्रेटेड लैब, एक कार्यालय, एक किचन एवं दो शौचालय हैं। विद्यालय भवन के सामने बच्चों के लिए एक बड़ा खुला मैदान है।

वर्तमान समय में यहां पांच शिक्षक कार्यरत हैं। श्री चन्द्रमोहन सिंह प्रधानाध्यापक हैं, वह प्रबंधन व प्रशासनिक कार्यों के साथ साथ बच्चों को सामाजिक विज्ञान भी पढ़ाते हैं और उनका 37 वर्ष का शिक्षण अनुभव है। श्री शूरवीर सिंह खरोला गणित एवं विज्ञान विषय पढ़ाते हैं और उनका 35 वर्ष का शिक्षण अनुभव है। श्री कुशला प्रसाद भट्ट हिंदी एवं संस्कृत विषय पढ़ाते हैं और उनका 36 वर्ष का शिक्षण अनुभव है। श्री बलवंत सिंह बिष्ट सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाते हैं और उनका 36 वर्ष का शिक्षण अनुभव है। श्री नरेन्द्र सिंह चौहान अग्रेजी भाषा पढ़ाते हैं और उनका 29 वर्ष का शिक्षण अनुभव है। विद्यालय में दो भोजन माता राधा देवी एवं गजेंद्री देवी कार्यरत हैं। वर्तमान में 39 बच्चों का नामांकन विद्यालय में है जिसमें 23 बालिकाएं एवं 16 बालक हैं। बच्चों के लिए बैठने के लिए कुर्सी और मेजों का प्रबंध है।

शिक्षा हेतु दार्शनिक जिन बातों का उल्लेख करते हैं वो बातें यहां सहज रूप से देखने को मिलती हैं। यहां की शिक्षण प्रक्रियाएं बाल मैत्रीपूर्ण एवं बाल केन्द्रित हैं। शिक्षकों द्वारा बच्चों के लिए भय मुक्त वातावरण बनाया गया है। सभी शिक्षक बच्चों को अपनी बात रखने का पूरा अवसर प्रदान करते हैं। बच्चों द्वारा शिक्षकों के लिए फीडबैक देने हेतु भी एक बॉक्स बनाया गया है जिसमें बच्चे अपने कोई भी विचार लिखकर डाल सकते हैं। उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा पूरे जिले में अपने शैक्षिक कार्यों के लिए जाना जाता है।

उत्तराखण्ड राज्य में बाल शोध मेले की शुरुवात लाटा संकुल से हुई थी जिसमे उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा की अहम भूमिका थी। राज्य में जब सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए पहले चरण में 40 विद्यालयों का चयन हुआ था तब जिले से एक अन्य विद्यालय के साथ यह भी उसमें शामिल था। जब राज्य भर में हर ब्लॉक में मॉडल स्कूल बनाये गए उसमें भी भटवाड़ी ब्लॉक से इसे शामिल किया गया है। शैक्षिक नवाचारों के लिए बार बार प्रशासन द्वारा इसका चयन इसीलिए होता है क्योंकि यहां के शिक्षकों के जुझारू एवं कुछ नया सीखने के जज्बे से सब अवगत हैं। उम्र के जिस पड़ाव पर सब लोग अपने सेवाकाल से इतिश्री का प्रबंध करना शुरू करते हैं, वही यहां के शिक्षक नयी चुनौतियों को अपने कार्य के लिए चुनते हैं।

विद्यालय की दिनचर्या का आरंभ सभी विद्यालयों के जैसे बच्चों द्वारा साफ सफाई और प्रातः कालीन सभा के लिए बैठने की व्यवस्था से किया जाता है। शिक्षक भी इस दौरान बच्चों की सहायता करते हैं। पौधों में पानी लगाने का कार्य दरी निकालने में बच्चों का साथ देते हैं। प्रार्थना की शुरुआत गायत्री मन्त्र से होती है और उसके बाद दिन के अनुसार बच्चे समूह गीत गाते हैं। प्रार्थना सभा में समाचार, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रतिज्ञा, स्वच्छ भारत की प्रतिज्ञा आदि को स्थान दिया जाता है। इसमें सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से कभी न कभी आगे आकार प्रतिभाग करना होता है। शिक्षकों का मानना है कि यह सब अवसर बच्चों को आगे आकार बोलने का आत्मविश्वास देते हैं। प्रार्थना के बाद समय–सारणी के अनुसार विषय वार कक्षा वादन होता है। विद्यालय में बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए सभी शिक्षक साथ मिल कर योजना बनाते हैं और उसका क्रियान्वयन करते हैं। जैसे कक्षा छः में आये बच्चों के लिए अलग से योजना बनती है जिसमें

चन्द्रमोहन चौहान

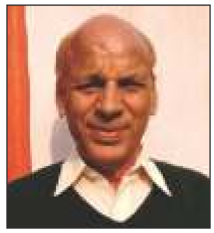

कुशला प्रसाद भट्ट

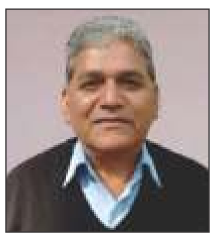

शूरवीर सिंह खरोला

बलवन्त सिंह बिष्ट

नरेन्द्र चौहान

सभी विषय में उनके बुनियादी अवधारणाओं पर कार्य किया जाता है। जब भी यह लगता है कि कुछ बच्चों को अतिरिक्त समय की आवश्यकता है तब उन बच्चों के लिए एक्स्ट्रा क्लास भी की जाती है। शिक्षक बताते हैं कि यह सिर्फ गर्मियों के दौरान संभव हो पाता है सर्दियों में हम इसे कर नहीं पाते।

भाषा विकास के लिए बच्चों से समय–समय पर स्वतंत्र लेखन कार्य करवाया जाता है। बच्चों को पाठय पुस्तकों के अलावा भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बच्चों द्वारा किये गए कार्य उनकी बॉक्स फाइल में रखे जाते है। विद्यालय की दीवारों पर बच्चों द्वारा किये कार्य सजाये हुए रहते हैं। सामाजिक विज्ञान पढ़ाने में बाल शोध विधा का भी प्रयोग शिक्षकों द्वारा किया जाता है। हर सप्ताह शनिवार को मध्याह्न भोजन के बाद बाल प्रतिभा दिवस मनाया जाता है। इसमें बच्चे अपने पसंद का कार्यक्रम करते हैं जिसमें चुटकुले सुनना, सामन्य ज्ञान के प्रश्न पूछना, गीत–गाना, नृत्य करना, कविता–कहानी सुनाना आदि शामिल रहते हैं। बच्चे इसमें बहुत मजे लेते हैं और शिक्षक भी उनको इसमें प्रतिभागिता के लिए प्रोत्साहित करते हैं। विद्यालय स्तर पर समय–समय पर वाद–विवाद, सामान्य ज्ञान गतिविधियां, गणित–विज्ञान मेला, निबंध लेखन आदि आयोजित की जाती है।। संकुल स्तर, ब्लॉक स्तर, एवं जिला स्तर के कार्यक्रमों में भी विद्यालय से प्रतिभागिता की जाती है।

लाटा विद्यालय का एक मुख्य आकर्षण है यहां की गणित विज्ञान की इंटीग्रेटेड लैब जिसे श्री शूरवीर सिंह खरोला जी ने बनाया है और बाकि साथियों का सहयोग रहा है। एक तरफ गणित जैसा विषय जिसका नाम सुनते ही बहुत लोग घबरा जाते हैं और दूसरी और उसका अमूर्त रूप जो अगर कोई थोडा साहस भी कर ले तो

उसकी अवधारण समझने में दिमाग के घोड़े दौड़ते दौड़ते थक जाते हैं। विद्यालय में आकर गणित और गणित शिक्षक की हमारी वह धारणा चकनाचूर हो जाती है जो आज हमारी शिक्षा प्रणाली में व्याप्त है। खरोला गुरु जी का स्वभाव और उनका गणित पढ़ाने का तरीका बहुत ही अनूठा है। उन्होंने टी.एल.एम. के उपयोग से गणित की बहुत सी जटिल अर्मूत अवधारणाओं को मूर्त स्वरूप दिया है। यहां बच्चे भिन्न, भिन्न की दीवार से सीखते हैं, तो नंबर सिस्टम के लिए गिन माला का उपयोग होता है, Ggeo Board से सर्व समिकायें समझा जाता है और साथ ही परिमाप, क्षेत्रफल, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि की विशेषताओं को सरलता से समझा जाता है। इस लैब को अगर ध्यान से देखें तो पता चलता है कि आधे से ज्यादा चीजें बहुत आसानी से घर पर उपलब्ध होती हैं। प्रकृति में छुपे पैटर्न को खोजने–देखने को मौका देता है।

हमारे संविधान में उस काल की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत के नागरिकों में वैज्ञानिक चिंतन (scientific temper) यानि कि एक ऐसी सोच जिसमें प्रश्न करने, विश्लेषण करने, परीक्षण करने, अवलोकन करने, अनुमान लगाने, परिकल्पना करने आदि) होने की बात कही गयी है और यह शब्द कभी न कभी किसी शैक्षिक संदर्भ में हमने सुना तो जरूर होगा। सब जगह हमें बच्चों में वैज्ञानिक चिंतन लाने को कहा जाता है पर यह किया कैसे जाये, यह के चिंतन का विषय बन जाता है। इस चिंता का निदान भी खरोला जी की विज्ञान की कक्षा में मिलता है। उनकी विज्ञान कक्षा में भी बच्चे खुद करके सीखते हैं। बच्चों के परिवेश से बच्चों को विज्ञान पढ़ाया जाता है। जैसे जब एक चिड़िया ने परिसर के एक पेड़ में घोंसला बनाया तो सबको यह कार्य दिया गया कि वह इसका अवलोकन करेंगे। अवलोकन से पहले बच्चों को कुछ हिदायतें भी दी गयी कि सभी बच्चे घोंसले से दूर रहेंगे और चिड़ियों को छेड़ेंगे नहीं। बच्चों ने इस चौदह दिन की प्रक्रिया (चिड़िया के अंडे देने से लेकर बच्चों के उड़ जाने के सफर तक) का अवलोकन किया। इस प्रकिया में उन्हें सबसे ज्यादा ताज्जुब तब हुआ जब उन्होंने देखा कि चिड़िया अपने बच्चों को खाना तो खिलाती ही है साथ ही साथ बच्चों द्वारा घोंसला गंदे होने पर साफ भी करती है। इसी प्रकार बच्चों को बरसात में च्यूं का अवलोकन करवाते हैं जो की मृतजीवी पौधों की अवधारण को समझाता है। इन्द्रधनुष कैसे बनता है? यह भी यहां बना कर देखते हैं। न्यूटन का तीसरा सिद्धांत दीपावली के समय राकेट आदि के द्वारा पढ़ाया जाता है। बच्चे इन्हें खुद भी करते हैं और साथ में अवलोकन भी करते हैं। इन अवलोकनों से बात जुड़ती है सीधे–सीधे उस सोच की जिसे हम बच्चों में देखना चाहते हैं। जब बच्चे खुद से यह देखते हैं तो वो सिर्फ किताब में लिखे सिद्धांत को रटते नहीं है उस पर सवाल करते हैं और उसका उत्तर ढूंढते हैं।

गणित, विज्ञान में इतना कार्य देख यह एक व्यंग ही लगता है की इतना गणित विज्ञान में कार्य करने वाले गुरू जिनके कार्य की चर्चा गणित, विज्ञान शिक्षकों के समूह में होती रहती है वह स्वयं कला के विद्यार्थी रहे हैं। खरोला जी कहते हैं मेरी यह कोशिश रहती है की मैं कैसे अपने आप को अपडेट रखूं। नयी मोबाइल तकनीकी का उपयोग वो कक्षा में बच्चों को विज्ञान के विडियो दिखाकर करते हैं और साथ ही अब अपनी खोजों के लिए गूगल का इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने संसाधनों के आभाव को कभी भी अपने कार्य की अड़चन नहीं बनने दिया। अपनी वैज्ञानिक सोच से उन्होंने कई कठिन कार्य को करने के भी सरल तरीके ढूंढ निकाले। उनका यही जज्बा आज कई शिक्षकों के लिए मिसाल है। उनके शिक्षा में योगदान, कर्मठता और कार्य के प्रति निष्ठा के लिए उन्हें राज्य सरकार द्वारा राज्य पुरुस्कार से

सम्मानित किया गया। खरोला गुरू जी की एक और ऐसी आदत है जो शिक्षा से जुड़े किसी भी व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है और वह है उनकी डायरी। इस डायरी के माध्यम से वह अपने किये गए कार्यों पर मनन कर पाते हैं और आगे की कार्य योजना बना पाते हैं शैक्षिक नवाचारों में खरोला गुरू जी के कार्य तो उभर कर दिखते ही हैं पर अन्य साथियों का सहयोग भी शामिल हैं। विद्यालय में खरोला गुरु जी को प्रशासनिक कार्यों से पूर्णतः मुक्त रखा जाता है और सभी साथी उनका यथासंभव सहयोग करते हैं।

विद्यालय में शिक्षकों द्वारा न सिर्फ पढ़ने लिखने पर ध्यान दिया जाता है बल्कि बाकी सुविधाओं के लिए भी कार्य किया जाता है। चौहान गुरु जी के दिशा निर्देश में विद्यालय के सभी प्रशासनिक कार्य समय पर पूर्ण कर दिए जाते हैं और सभी प्रबन्धकीय जानकारियां सुव्यवस्थित अपने स्थान पर मिलती हैं। विद्यालय का किचन भी उनके सुव्यवस्थित रखने की आदत से बच नहीं पाया है। किचन में रखे दाल के डब्बे ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे किसी लैब में रखे सैंपल। मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता का भी खास ध्यान रखा जाता है और समय–समय पर विद्यालय में उगाई सब्जियों को भी भोजन में शामिल किया जाता है। जब एक एक मॉडल स्कूल बनने के कारण विद्यालय की छात्र संख्या में वृद्धि हुई तो विद्यालय में भौतिक संसाधनों की कमी से गुजरना पड़ा। सरकार द्वारा समय पर फण्ड रिलीज न हो पाने पर सभी शिक्षकों द्वारा मिलकर 50000 की धनराशी इकठ्ठा की गयी और उससे बच्चों के लिए खाने की थाली, बेल्ट, टाई एवं स्टेशनरी खरीदी गयी।

शिक्षकों के कार्यों की समुदाय को जानकारी भी है और वह प्रशंसा भी करता है परन्तु कुछ लोग आज के समय के बाजारवाद में वह अपने हैसियत जताने के लिए प्राइवेट स्कूल की अंधी दौड़ में शामिल हैं। जिन अभिभावकों के बच्चे इस विद्यालय में पढ़ते हैं वह अपने बच्चों की प्रगति से संतुष्ट हैं। समय–समय पर एस.एम.सी. के सदस्य विद्यालय में आते भी हैं पर जैसे सभी विद्यालयों में पाया जाता है वैसे ही यहां भी एस.एम.सी का अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाता है। कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा विद्यालय से कंप्यूटर की चोरी की जा चुकी है। समाज इन कार्यों की निंदा तो करता है पर कोई ठोस कदम नहीं उठाता। शिक्षकों की अभिभावकों से कुछ ज्यादा अपेक्षा नहीं रहती वह जानते हैं जिन लोगों के लिए खेतों में कार्य करना जीवन यापन के लिए अनिवार्य है वह अपने बच्चों को समय निकाल कर दें कि वह घर में बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

आज के समय में जब समाज का विश्वास सरकारी तंत्र से गुणवत्ता का हवाला देकर कम होता जा रहा है वहीं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लाटा गुणवत्ता की एक नयी मिसाल पेश करते हुए माडल बनने की ओर अग्रसर है।

(सहयोगः सौरव बनर्जी व फोटोः अलका उनियाल)

मेरा प्यारा गांव

मेरा गांव कितना सुन्दर
जहां रहते दादा–दादी।
जहां बहती सदियों से नदियां
वृक्षों की डाली पर बैठी
मेरी प्यारी चिड़िया रानी।

– आंचल त्यागी
कक्ष–7, रा.क.उ.प्रा.विद्यालय, डामटा, नौगांव

जहां निखरती हैं बेबाक अभिव्यक्तियां

राजकीय प्राथमिक विद्यालय फफराला, विकासखण्ड मोरी

– मनोज पन्त

हमने भी बचपन में बहुत मार खाई है लेकिन अब पढ़ाई के तौर-तरीकों में बहुत बदलाव आ चुका है और अब यह समझ आ गया कि बिना मारे भी बच्चों को सिखाया जा सकता है। पिटाई या डरा कर बच्चा रट तो सकता है लेकिन वह उसको बहुत दिनों तक याद नहीं रहेगा वह फिर भूल जाएगा तो फिर उसको मारकर नहीं सीखा सकते।

सब्लॉक मुख्यालय मोरी से सांकरी मार्ग पर लगभग 20 किलोमीटर की दूरी, चारों तरफ सेब के बगीचे, विद्यालय के चारों ओर रमणीक वातावरण, और गांवों के बीच में हंसते–खेलते बच्चे, निश्चित रूप से सीखने–सिखाने के लिए इससे उपयुक्त स्थिति और क्या हो सकती है। यह विद्यालय ग्राम सभा 'सिदरी' के अंतर्गत आता है। यह विद्यालय प्राथमिक विद्यालय फफराला के नाम से जाना जाता है। विद्यालय का निर्माण सन 2008 में प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में इस विद्यालय में दस गांवों के बच्चे शिक्षा ले रहे हैं। सभी बच्चों के मूल गांव बहुत दूर हैं। चूंकि गावंवासियों का मुख्य व्यवसाय बागवानी हैं। अधिकांश के बगीचे फरफराला के आसपास हैं। यहीं घर बनाकर रह रहे हैं इसलिए इनके बच्चे यहीं पढ़ते हैं। यद्यपि कुछ ग्रामीणों का कहना है कि हम लोग तो अपने मूल गांव में भी रह सकते हैं लेकिन स्कूल उपलब्ध न होने के कारण हमारे बच्चे अनपढ़ रह जायेंगे। यही एक मात्र स्कूल है जो हमारे बच्चों की पहुंच में है।

अक्सर हम सिर्फ अच्छे भवन और उसकी सुविधाओं के कारण विद्यालयों के बीच अच्छे–बुरे का विभाजन करने लगते हैं। चाहे उसके पीछे, उसके अंदर कितना कुछ सीखने–समझने लायक क्यों न हो। मगर कुछ ऐसी ही बानगी है इस विद्यालय की। यह विद्यालय इन मान्यताओं को बखूबी तोड़ता है। यदि आप एक आदर्श कल्पना को लेकर इस आलेख को पढ़ेंगे तो हो सकता है कि आपको मुकम्मल न लगें। जब हम बहुत आदर्श कल्पना करते हैं तो उसमें हम बहुत सी छोटी लेकिन अच्छी बातों को दरकिनार कर देते हैं क्योंकि हमें सब कुछ अच्छा ही चाहिए होता पर इस स्कूल से आपको निराश नहीं होना पड़ेगा।

विद्यालय के भौतिक पक्ष की बात करें तो मुख्य भवन बहुत साधारण सा है। विद्यालय चारों तरफ से बांज के घने पेड़ों से घिरा हुआ है, जिसके कारण विद्यालय अधिकांश समय घनी छाया से ढका रहता है। गर्मियों में यहां बैठना बहुत सुखद होता है लेकिन शीतकाल में विद्यालय के अन्दर बच्चों को लम्बे समय तक बैठाना मुश्किल हो जाता है। इसलिए स्कूल के समय सभी बच्चों को पास के घर की छत पर बैठाना पड़ता है। विद्यालय में दो मुख्यकक्ष हैं, जहां पर शिक्षण कार्य होता है। छात्रों तथा छात्राओं के लिए अलग–अलग शौचालयों

की व्यवस्था है। विद्यालय भवन के आगे पानी की पर्याप्त उपलब्धता है, जिसके कारण रसोई घर तथा शौचालय को साफ–सुथरा रखने में सहूलियत होती है। बच्चों के बैठने के लिए अच्छी गुणवत्ता युक्त चटाइयां उपलब्ध हैं। दोनों कक्षा–कक्ष की दीवारें बच्चों द्वारा बनाए चार्ट तथा अन्य शिक्षण सहायक सामग्री से सजी हुई हैं। बच्चों के खेलने के लिए आस–पास पर्याप्त स्थान उपलब्ध हैं। बच्चों के दोपहर के भोजन को पकाने के लिए साफ–सुथरी रसोई भी है। दो भोजन माताएं बहुत ही आत्मीयता से बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था करती हैं। भोजन माताएं भी रसोई को साफ रखने का पूरा ध्यान रखती हैं।

वर्तमान में इस विद्यालय में 62 बच्चे तथा दो अध्यापक हैं। आंगनवाड़ी की कक्षाएं भी हैं जिनमें 15 नन्हे–मुन्हें बच्चे हंसते–खेलते दिखते हैं। शिक्षकों की बात करें तो श्री विनोद कुमार गौड़ की नियुक्ति इस विद्यालय में 5 फरवरी 2014 में हुई। श्री नत्थी सिंह पंवार जो कि सहायक अध्यापक हैं, नियुक्ति के समय से ही इस विद्यालय में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

समुदाय के सदस्यों से इस विद्यालय की पृष्ठभूमि की बात करने पर पता चलता है कि श्री विनोद गौड़ की नियुक्ति से पहले इस विद्यालय में 27 बच्चे थे। एक वक्त ऐसा था कि बच्चों को उनके माता–पिता अन्य विद्यालयों में भेजने लगे थे, जो कि छोटे बच्चों के लिए बहुत ही मुश्किल काम था। समुदाय के लोगों का कहना है कि जब से गौड़ जी इस विद्यालय में आये तब से दोनों अध्यापकों ने मिलकर आस–पास के सभी लोगों से व्यक्तिगत संपर्क बनाए, लोगों को विश्वास में लिया और आज इसी का नतीजा है कि आस–पास के दस गांवों से बच्चे यहाँ पढ़ने आते हैं। गांव वालों का कहना है कि विद्यालय की स्थिति में बहुत ही गुणात्मक सुधार हुआ है। अध्यापकों के बेहतर सहयोग के साथ समुदाय का समर्थन, विद्यालय को नई उंचाईयों तक ले जाता है। समुदाय से निरंतर संवाद ही इस रिश्ते की बुनियाद है। समुदाय के साथ निरंतर संवाद आज स्कूल की एक अच्छी छवि का कारण बन गया है। विद्यालय के प्रत्येक कार्यक्रम में समुदाय के लोगों को आमंत्रित किया जाता है और समुदाय के द्वारा भी इन शिक्षकों को शादी–विवाह तथा अन्य आयोजनों में बुलाया जाता है। शिक्षकों की अधिकांश कार्यक्रम में प्रतिभागिता रहती है इसका मुख्य कारण यह है कि शिक्षक इसी गांव में रहते हैं। समुदाय की सहभागिता की बात करें तो विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठकें यहां निश्चित समयांतराल में होती हैं। समुदाय के सदस्यों का कहना था कि चाहे घरेलू कार्य कितना ही जरूरी क्यों न हों

लेकिन जब भी उनको बैठक की सूचना मिलती है वे जरूर आते हैं। बैठक में बच्चों के सीखने, अनुपस्थित रहने से सम्बंधित सभी विषयों पर सौहार्दपूर्ण वातावरण में चर्चा होती है।

दोनों अध्यापकों के आपसी सामंजस्य से हर कार्य, चाहे वह शिक्षण योजना से सम्बंधित हो या वह अन्य कोई विभागीय कार्य हों, पूरी सलाह–मशवरे से सम्पन होता है। श्री विनोद गौड़ स्कूल के नजदीकी बाजार में रहते हैं, जबकि श्री नत्थी सिंह गांव में ही रहते हैं। इसलिए दोनों अध्यापकों को समय पर स्कूल का संचालन करने व स्थानीय लोगों से संपर्क कायम रखने में निश्चित रूप से मदद मिलती है। स्कूल भ्रमण के दौरान भी यही देखा गया कि विद्यालय में समुदाय का कोई न कोई सदस्य अवश्य उपस्थित रहता है तथा दोनों अध्यापक बहुत ही सौहार्दपूर्ण तरीके से सदस्यों के साथ बातचीत करते हुए दिखते हैं।

विद्यालय को जो बात खास बनाती है, वह है यहां के बच्चों की बेवाक अभिव्यक्ति। चाहे बच्चा कक्षा एक का हो, आंगनबाड़ी का हो या कक्षा पांच का, सभी बेहिचक अपनी बात रखते हैं, सवाल पूछते हैं। दोनों अध्यापकों से जब इस बारे में बातचीत की गयी कि आपके बच्चे इतने खुले हुए कैसे हैं? तो अध्यापकों का कहना था कि हम सबसे पहले बच्चों को बातचीत करने के अधिक अवसर देते हैं। हम उनकी बातों का सम्मान करते हैं तथा बच्चे भी बच्चों की बातों पर हंसते नहीं हैं। गौड़ जी का कहना है कि अक्सर बच्चा इसलिए खुलकर बातचीत नहीं करता क्योंकि उसके दिमाग में यह बात होती है कि कहीं मैं गलत तो नहीं बोल रहा हूं। कहीं मेरी गलती के लिए सजा तो नहीं देंगे। लेकिन हमने सबसे पहले बच्चों को यही सिखाया कि कुछ भी गलत नहीं होता है। जो भी मन में आये उसको कह दिया करो। अध्यापकों का कहना था कि हम केवल बड़े बच्चों से ही बात नहीं करते वरन सभी छोटे बच्चों की बातचीत को भी महत्व देते हैं और उतने ही धैर्य के साथ सुनते हैं। इसी प्रयास का परिणाम है कि सभी बच्चे अपने आस–पास के परिवेश के बारे में खुल कर बातचीत करते हैं। अपने मेले, गांव में होने वाली घटनाओं, शादियों आदि का वर्णन हम बच्चों के साथ बातचीत में करते हैं। अगर लिखित अभिव्यक्ति की बात करें तो लगभग सभी बच्चों को अच्छी तरह से लिखना–पढ़ना आता है।

विनोद कुमार गौड़

नत्थी सिंह पंवार

कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं के लिए यहां पर कक्षाओं का बंटवारा नहीं दिखता है। दोनों अध्यापक सभी कक्षाओं को पढ़ाते हैं। आंगनबाड़ी सहायिका श्रीमती रीना देवी भी स्कूल को सुचारू रूप से सहयोग देती हैं। बच्चों के साथ उनकी आत्मीयता उनकी बच्चों से बातचीत के दौरान बखूबी दिखती है। अध्यापकों द्वारा बच्चों के साथ चटाई पर बैठकर सहजता से बातचीत की जाती हैं। दोनों अध्यापकों को कभी भी बच्चों पर चिल्लाते हुए या डंडे का प्रयोग करते हुए नहीं देखा गया। इस विषय पर जब अध्यापकों से बातचीत की गई तो उनका कहना था कि हमने भी बचपन में बहुत मार खाई है लेकिन अब पढ़ाई के तौर–तरीकों में बहुत बदलाव आ चुका है और अब यह समझ आ गया कि बिना मारे भी बच्चों को सिखाया जा सकता है। पिटाई या डरा कर बच्चा रट तो सकता है लेकिन वह उसको बहुत दिनों तक याद नहीं रहेगा वह फिर भूल जाएगा। तो फिर उसको कब तक मारते रहेंगे। समझा हुआ हमेशा तक याद रहता है।

गणित शिक्षण की बात करें तो दोनों अध्यापकों का कहना है कि अब तो हमारे पास संपर्क किट है लेकिन पहले से ही हम लोग बच्चों को गिनती सिखाने के लिए ठोस सामग्री जैसे कांच, पत्थर या मिट्टी की गोलियों का इस्तेमाल करते आये हैं। कुछ स्थानीय उदाहरणों जैसे– सेब गिन कर, बच्चों से उनकी भेड़ बकरियों को गिन कर कापी में नोट करके आदि का जिक्र बातचीत के माध्यम से करके भी गणित विषय को पढ़ाते हैं। कक्षा एक और दो के बच्चों को गिनती गिनना, लिखना, अंको को पहचानना अच्छी तरह से आता है। भाषा शिक्षण की बात करें तो 'बातचीत' को दोनों अध्यापक भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम मानते हैं। इसके सम्बन्ध में उनका विचार है कि अक्सर 'बात' करना गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो वो पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। बातचीत के बारे में इस नजरिए की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की हमेशा से अवहेलना करते आ रहे हैं। प्राथमिक स्तर पर यह मान्यता सबसे ज्यादा है। नर्सरी तथा प्राथमिक

विद्यालय के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनयादी माध्यम है। इस विद्यालय में शिक्षण के दौरान स्थानीय तथा मातृभाषा को भी उतना ही महत्व दिया जाता हैं जितना अन्य भाषाओं को। अक्सर हम कक्षा–शिक्षण में चल रहे प्रक्रियाओं में किसी विशेष भाषा को अधिक तरजीह देने लगते हैं, जिसके कारण अन्य भाषाओं के जरिये सीखने के अवसर को कहीं न कहीं समाप्त कर दिया जाता है। लेकिन हम अपने विद्यालय में स्थानीय तथा मातृभाषा को सम्मान देते हैं। इसलिए छोटे बच्चे अपनी बात को अपनी स्थानीय भाषा में बोलते हैं। ऐसा करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता हैं। पाठ्य पुस्तक के साथ–साथ अखबार व अन्य पाठ्य सामग्री आदि को भाषा शिक्षण के लिए उपयोग किया जाता है। अध्यापकों का कहना है कि भाषा शिक्षण का सबसे बड़ा उद्देश्य सशक्त अभिव्यक्ति ही है लेकिन भाषा के उद्देश्य को इतना सीमित नहीं किया जा सकता। अगर बच्चे को अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़नी आ जाती है लेकिन वह अन्य जगह पर लिखी हुई बात को नहीं पढ़ पाता है या लिख नहीं पाता है या अपनी बातचीत को धाराप्रवाह नहीं बोल पाता है तो वह बच्चा हमेशा जीवन के हर क्षेत्र में अपने को कमजोर महसूस करेगा। इसलिए प्राथमिक विद्यालयों में भाषा शिक्षण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

विनोद गौड़ जी मुख्य रूप से भाषा के शिक्षक हैं। हिन्दी, संस्कृत उनका सबसे प्रिय विषय है। वे कहते हैं कि संस्कृत या हिन्दी को रटाने के बजाय उसको सुगम बनाया जाय तो उसको सीखने में बच्चे बहुत आनंद महसूस करते हैं। कविता, कहानी, श्लोक, स्थानीय गानों के माध्यम से भाषा शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में व्याकरणिक अशुद्धियों पर बहुत अधिक ध्यान नहीं देते हैं। उनका कहना हैं कि उन्होंने फाउंडेशन की भाषा की कार्यशाला में प्रतिभाग किया था, जिसका काफी फायदा हुआ। इनका कहना है कि विषयवस्तु का ज्ञान तो पुस्तकें पढ़ कर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन शिक्षण कौशल और समग्रता को ध्यान में रखकर सीखने और समझ बढ़ाने की बात तो कार्यशालाओं से ही विकसित होती है। सामान्य ज्ञान, जैसे प्रधानमंत्रियों के नाम, राज्यों की राजधानी, महीनों के नाम आदि को भी कविताओं के माध्यम से और संस्कृत भाषा से सूत्र बनाकर मजेदार बनाया जा सकता है। इन सभी

मिले जुले प्रयासों का ही परिणाम रहता है कि बच्चे ब्लॉक स्तर से सपनों की उड़ान कार्यक्रम में सामान्य ज्ञान, भाषण प्रतियोगिताओं में अव्वल रहते हैं।

नत्थी जी कक्षा 1 और 2 को स्थानीय गीत, संगीत, नृत्य, कविताओं, स्थानीय परिवेश पर बातचीत के माध्यम से बच्चों की अभिव्यक्ति को निखारने में दिलचस्पी रखते हैं। इनका कहना है कि मैं इन बच्चों के साथ कभी भी बोर नहीं होता हूं। इनके साथ स्थानीय गीतों के साथ डांस करता हूं, दोस्त बन कर रहता हूं इसीलिए सभी बच्चे मेरे साथ खूब हंसी मजाक करते हैं।

कुल मिलाकर देखें तो तमाम चुनौतियों के बाद भी इन अध्यापकों की बातों में सकारात्मकता दिखती हैं, काम में ऊर्जा दिखती है, सभी बच्चों की आंखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान दिखती है। इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि बच्चों की एक साथ आवाजें उनको शोर नहीं बल्कि संगीत लगती हैं। विद्यालय की छुट्टी के बाद थकने के बजाय ऊर्जा से भरपूर होकर जाते हैं और उसी जोश और आनंद के साथ हर दिन की शुरुआत करते हैं। निश्चित रूप से हमारे समाज को ऐसे ही अध्यापकों की दरकार है जो अध्यापक के पेशे को समाज निर्माण के साथ देखते हैं और हर रोज कुछ नया सीखने–सिखाने में विश्वास करते हैं।

(फोटो : मनोज पंत)

साझे सरोकारों से निखरता स्कूल

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डेरिका, विकासखण्ड पुरोला

– रविन्द्र रावत, सौरभ ठाकुर

> विविध पृष्ठभूमि, अनुभव, समझ व नजरिए के शिक्षक जब एक साथ मिलकर साझे सरोकारों के लिए कार्य करते हैं तो उसके परिणाम विद्यालय में दिखायी देने लगते हैं।

हमारा समाज कैसा हो? यह प्रश्न काफी गौर तलब है, इसको लेकर सबकी अपनी–अपनी राय है। अब सवाल यह है कि किसकी राय को वरीयता दी जाय? इन प्रश्नों को सुलझाने के लिए हमें फिर संविधान की ओर रुख करना होता है। संविधान में 'समाज कैसा हो' की परिकल्पना की गयी है। जब हम संविधान के स्वर्णिम पन्नों को एक–दूसरे से अलग करते है तो पाते हैं कि समाज में समता, न्याय, धर्मनिरपेक्षता, अखंडता आदि होनी चाहिए। ऐसे समाज की परिकल्पना करते ही सबका दिल झूम जाता है लेकिन अगले ही क्षण मन का कौतूहल अपनी चरम सीमा पर होता है। और हो भी क्यों न। आखिर ऐसा समाज बनाएगा कौन? यह प्रश्न समाज की ओर मुंह खोले खड़ा हो जाता है। क्या ऐसा समाज कोई सामान्य कारीगर बना सकते हैं? तो इसका उत्तर क्या हो सकता है? हां इतना जरूर है, ये लोग एक बेहतर समाज को बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। अब उम्मीद से भरी सबकी निगाहें शिक्षक समुदाय की ओर जा ठहरती हैं। इन निगाहों में बिलकुल वैसी ही प्यास झलकती है, जैसे एक गरीब किसान को बादलों को देखकर होती है। इस समुदाय से समाज को बड़ी उम्मीदें हैं क्योंकि एक शिक्षक ही समाज को बदलने की सामर्थ्य रखता है। वह विद्यालय के माध्यम से समाज का भविष्य गढ़ने का काम करता है। बस जरूरत इसी बात की है कि इस विद्यालय रूपी पौधशाला को कैसे अधिक से अधिक खाद–पानी दिया जाय। शिक्षा के क्षेत्र में कई तरह के प्रयास आज हो रहे हैं लेकिन उन्हें विद्यालय में फलीभूत होते देखने के लिए और प्रयास किए जाने की जरूरत है। हम शिक्षा की दशा व दिशा के प्रति बेहद चिंतित हैं लेकिन विषम परिस्थितिओं में भी कुछ ठोस प्रयास ऐसे हो रहे हैं जिन्हें पहचनाने तथा सराहने की आवश्यकता है। बहुत से शिक्षक अपने–अपने विद्यालयों में बहुत कुछ बेहतर कर रहे हैं, जरूरत है तो बस इसे लोगों के बीच पहुंचाने की। जब लोगों से बात करो तो ऐसा लगता है जैसे सार्वजनिक विद्यालयों में कुछ भी बताने लायक नहीं हो रहा हो। लेकिन ऐसा कतई नहीं

है। दुर्गम में बसे विद्यालय भी कुछ बेहतर करने लिए प्रयासरत हैं। उन्हें भी कुछ उम्मीद है बेहतर होने की। ऐसे हाल में जरुरत है तो सिर्फ उनके हौसले को बढ़ाने की, उनकी उम्मीदों में पंख लगाने की तथा उनके बेहतरी के सफर में दो कदम साथ चलने की। यह एक सकारात्मक एहसास है जिसकी उड़ान भरनी अभी बाकी है।

इसी तरह का एहसास होता है राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डेरिका को देखकर। पुरोला से मोरी ब्लॉक की ओर जाने पर करीब आठ किलोमीटर की दूरी पर है एक सुन्दर सा गांव डेरिका। पास बहती एक गाड यानि पानी की धारा में लगभग हर मौसम में पानी रहता है। गांव सम्पन्न सा है जहां मुख्यतः लोग खेती, किसानी व बागवानी करते हैं। कुछ लोग विभिन्न सरकारी, गैर–सरकारी नौकरियों में भी हैं। गांव के आस पास हरियाली है और सड़क भी गांव के समीप है। इसी सड़क से नीचे उतर कर करीब आधा किलोमीटर चलने के बाद डेरिका प्राथमिक और डेरिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भवन दिखाई देते हैं। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों भवन आपस में जुड़े हुए हों। विद्यालय के द्वार से ही फूलों के छोटे–छोटे पौधे आपका स्वागत करते हुए नजर आते हैं और इन फुलवारी के आस–पास कुछ क्यारियां भी आप देख सकते हैं जिनमें हरी मिर्च, टमाटर तथा कद्दू की बेल एक–दूसरे से मिलाप करते हुए प्रतीत होते हैं। फूलों में गेंदा, गुलाब, केली आदि पौधे विद्यालय की शोभा बढ़ाते हैं। इन पौधों की देख–रेख बच्चे और शिक्षक मिलकर करते हैं। विद्यालय के सामने गांववालों के खेत हैं, जिनमें बच्चे खेलते हैं और नीचे कलकल करती एक पानी की धारा बहती है। गांव के पीछे सुन्दर हरियाली वन व सामने तथा आस–पास लाल धान, गेहूं, मटर आदि उगाने वाले खेत हैं।

डेरिका विद्यालय की स्थापना सन 1988 में हुई थी। जिसके लिए भूमि श्री जयप्रकाश गैरोला के द्वारा दान दी गई थी। जो सुकड़ाला गांव के निवासी थे। ये कोई चर्चित हस्ती न थे और न ही इनका राजनीति के क्षेत्र में कोई दखल था। पर समाज को लेकर चिंतित रहते थे। उनकी सद इच्छा थी कि उनके गांव में एक ऐसा स्कूल हो जिसमें सभी धर्म, जाति के बच्चे शिक्षा ग्रहण करें। आस–पास के गांवों में कोई ऐसा विद्यालय नहीं था, जहां पर गांव के बच्चों को शिक्षा दी जा सके। उनका विचार था कि जब बच्चे शिक्षा ग्रहण करेंगे तो जिंदगी जीने के तरीके में कुछ बदलाव आएगा इन विचारों पर दृष्टिपात करने के पश्चात् गैरोला जी के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इनके विचार काफी आधुनिक थे,जो समय की रफ्तार के साथ–साथ चलना चाहते थे। उस समय

कई गांवों के बीच यह अकेला विद्यालय हुआ करता था, जिसमें कई गांव के बच्चे पढ़ने आया करते थे। यही कारण है कि वर्तमान में भी धीवरा, सुकड़ाला, डेरिका, सुराणु की सेरी गांवों से बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के लिए यहां आते हैं। इन गांवों में सबसे दूरी पर स्थित है सुराणु की सेरी, जो कि डेरिका से ऊपर की पहाड़ी पर घने जंगल के बीच बसा है। प्रतिदिन इस गांव से बच्चे तीन–चार घंटे का पैदल सफर तय करके इस विद्यालय में पहुंचते हैं। उनसे बात करके ये भी मालूम हुआ कि कभी कभार रास्तों में जंगली जानवरों के दर्शन भी हो जाते हैं। यह विद्यालय सुकड़ाला ग्राम पंचायत में आता है। असल में डेरिका गांव विभिन्न छोटी–छोटी बस्तियों का मिला रूप है। विद्यालय में दो भोजन माताएं हैं, जिनका नाम सरस्वती देवी और विजय लक्ष्मी है। भोजन माताओं के द्वारा रसोईघर की साफ–सफाई तथा खाने की गुणवत्ता का पूर्ण ध्यान रखा जाता है।

जब हम विद्यालय की कल्पना करते हैं तो उसमें प्रमुख रूप से तीन घटक कार्य कर रहे होते हैं। जैसे शिक्षक, शिक्षार्थी और इनके बीच चलने वाली शिक्षण की अंतर्वस्तु। विद्यालय में चल रही शिक्षण प्रक्रियाओं को और बेहतर बनाने के लिए अब चौथे स्तम्भ के रूप में भोजन माताएं अपनी भूमिका निभा रही हैं। इनके योगदान को भी देखा जा सकता। इनके मेल–जोल से एक विद्यालय की तस्वीर उभरती है। इस विद्यालय में वर्तमान में तीन अध्यापक कार्यरत हैं। बच्चों की संख्या 34 है। जिनमें 12 लड़के तथा 22 लड़कियां हैं। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री मार्कंडेय सेमवाल जी जो संस्कृत, हिंदी तथा स्थानीय स्थलों के सम्बन्ध में अच्छी–खासी जानकारी रखते हैं। शिक्षक के तौर पर इन्होंने कई विद्यालयों में अपनी सेवाएं दी। दूसरे अध्यापक श्री शान्ति प्रसाद हैं। 2004 से यहां कार्यरत हैं। शांति जी इस विद्यालय में सामाजिक विज्ञान तथा अंग्रेजी विषय को पढ़ाते हैं। तीसरे शिक्षक हैं श्री चरण असवाल जो गणित, विज्ञान पढ़ाते हैं। शिक्षण कार्य के बारे में उनका विचार हैं कि जब व्यक्ति कार्य करेगा तो बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रश्न तो यह भी है कि किसको अपने कार्य को दिखाना है? जब हम अपने कार्य से संतुष्ट होंगे तो फिर किसी और को दिखाने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी। वह आगे कहते हैं इन बच्चों के पीछे ही इतनी तन्खवाह मिल रही है, जिससे हमारे बच्चे बड़े–बड़े विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यदि हम अपने कार्य से इन्साफ नहीं करेंगे तो इन बच्चों का पाप लग जायेगा हमें। इसलिए मैं कोशिश करता हूं कि अपने पेशे से इंसाफ कर सकूँ। इन बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते–करते अपना भी अनुभव पहले से कुछ बढ़ा है। बच्चों के साथ प्रतिदिन नया अनुभव, नई यादें, नई बातें और कुछ नया सीखने को मिलता है।" वैसे शांति जी भी बहुत कम बोलते हैं, इन्हें आप "साइलेंट वर्कर" कह सकते हैं। जिन्हें अपने कार्य पर विश्वास है। इन विश्वासों को आसमान दिखाते हैं मार्कंडेय सेमवाल जी। कुछ ऐसे विचार रखते हैं लेकिन शिक्षकों तथा बच्चों को सोचने तथा कुछ नया करने की पूर्ण आजादी देते हैं। सेमवाल जी हमेशा इस प्रयत्न में रहते हैं कि बच्चों के सीने में पुरानी संस्कृति को संजोया तथा जिन्दा रखा जाय। इसके सम्बन्ध में जब इनसे बात की गयी तो इनका कहना था कि अमूमन मैं आधुनिकता की पैरवी करता हूं लेकिन साथ ही साथ लोगों से अपने संस्कृति के संरक्षण के लिए आह्वान भी करता हूं। वर्तमान समय में आधुनिकता ने अपनी पकड़ मजबूत की है लेकिन इसका गहरा और विपरीत असर आज की पीढ़ी पर हुआ है। मार्कंडेय जी का कहना है कि यह विद्यालय है और हम एक शिक्षक की अहम भूमिका निभा रहे हैं, जिनका कार्य ही है नवचेतना लाना। एक शिक्षक की भूमिका वहां और अधिक बढ़ जाती है जहां पर एक अच्छे समाज की निर्माण की बात की जाती है। हम कोशिश करते हैं कि हमारे बच्चे नए तरीके से सोचें, समाज के बेहतरी में अपना योगदान दें।

मारकन्डेय सेमवाल

चरण असवाल

शांति प्रसाद

किसी भी विद्यालय के दो पक्ष होते हैं– अकादमिक तथा प्रबन्धन। दोनों आपस में एक–दूसरे से गहरा सम्बन्ध रखते हैं और सीधे तौर पर एक–दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। ऐसे उदाहरण शायद ही मिलें जहां एक पक्ष बहुत अच्छा हो और दूसरा उतना ही खराब। डेरिका विद्यालय इन दोनों में स्यवं को बेहतर बनाने की

ओर अग्रसर है। शिक्षकों का सहयोग व समन्वय यहां की प्रमुख बात है। तीनों अध्यापकों का आपसी सामंजस्य विद्यालय को एक नई ऊंचाइयों पर ले जाता है। विद्यालय तथा बच्चों के विकास में दिए गये तीनों अध्यापकों के विचारों का सम्मान समान रूप से किया जाता है। इतना ही नहीं विद्यालय विकास के किसी भी कार्य में तीनों आध्यापकों की राय होती है। वैसे तो इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक सेमवाल जी हैं लेकिन वह शेष दो अध्यापकों के विचारों को उतना ही प्राथमिकता देते हैं जितना स्वयं के विचारों को। उसी का नतीजा है कि इस विद्यालय में प्रबन्धन या शैक्षिण कार्यों में सामंजस्य दिखता है। जिससे कार्यों की गुणवत्ता स्वतः बढ़ने लगती है। तकनीकी यंत्रो, जैसे–कम्प्यूटर पर कार्य करना, प्रिंट निकालना, नेट के द्वारा किसी भी जानकारी को ढूंढना आदि इस प्रकार के कार्यों में शांति प्रसाद जी का हाथ साफ है। इसलिए अमूमन विद्यालय में इस प्रकार के कार्यों को वही देखते हैं। जब से चरण असवाल जी का स्थानांतरण इस विद्यालय में हुआ, तब से 'गणित पढ़ाने' की समस्या दूर हो गयी है। असवाल जी के आने से बच्चे विज्ञान तथा गणित विषय में फिर से रुचि लेने लगे हैं। असवाल जी के सम्बन्ध में बच्चों का विचार है कि बहुत आराम–आराम से समझाकर पढ़ाते है और कोशिश करते हैं कि सभी बच्चों को एक साथ लेकर चले। कुछ ऐसा ही विचार सेमवाल के सम्बन्ध में बच्चे भी रखते हैं। सेमवाल जी बारे में बच्चे कहते हैं कि सर हमको हिंदी तथा संस्कृत पढ़ाते हैं। वह विस्तार से पढ़ाते हैं, एक ही चीज को कई उदाहरणों से समझाने का प्रयास करते हैं। उनके ऐसा करने से बहुत सी चीजे हमें कक्षा में ही याद हो जाती हैं। शान्ति सर पढ़ाते समय हर बच्चे पर समान ध्यान देते हैं। जो बात हमें समझ में नहीं आती वो कोशिश करते हैं कि उन्हें कम्प्यूटर पर दिखाकर हमें समझा दें। वो मोबाइल पर भी हमें हमेशा अच्छी वीडियोज दिखाते रहते है, जिससे हमारा ज्ञान बढ़ता है। अंग्रेजी विषय के शिक्षण के सम्बन्ध में शांति सर का कहना है कि मोबाइल के क्षेत्र में हो रहे प्रतिदिन नवाचारों का ही नतीजा है कि मैं अंग्रेजी के शब्दों का अर्थ आसानी से खोज लेता हूं। इस तकनीकी ने हमारा काम बहुत आसान किया है। समुदाय के सम्बन्ध में पूछे जाने पर प्रधानाध्यापक का कहना था कि अधिकतर लोग खेती–बाड़ी तथा मजदूरी करते हैं, जिनके कारण विद्यालय की एसमएसी बैठकों में

प्रतिभाग करना इनके लिए थोड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिए इनको विद्यालय बुलाने से पहले एक बार सोचना पड़ता है। फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो विद्यालय के किसी भी प्रकार के कार्यों में अपना योगदान देने के लिए तैयार रहते हैं। अभिभावक बच्चों को लेकर संजीदा हैं। वो बराबर हमसे सम्पर्क में रहते हैं और अपने बच्चों के बारे में खबर लेते रहते हैं। इस वर्ष मोरी के दूरस्थ गांव से तीन बच्चों का दाखिला इस विद्यालय में हुआ है, जो एक अच्छा संकेत है। जब इन बच्चों के अभिभावक से बात की गयी तो उनका कहना था कि मोरी विकासखंड के जिस गांव में मैं रहता था, उस गांव के विद्यालय में अच्छी पढ़ाई नहीं होती थी। मैं सिर्फ बच्चों की बेहतर पढ़ाई के लिए ही पुरोला आया हूं। यहां आने पर मेरे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि बच्चों का दाखिला किस विद्यालय में करवाया जाय। मैं कई दिन पुरोला बाजार गया और वहां के कई निजी विद्यालयों का जायजा लिया। अपने एक रिश्तेदार ने डेरिका विद्यालय का जिक्र मुझसे किया और साथ ही साथ इस विद्यालय में अच्छी शिक्षा दी जाती है, इसकी पैरवी भी की। मैंने इस विद्यालय की प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास किया। यह प्रक्रिया तीन दिन तक चली रही। मेरी जितनी समझ थी उसके आधार पर मैंने ये फैसला किया कि मेरे बच्चे इसी विद्यालय में पढ़ेंगे। इससे एक बात तो साफ थी कि अब अभिभावक भी शिक्षा की महत्ता को समझने लगे हैं।

"हमारे बच्चे बोलते ही नहीं हैं जी, बच्चे बाहरी व्यक्ति के सामने शरमाते हैं जी" इस तरह के वाक्य अमूमन हमें सुनने को मिलते हैं। इस तरह की धारणा को तोड़ता हुआ दिखता है यह विद्यालय। जब आप इन बच्चों से मिलेंगे तो आपको

यह एहसास हो जायेगा कि यहां के बच्चे कितने खुले विचारों के हैं। प्रश्न पूछने, अपनी बातों को कहने, तर्क करने में बच्चे हिचकिचाते नहीं हैं। यही कारण है कि इनकी कक्षाओं में शोर होता है। अक्सर हम यहीं भूल करते आ रहे हैं कि जिन कक्षाओं में शोर होता है, उन कक्षाओं में शिक्षण कार्य नहीं होते या बच्चे पढ़ाई नहीं करते। ऐसा मान कर हम कहीं न कहीं बच्चों की अभिव्यक्तियों को दरकिनार कर रहे होते हैं और कक्षा में बातचीत के महत्व को नकार रहे होते हैं। अभिव्यक्ति जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से व्यक्ति की पहचान होती है। यदि हम बच्चों को बातचीत करने का अवसर देते हैं तो उनके भीतर की झिझक खुलती जाती है फिर वह किसी भी परिस्थिति, किसी भी समय में अपने विचारों को रखने के लिए स्वतंत्र होते हैं। बातचीत न करने के अभाव में बच्चों की प्रवृति दब्बू किस्म की हो जाती है जिससे वे जीवनपर्यंत जूझते रहते हैं। बच्चे ऐसी स्थिति में न चले जाएं, इसलिए आवश्यक है कि उनके जीवन से जुड़ी हर मुद्दे पर चर्चा परिचर्चा होती रहनी चाहिए। कुछ ऐसे विचारों के साथ आते हैं इस विद्यालय के अध्यापक। कक्षा की दीवारें शिक्षक अधिगम सामग्री से भरी पड़ी हैं। इन सामग्रियों में मुख्यतः अंग्रेजी भाषा के शब्द–अर्थ, मानचित्र, विलोम, सामान्य ज्ञान, प्रकाश संश्लेषण, आपदा, कवितायें, कहानियों के चार्ट चस्पा किये गये हैं तथा बाल अखबार देखे जा सकते हैं। बाल अखबार का संपादन बच्चों के द्वारा किया जाता है। इस प्रक्रिया में कहीं न कहीं अध्यापक भी शामिल रहते हैं। प्रत्येक माह इस अखबार का संपादन होता है जिसमें मुख्य रूप से गांव, विद्यालय सम्बन्धी खबरें रहती हैं। इस प्रक्रिया में शामिल होते–होते बच्चों को अखबार या मीडिया के ताकत का एहसास होता रहता है। समाज में एक अखबार की क्या भूमिका होती है या एक बेहतर समाज को बनाने में अखबार क्यों महत्वपूर्ण है, ऐसे गंभीर प्रश्नों पर अध्यापक के द्वारा कक्षा में चर्चा की जाती है। इस विद्यालय के बच्चे ब्लॉक स्तरीय खेलों में भी प्रतिभाग करते हैं। इन खेलों में प्रतिभाग करने से पूर्व अध्यापकों के द्वारा तैयारी करायी जाती है। जिसके कारण इन प्रतियोगिताओं में इस विद्यालय का परिणाम अच्छा रहता हैं। इस वर्ष भी यहां के बच्चे कबड्डी, गोला फेंक, कला आदि में स्थान पायें हैं। छात्रवृत्ति हेतु विभिन्न स्तरों पर आयोजित कार्यक्रमों में यहां के बच्चों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। यशवीर सिंह, मंगल सिंह, तथा विकास कुमार इन प्रतियोगिताओं में राष्ट्र स्तर तक गये थे। प्रतियोगिताओं के साथ ही साथ इस विद्यालय में प्रातःकालीन सभा को रुचिकर बनाने का भरसक प्रयास किया जाता है। इसके दौरान ही श्लोक बोलना, सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को पूछना, कवितायें बोलना, कहानियां कहना तथा साफ–सफाई के सम्बन्ध में चर्चा की जाती है। इन चर्चाओं में कहीं न कहीं अनुपस्थित बच्चों के सम्बन्ध में उनके सहपाठियों से जानने का प्रयास किया जाता है। इस विद्यालय में बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेष रुचि रखते हैं। बच्चों के द्वारा ढोलक, हारमोनियम तथा अन्य वाद्ययंत्रों का संचालन स्वयं किया जाता हैं। विद्यालय सभागार में दो कम्प्यूटर लगे हैं जिनका इस्तेमाल बच्चे और शिक्षक अनेक कार्यों के लिए करते हैं। इन कम्प्यूटरों का प्रयोग बच्चों के नृत्य में भी किया जाता है।

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिससे लोग समाज के सदस्य बनते हैं। जाहिर है यह एक सरल और निर्विवादित प्रक्रिया तो हो नहीं सकती। कुछ लोग सामाजीकरण द्वारा अच्छे दास बनाना चाहेंगे, जो कि आसानी से दब जाएं और सवाल न उठाएं। कुछ यह चाहेंगे कि सामाजीकरण आजाद किस्म के चिन्तक बनाएं, जो कि हर बात पर सवाल उठाकर उसकी गहराई तक जाएं। कुछ ऐसे ही चिंतक बनाने का ख्वाब देखा है इस विद्यालय के शिक्षकों ने।

(सहयोग : इमरान, संजय व फोटो : संजय रावत)

शैक्षिक उन्नयन पर केन्द्रित

राजकीय प्राथमिक विद्यालय नवागांव, विकासखण्ड डुण्डा

– अनूप दुबे

उत्तरकाशी जनपद के विकासखंड डुंडा भौगोलिक आधार पर मुख्यतः तीन भागों में बंटा हुआ है। विकासखंड में कुल 12 संकुल हैं जिनमें से एक संकुल है जुणगा है। इसी संकुल का एक गांव नवागांव या गौनाग गंगोत्री–बड़कोट मार्ग पर ब्रह्मखाल से लगभग 18 किमी एवं उत्तरकाशी से 63 किमी की दूरी पर बसा है। यह सौ परिवारों का गांव है। नवागांव की कुल जनसंख्या लगभग 500 है। ग्राम नवागांव में एक प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है और बच्चों को कक्षा 8 के बाद की पढाई के लिए ब्रह्मखाल या उत्तरकाशी ही जाना होता है। मुख्य सड़क से लगभग 15 कि.मी. कच्ची सड़क पर चलने के उपरांत हम प्राथमिक विद्यालय नवागांव के प्रांगण में पहुंचते हैं। विद्यालय प्रांगण में पहुंचते ही बच्चों की किलकारियों से मन प्रफुल्लित हो उठता है और चारों ओर लगी सुन्दर–सुन्दर फूलों की फुलवारी आंखों को बहुत सुकून पहुंचाती हैं।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय नवागांव के भवन में कुल तीन कक्ष हैं जिसमें दो कक्षा–कक्ष एवं एक स्टाफ कक्ष है। बच्चों के खेलने के लिए विद्यालय का बरामदा एवं छोटा सा मैदान भी है। साथ ही विद्यालय में एक व्यवस्थित रसोई घर है विद्यालय में बालक तथा बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालयों की व्यवस्था है। विद्यालय में एक भोजन माता काम करती हैं और प्रेमपूर्वक बच्चों को भोजन परोसती हैं।

बच्चों में पढ़ने-लिखने की आदत विकसित हो इसके लिए विद्यालय में उपलब्ध बाल-साहित्य की पुस्तकों के साथ बच्चों को कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाता है जहां वे अपनी रुचि अनुसार किताबें पढ़ते हैं। इस गतिविधि में खास तौर पर यह सावधानी बरती जाती है कि बच्चों को कम से कम निर्देश दिए जाएं।

दिन वार भोजनसूची भी बनाई हुई है और इसका पालन लगभग निरंतरता से किया जाता है। विद्यालय के बच्चे भी माध्याह्न भोजन की व्यवस्था में अपना सहयोग देते हैं। विद्यालय परिसर में जो फुलवारी है उसमें उगाई जा रही सब्जियों (बैंगन, लौकी, टमाटर) का प्रयोग मध्याह्न भोजन में किया जाता है। अगर कुल मिलकर कहें तो बच्चों के लिए बन रहा भोजन बहुत ही स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण होता है। शिक्षकों का प्रयास रहता है कि बच्चों को खाना अच्छा मिले।

विद्यालय की सबसे खास बात यहां का भय–मुक्त वातावरण है। यहां के दोनों शिक्षकों की यह विशेषता है कि वे बच्चों से बहुत ही प्रेम से पेश आते हैं और दोनों मिलकर एक ऐसा स्थान बनाने का प्रयास करते है, जहां बच्चे अपने को बहुत ही सहज महसूस करें और अपने विचारों व अनुभवों को बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर पाएं। शिक्षक बच्चों द्वारा किये गये कार्यों को महत्त्व देते हैं। जिसका परिणाम है कि यहां के बच्चे अपनी कक्षा में हिंदी के पाठ या गणित की विषय की कुछ न कुछ संक्रिया करते मिलेंगे। जैसे मानो यहां के बच्चों को कुछ न कुछ नया कार्य करने और सीखने की आदत सी हो गयी है। बच्चों को कार्य करने के दौरान अगर कोई भी दिक्कत आती है, वह अपने शिक्षकों के पास जाकर उनसे पूछते हैं और शिक्षक भी समान रूप से महत्व देते हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के लिए बच्चे की बात से बढ़कर कुछ नहीं है। यहां के बच्चों में स्वयं को अभिव्यक्त करने वाली बात बहुत प्रभावित करती है। बच्चों से जब बात की जाती है तो वे खुलकर अपनी बात रखते हैं। उनके स्वयं को अभिव्यक्त कर पाने के इस हुनर की जड़े हमें शिक्षकों के व्यवहार में मिलती हैं। शिक्षकों का समुदाय के साथ में पारिवारिक एवं दोस्ताना व्यवहार ही बच्चों को शिक्षकों के इतना करीब लाता है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक विशालमणी नौटियाल जी मानते हैं कि हम लोग बच्चों के अभिभावकों से निरंतर संपर्क में रहते हैं। जब बच्चे देखते हैं कि हमारे गुरूजी अभिभावकों के साथ मिलकर सहजता से चर्चा कर रहें हैं। इसीलिए बच्चे भी हमें अपने परिवार का हिस्सा मानते हुए हमसे अपनी छोटी से छोटी बातें भी साझा कर लेते हैं।

पिछले वर्ष तक विद्यालय में बच्चों की संख्या केवल 14 थी। जो इस वर्ष बढ़कर 28 हुई है। इस विषय पर चर्चा करते हुए विशालमणी जी ने बताया कि इसका श्रेय अपने शिक्षक साथी मुकेश रमोला जी एवं पूर्व में इस विद्यालय में कार्यरत शिक्षिका रहीं दीपाली जी को जाता हैं। वे कहते हैं कि वह दोनों ही साथी ऊर्जावान हैं। क्योंकि विद्यालय में बच्चों की संख्या कम थी। तब भी हम हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठे। विद्यालय के शिक्षकों ने मिलकर बच्चों का नामांकन बढ़ाने की योजना बनायी। विद्यालय में जो शिक्षार्थी हमारे पास अध्ययन कर रहे हैं उनके सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया जाए। जिसमें अकादमिक पक्षों को केन्द्रित किया गया। इस तरह विद्यालय पर बच्चों के सीखने के स्तर पर कार्य किया गया एवं उसी का नतीजा हुआ कि समुदाय ने हमारे विद्यालय पर विश्वास जताया।

विद्यालय में बच्चों को पढ़ाते समय किताबों को केवल एक माध्यम समझा जाता है एवं कभी भी कोर्स पूर्ण करने जैसी

यांत्रिक प्रक्रिया नहीं निभायी जाती अपितु बच्चों से चर्चा की जाती है कि वह क्या और किस विषय में पढ़ना चाहेंगे। शिक्षकों की योजना रहती है कि बच्चों को कहानियों के माध्यम से विषय की अवधारणाओं से परिचित कराया जाए। शिक्षक बच्चों को प्रेरित करते हैं कि बच्चे अपने परिवेश के ज्ञान और अनुभव को कक्षा में अभिव्यक्त करें। उन अनुभवों को भी कक्षा–शिक्षण का हिस्सा बनाकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाता है।

बच्चों के सीखने को गति देने के लिए विद्यालय में शिक्षकों द्वारा एक कमरे को सीखने का कमरा बनाया गया। इस कमरे में बच्चों के लिए बहुत सारी कहानी और कविताओं के चार्ट, देश के महापुरुषों के चित्र, विभिन्न प्रान्तों के नक्शे, ऐतिहासिक इमारतों के चित्र एवं अन्य कई तरह की ज्ञान–विज्ञान से जुड़ी जानकारियों को भी सजाया गया है। इस कक्ष में बच्चों को कुछ समय दिया जाता है जिसके दौरान बच्चे स्वतंत्र रूप से इस कक्ष में गुजरते हैं और वापस आकर अपनी रूचि अनुसार देखे गए चित्रों में से किसी के विषय में जानकारी एकत्रित करके लिखते है। जिन बच्चों को लिखने में दिक्कत आती है तो शिक्षक बच्चों से बातचीत करके बच्चों को समझाते हैं कि विषय के बारे में कैसे लिखना है। विद्यालय में हो रहे यह प्रयास और प्रक्रियाएं इस विद्यालय को बाकी अन्य विद्यालय की प्रक्रियाओं से तो अलग करता ही है, साथ ही बच्चों में स्वयं से ज्ञान को सृजित करने के अवसर भी प्रदान करतें हैं।

इस विद्यालय की एक रोचक गतिविधि है 'अभी–अभी हमने सीखा।' जो बच्चों को अपने अनुभवों को विस्तृत करने एवं स्वयं का कुछ मौलिक लिखने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षक साथी बच्चों के साथ किसी भी विषय पर चर्चा करते हैं, जैसे– पानी, प्रदूषण, खेती आदि या उन्हें गांव के किसी भाग का भ्रमण करवाते हैं और बच्चों को उसके विषय में लिखने को कहते हैं लिखी हुई सामग्री को कक्षा–कक्ष की दीवार पर लगा देते हैं। शिक्षकों का बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान रहता है, उसके लिए शिक्षक बच्चों के स्तर अनुसार उनको एक विषय दे देते हैं और उस पर वाद–विवाद या चर्चा करवाते हैं। बच्चों में पढ़ने–लिखने की आदत विकसित हो, उसके लिए विद्यालय में उपलब्ध बाल–साहित्य से कुछ पुस्तकों के साथ बच्चों को कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाता है जहां वे अपनी रुचि अनुसार किताबें पढ़ते हैं। इस गतिविधि में खास तौर पर यह सावधानी बरती जाती है कि बच्चों को कम से कम निर्देश दिए जाएं। उनका मनना है कि बच्चे स्वतंत्र रूप से ज्यादा सोच पाते हैं। जब बच्चे पढ़ने वाली प्रक्रिया को कर लेते हैं तो बच्चों ने उन किताबों के सन्दर्भ में क्या सीखा व पढ़ा है उसको अपनी भाषा में लिखने को कहा जाता है। शिक्षकों का मानना है कि इस प्रकार की गतिविधियों से गुजरने का मौका मिलता है तो बच्चों की पढ़ने–लिखने में रुचि बढ़ती है।

विशालमणी नौटियाल

मुकेश रमोला

किसी भी विद्यालय के सफल संचालन के लिए वहां के शिक्षकों की आपसी समझ एवं एक दूसरे को सहयोग करने की व्यवस्था की अहम भूमिका रहती है। क्योंकि ज्यादातर समस्याएं लोगों की आपसी समझ की कमी के कारण ही होती हैं। इस विद्यालय के दोनों शिक्षकों, विशालमणी नौटियाल जी एवं मुकेश रमोला जी के मध्य बहुत ही मधुर संबंध है जो उनकी कार्यशैली में भी झलकता है। वे निरंतर एक–दूसरे से संवाद करते हैं, विद्यालय के बेहतर संचालन के लिए मिलकर योजना बनाते हैं और मिलकर क्रियान्वयन भी करते हैं।

इस विद्यालय को शिक्षकों के समुदाय के साथ बेहतर रिश्तों के लिए एक अलग पहचान मिली है। वर्तमान में विद्यालय का भवन बहुत ही जर्जर अवस्था में है किन्तु अभिभावकों ने ग्राम पंचायत के साथ मिलकर इस विद्यालय के जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया है और जल्दी ही विद्यालय का कार्य शुरू होने वाला है। भवन निर्माण के लिए ग्राम पंचायत ने धनराशि की व्यवस्था कर दी है और निर्माण विभाग द्वारा भी प्रथम स्तर का सर्वे भी कर लिया गया है। विद्यालय के शिक्षकों का कहना है कि समुदाय ने इस विद्यालय को अपना समझा है और बहुत ही भरोसे के साथ अपने बच्चों के भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी हमारे हाथों में सौंपी है।

गांव में पिछले वर्षों तक एक प्राइवेट विद्यालय था। यहां के शिक्षकों ने लगातार प्रयास किये। अभिभावकों से निरंतर संवाद किया, जिस गांव में विद्यालय है वही अपना बसेरा किया, बच्चों के शैक्षिक पक्ष पर बहुत ध्यान दिया और सफलता प्राप्त कर रहे बच्चों के स्तर को अभिभावकों के साथ साझा किया जिसके परिणाम स्वरूप अभिभावकों का विश्वास विद्यालय पर बढ़ा और सभी बच्चों का नामांकन इस विद्यालय में कराया। गांव में चल रहा प्राइवेट विद्यालय बंद हो गया। यहां के शिक्षकों का मानना है कि सामुदायिक सहभागिता को प्राप्त करने के लिए पहले उनके विश्वास को अर्जित करना महत्वपूर्ण कदम होता है। जिसके लिए हमने केवल बच्चों को शैक्षिक पक्ष पर जोर दिया। बच्चों के विकास को देखकर समुदाय के लोग स्वयं प्रभावित हुए। जिसके लिए हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। बच्चे खुद हमारे संवाहक बने। उन्होंने खुद घर जाकर अपने माता–पिता को विद्यालय में हो रही गतिविधियों को बताया। शिक्षक कहते हैं कि पहले हमें स्वयं में बदलाव करना होगा। अपने कार्य को पूरी निष्ठा से करने की आवश्यकता है, उसके बाद समुदाय के लोग स्वयं आपके साथ चलने के लिए तैयार हो जायेंगे।

विद्यालय के दोनों शिक्षक बच्चों के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते है। विद्यालय से जुड़े प्रत्येक मुद्दों और कार्यक्रमों की जानकारी, समुदाय के जनप्रतिनिधियों को दी जाती है। उन्हें सम्मान से विद्यालय में आमंत्रित किया जाता है। जिससे विद्यालय को समुदाय से जुड़ने का अवसर मिलता है। कुल मिलाकर समुदाय ने भी इस विद्यालय को अपना विद्यालय माना है।

(सहयोग : प्रवीन उनियाल व फोटो : अनूप दूबे)

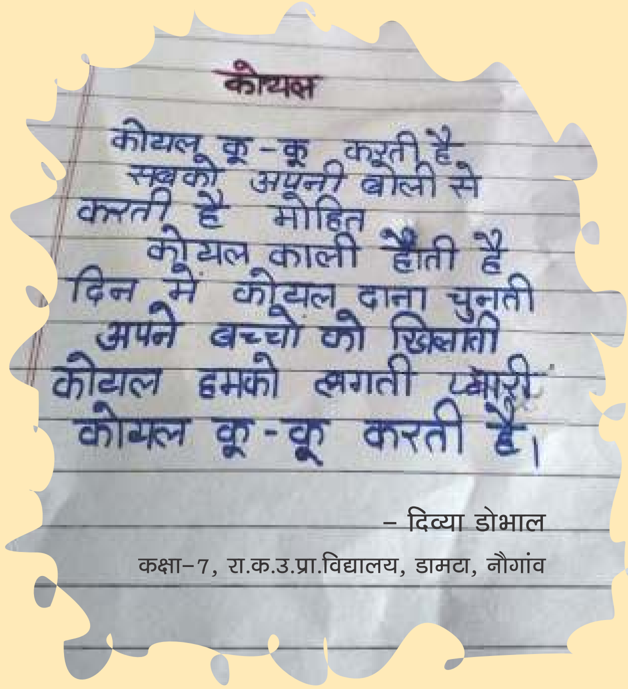

– दिव्या डोभाल
कक्षा–7, रा.क.उ.प्रा.विद्यालय, डामटा, नौगांव

–मोहित चौहान
कक्षा–5, रा.प्रा.विद्यालय, पिसाउं, नौगांव

मौजूदा संसाधनों में बेहतर कोशिशें

राजकीय प्राथमिक विद्यालय- जसपुर तल्ली, विकासखण्ड चिन्यालीसौड़

– विवेक सोनी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी स्पष्ट कहा गया है कि गुणवत्ता सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। विद्यालयों के संदर्भ में यदि संसाधनों को देखें तो कई विद्यालय संसाधन विहीन होते हुए भी बेहतर प्रदर्शन करनते आए हैं, कर रहे हैं। खेत–खलिहानों में संचालित स्कूलों का हमारा एक इतिहास रहा है। यद्यपि आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं, कम संसाधनों में काम करना मुश्किल तो प्रतीत होता है लेकिन ऐसा नहीं है की यह संभव न हो। कई शिक्षकों द्वारा इस तरह के प्रयास किये जा रहे हैं और ये छोटे–छोटे प्रयास विद्यालय में पढ़ने वाले नन्हे–मुन्नों के सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रसस्त करते नजर आ रहे हैं। ऐसे विद्यालय हैं जहां बच्चों की रूचि देखते ही बनती है। बच्चे बेधड़क अपने मन में उपजे प्रश्नों को शिक्षकों के समक्ष रख देते हैं। जहां किसी प्रकार का डर बच्चों को शिक्षकों से नहीं लगता और उनका ये मैत्रीपूर्ण व्यवहार बच्चों और शिक्षकों के बीच की झिझक को स्थान ही नहीं देता है। बच्चों को पाठयपुस्तकों से उनके परिवेश और बाहरी दुनिया से जोड़ता है। उन्हें अपनी परिवेशीय समझ को सीखने से जोड़ने और घर–परिवेश के अनुभवों को विद्यालय में जगह देते हुए आगे बढ़ने के अवसर देता है। इस तरह के अवसरों का किसी विद्यालय में व्यवहार में लाना वाकई सीखने को नये आयाम देता है। शिक्षकों और बच्चों के रिश्तों की जहां एक नयी

शिक्षण के थीम आधारित तौर-तरीकों से बच्चों को साथ मिलकर काम करने में अधिक मजा आता है और यह विषयों की समग्र समझ बनाने में भी मूल्यवान है।

परिभाषा गढ़ी जा रही है। उत्तरकाशी जनपद के चिन्यालीसौड़ विकासखण्ड में कुछ ऐसे ही सकारात्मक प्रयासों को परिलक्षित करते विद्यालयों में से एक है राजकीय प्राथमिक विद्यालय जसपुर तल्ली।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय जसपुर तल्ली, ब्लॉक मुख्यालय चिन्यालीसौड़ से लगभग 14 किमी. व धरासू बैंड से 3 किमी की दूरी पर स्थित है। विद्यालय तक पहुंचाने के लिए सड़क से लगभग 1 किमी. की पैदल चढ़ाई भी चढ़नी होती है। सड़क से विद्यालय तक का मार्ग गांव के किनारे व खेतों के बीच से होकर जाता है। खेतों की हरियाली और फलों के वृक्षों की छाया इस रास्ते की पैदल खड़ी चढ़ाई की कठिनाई को महसूस नहीं होने देती। एक सौ के आसपास आबादी वाले महरगांव के पूर्वी ओर ये विद्यालय है। गांव की अधिकतम आबादी खेती पर निर्भर है। इस गांव के आस–पास मुख्य रूप से राजमा, धान व गेंहू की खेती की जाती है।

इस विद्यालय की स्थापना सन 1962 में हुई थी। उस समय चमियारी संकुल का यह एकमात्र प्राथमिक विद्यालय हुआ करता था। इस संकुल के अंतर्गत आने वाले सभी गांवों के बच्चे यहीं पढ़ने के लिए आते थे। वर्तमान में विद्यालय भवन के अन्तर्गत यहां तीन कक्षा–कक्ष हैं। मध्याह्न भोजन बनाने हेतु विद्यालय में एक रसोईघर है। विद्यालय में बालक–बालिका हेतु अलग–अलग दो शौचालय हैं। बच्चों की शैक्षिक व खेलने से जुड़ी गतिविधियों के लिए विद्यालय में एक छोटा सा मैदान है, जिसमें बच्चे व शिक्षक मिलकर विभिन्न प्रकार के खेलों व शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं। समुदाय, शिक्षकों व बच्चों के प्रयासों से इस मैदान के चारों तरफ अलग–अलग प्रकार के फूलों से महकती छोटी–छोटी क्यारियां भी मौजूद हैं जो विद्यालय की सुन्दरता बढ़ाने में निरंतर अपना योगदान दे रही हैं। सभी बच्चे व शिक्षक साथी इन पौधों का ध्यान रखते हैं।

वर्तमान समय में इस विद्यालय में 30 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत हैं। इन बच्चों को पढ़ाने के लिए एक शिक्षिका व एक शिक्षक कार्यरत हैं। वर्ष 2004 से श्री महावीर सिंह बिघाना जी जोकि वर्तमान में प्रधानाध्यापक भी हैं यहां कार्यरत हैं। वह राजकीय शिक्षण सेवा में लगभग सत्रह वर्षों का अनुभव रखते हैं। श्रीमती सुनीता जी वर्ष 2006 से इसी विद्यालय में कार्यरत हैं। दोनों साथियों के बीच विषयों व विद्यालय संचालन का अच्छा तालमेल देखा जा सकता है। विद्यालय में कक्षा एक व दो के बच्चों की बैठने की व्यवस्था एक साथ है। कक्षा तीन के बच्चे वर्तमान में एक अलग कक्षा कक्ष में बैठते हैं और कक्षा चार व पांच को एक कक्षा कक्ष में बिठा कर शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है। यहां शिक्षकों का मानना है कि कक्षा एक व दो के बच्चों पर अधिक ध्यान देना जरुरी है और वे ऐसा कुछ वर्षों से करते आ रहे हैं और इसके उन्हें काफी बेहतर परिणाम मिल रहे हैं। विद्यालय में जब

बच्चे शुरुआत में आते हैं तो उन्हें ज्यादा देखभाल व समय देने की जरुरत महसूस होती है क्योंकि शुरुआती समय में वे एक नये वातावरण में प्रवेश करते हैं जिसमें उन्हें घुलने–मिलने और अपनाने में समय लगता है। इसके लिए उनसे ज्यादा बातचीत करना व उन्हें रुचिकर गतिविधियों में जोड़े रखने से वे विद्यालय की प्रक्रियाओं में धीरे–धीरे जुड़ने लगते हैं और सीखने की मुख्य धारा का हिस्सा बनते चले जाते हैं। इसकी शुरुआत शिक्षक साथी बच्चों के विद्यालय में नामांकन से पूर्व उनके घर पर जाकर मिलने से करते हैं। यहीं से शिक्षकों का बच्चों उनके अभिभावकों व समुदाय को जानना–समझना शुरू होता है। आगे चलकर विद्यालय में उनकी ये बातचीत व रिश्ते बच्चों के सीखने–सिखाने व समझने में मददगार साबित होते हैं। साथ ही यहां के शिक्षक साथी शुरूआती समय में बच्चों के साथ स्थानीय बोली में ही बातचीत करते हैं जिससे बच्चे जल्दी शिक्षकों से जुड़ते हैं और विद्यालय में शुरूआत में नये माहौल मिलने पर बढ़ने वाली झिझक को कम कर पाने में सफल होते हैं।

शुरुआती कक्षाओं में शिक्षण की बात करें तो शिक्षकों का मानना यह है कि जरूरी नहीं कि बच्चों के साथ भाषा पढ़ाने के लिए पारम्परिक वर्णों के क्रम से ही सिखाना शुरू किया जाय, बल्कि शुरुआत उन शब्दों से की जाए जिनका प्रयोग व दोहराव बच्चों के बातचीत में अधिक बार होता हो। विगत कुछ वर्षों से शिक्षक सेवारत प्रशिक्षणों में भी इन बातों पर काफी जोर दिया जाता रहा है और इस विद्यालय में इसे प्रयोग होते हुए देखा जा सकता है। इसमें बच्चों के अनुभवों व उनकी स्थानीय बातों की समझ व स्थानीय जानकारियों को बखूबी काम में लिए जाने की जरूरत लगती है और यह भाषा शिक्षण में काफी अहम भूमिका निभा रहा है। इसके साथ–साथ एक निश्चित क्रम में रटने पर अधिक आधारित न रहते हुए बच्चे समग्रता में समझ बना रहे हैं। ऐसे ही गणित विषय को लेकर भी विद्यालय में बढ़िया काम किया जा रहा है। जिसमें शुरुआती कक्षाओं में गिनती, गिनना व संख्याओं की मूर्त अवधारणाओं को लेकर बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं जिससे गणित को मूर्तता में समझा जा सके। जैसे बच्चों को तीन और तीसरा, पांच व पांचवां, गिनती व गिनने की इस तरह की प्रक्रियाओं को मूर्त रूप से करवाने का प्रयास किया जाता है। इन गतिविधियों में गणित की किट व परिवेश में मौजूद सामग्री का भरपूर उपयोग किया जाता है जिससे बच्चों के सीखने को उनकी व्यावहारिकता में सीखने के साथ–साथ शामिल किया जा सके। विद्यालय में किसी भी शिक्षण बिंदु को पुस्तकों से पढ़ाने से पूर्व उनके सन्दर्भों पर चर्चा की जाती है। परिवेशीय व व्यावहारिक उदाहरणों के आधार पर पुख्ता समझ बनायी जा रही है। अंग्रेजी विषय के शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय में बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की राइम्स की जाती हैं। बच्चों को अंग्रेजी में वार्तालाप के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके साथ–साथ विद्यालय में शिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें व इनके अतिरिक्त बाजार में उपलब्ध पुस्तकों व चार्टों आदि को भी प्रयोग में ला रहे हैं।

विद्यालय में स्वच्छता को लेकर भी विशेष ध्यान दिए जाने के कारण विद्यालय काफी स्वच्छ नजर आता है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता बच्चों के व्यवहार व विद्यालय की व्यवस्थाओं में दिखाई पड़ती है। इसके लिए प्रतिदिन विद्यालय के बच्चे व शिक्षक मिलकर साफ–सफाई करते हैं। शिक्षकों द्वारा बच्चों को नियमित रूप से इसके लिए प्रेरित किया जाता है। विद्यालय में साबुन, तौलिया व दर्पण की व्यवस्था है की गयी है जो बच्चों को स्वच्छता और सौन्दर्य के प्रति जागरूक करते हैं।

महावीर सिंह बिघाना

सुनीता

राजकीय प्राथमिक विद्यालय जसपुर तल्ली में बच्चे अकादमिक शिक्षण के साथ–साथ व्यावहारिक शिक्षा से भी जुड़ें इसके लिए भी विद्यालय प्रयासरत है। बच्चों की लीडरशिप पर कार्य किया जा रहा है इसके लिए विद्यालय में बच्चों के तीन अलग–अलग समूह बनाये गये हैं जिन्हें ग्रीन (हरा), रेड (लाल) व यलो (पीला) नाम से गठित किया गया है। जिसमें सभी समूहों के सदस्यों को लीडरशिप के अवसर मिलते हैं। सप्ताह में प्रति समूह दो–दो दिन (सोमवार–मंगलवार को रेड, बुधवार–वृहस्पतिवार को यलो और शुक्रवार–शनिवार को ग्रीन समूह) के आधार पर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। इन जिम्मेदारियों में अक्सर

विद्यालय को व्यवस्थित रखने व सभी बच्चों को सभी तरह के कामों में अवसर मिलने को प्राथमिकता में रखा जाता है। इसमें यह बात बहुत अच्छी है कि विद्यालय में केवल कुछ बच्चों को ही अवसर नहीं मिलते बल्कि सभी को सभी तरह के कामों में लगातार व निश्चित समय के बाद अवसर मिलते ही हैं। जिससे बच्चों में विद्यालय व खुद के कार्यों को स्वयं कर पाने के गुण भी विकसित हो रहे हैं। साथ ही साथ एक टीम के तौर पर कैसे समृद्ध हुआ जाता है, इसके लिए शिक्षकों द्वारा उन्हें समय–समय पर मार्गदर्शन दिया ही जाता है।

इसी क्रम में प्रतिदिन विद्यालय में आयोजित की जाने वाली प्रातः कालीन सभा में अलग–अलग तरह की प्रार्थनाएं सप्ताह के अलग–अलग दिनों में गाते हैं। प्रातःकालीन सभा के लिए भी बच्चों के तीन समूह अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। बच्चों को प्रश्न करने के समान अवसर दिए जा रहे हैं। बच्चे प्रतिज्ञा, दैनिक समाचार, नीतिवचन, कवितायें, तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को भी शामिल करते हैं। यह प्रश्न मुख्यतः सामान्य–ज्ञान, परिवेशीय जानकारियां व विषय आधारित होते हैं। व्यायाम आदि को भी प्रतिदिन प्रार्थना के साथ–साथ स्थान दिया जाता है।

विद्यालय में दोनों शिक्षक साथी कड़ी मेहनत से शिक्षण कार्य करतेहैं। उन्हें जहां भी किसी कार्यशाला, प्रशिक्षण व शैक्षिक संगोष्ठियों में जाने का अवसर मिलता है तो वे उनमें प्रतिभाग करते हैं और वहां की लर्निंग्स को अपने विद्यालय में करने की कोशिश कर रहे हैं। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि इस क्षेत्र में वर्ष 2003 व वर्ष 2006 में प्राइवेट विद्यालय खुले और कुछ ही समय में बंद हो गये। यहां के शिक्षकों पर महरगांव व आस–पास के गांव के अभिभावकों का भरोसा इस बात का प्रमाण है। विद्यालय में बच्चों की रूचि व विद्यालय से जुड़ी बातों को जानने के लिए 'मन की बात' पेटिका भी व्यवस्थित की गयी है। इस माध्यम से बच्चे नियमित रूप से अपने मन की बातों को शिक्षकों तक पहुंचा रहे हैं और शिक्षक उन बिन्दुओं पर ध्यान देते हुए सुधार कर रहे हैं।

विद्यालय स्तर पर बच्चों के लिए समय–समय पर चित्रकला, निबन्ध, सामान्य ज्ञान आदि से जुड़ी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है और इससे उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हो रही है। विद्यालय में अध्यापक डायरी का प्रयोग बच्चों की दक्षताओं को आधार बनाते हुए किया जा रहा है। दक्षता व सीखने के अवसर के अनुसार बच्चों के लिए शिक्षक कार्य–योजना बना रहे हैं। यदि कोई बच्चा किसी दक्षता में पीछे रह जाता है तो उनके लिए अलग से योजना बनायी जाती हैं।

विद्यालय में समुदाय का सहयोग भी शिक्षकों व बच्चों को समय–समय पर मिलता रहता है। अभिभावक व विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्य विद्यालय आते हैं और विद्यालय की जरूरतों को समझते हैं व अपेक्षित सहयोग भी करते हैं। अभिभावक अपने बच्चों को पठन–पाठन में भी घर पर सहयोग करते हैं। इस प्रकार कई तरह के छोटे–छोटे मगर बहुत महत्वपूर्ण प्रयास मिलकर इस विद्यालय के बच्चों की बेहतर शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और अंत में...

राह के पत्थर से बढ़कर कुछ नहीं मंजिलें... रास्ते
आवाज देते हैं सफर जारी रखो

– राहत इंदौरी

(सहयोग : मंजू रावत व फोटो : विवेक सोनी)

जहां माताएं भी सक्रिय भूमिका में हैं

राजकीय जूनियर हाई स्कूल बोंगा, विकासखण्ड भटवाड़ी

– अलका उनियाल

शिक्षा तभी सफल मानी जाती है जब वह समय के साथ समाज की बदली हुई आवश्यकताओं को पूरा करे और समाज में समय अनुसार सकारात्मक बदलाव ला सके। विद्यालय बच्चों के सामाजीकरण की एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है। यहां बच्चे न सिर्फ भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषय सीखते हैं अपितु जिंदगी जीने की व्यावहारिकता को भी आत्मसात करते हैं। बाल मन में अपने शिक्षकों की बातों का इतना महत्व है कि वो शिक्षक की कही बात को ही सही मानते हैं। इस प्रकार एक शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उसके हाथ में समाज के भविष्य की डोर होती है। शिक्षक के इसी सामाजिक कर्तव्य के मार्ग पर अग्रसर होते हुए जूनियर हाई स्कूल बोंगा के शिक्षक न केवल शिक्षण में नवाचार कर रहें हैं बल्कि समाज में व्याप्त को भी पाटने की कोशिश कर रहें हैं।

इन्द्रावती नदी के किनारे शहर के शोर शराबे से अलग बसा हुआ है बोंगा गांव। उत्तरकाशी जनपद के ब्लॉक भटवाड़ी के अंतर्गत यह गांव उत्तरकाशी शहर से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर है। शहर के नजदीक होने पर भी शहर का रंग यहां चढ़ नहीं पाया है। गांव में करीब 70–80 परिवार हैं जो आजीविका के लिए मुख्यत खेती एवं पशुपालन पर निर्भर हैं। कुछ परिवारों से पुरुष सदस्य उत्तरकाशी में दुकानों में भी कार्य करते हैं। मोटर मार्ग से करीब 100 मीटर पैदल चलकर उच्च प्राथमिक विद्यालय पहुंचा जा सकता है। विद्यालय के गेट से अन्दर प्रवेश करते ही साफ सुथरा और

पुस्तकालय तथा स्थानीय परिवेश पर आधारित प्रोजक्ट कार्य करने से रचनात्मकता स्वत: बढ़ने लगती है। साथ ही समुदाय की भागीदारी भी बढ़ने लगती है।

शांत परिसर आपका स्वागत करता है। यहां आप जब भी जायेंगे तो शिक्षकों और बच्चों को शैक्षिक कार्यों में तल्लीन पाएंगे। विद्यालय का आंगन काफी बड़ा है और समय समय पर विभिन्न मौसमी फूलों से इसके किनारे सुसज्जित रहते हैं। विद्यालय परिसर में तीन कक्षा–कक्ष, एक पुस्तकालय, एक अतिरिक्त कक्ष, एक ऑफिस, एक किचन और दो शौचालय हैं।

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1987 में हुई थी। यहां वर्तमान में बोंगा, कयाण गांव, भेलुड़ा एवं साड्ग चार गांव से बच्चे पढ़ने आते हैं। शिक्षक बताते हैं कि यहां से कोई भी बच्चा उच्च प्राथमिक की शिक्षा के लिए प्राइवेट में नहीं जाता। यहां तक कि जो व्यक्ति प्राइमरी प्राइवेट विद्यालय चलाते हैं उनके बच्चे भी इसी विद्यालय में पढ़ते हैं। इस वर्ष में विद्यालय में कुल 37 बच्चों का नामांकन है, जिसमें 19 बालिकाएं एवं 18 बालक हैं। यहां तीन शिक्षक श्री भगत सिंह महर (प्रभारी प्रधानाध्यापक), श्री रतन सिंह मटूडा एवं श्री भूपेंद्र शाह कार्यरत हैं। श्री महर जी 15 वर्षों से, श्री शाह जी 12 वर्षों से एवं श्री मटूडा जी 17 वर्षों से यहां कार्यरत हैं।

यहां बच्चे चार सदन भगत, पटेल, इंद्रा, आजाद में बंटे हुए हैं और जब जिस सदन की बारी होती है वह विद्यालय की सारी गतिविधियों को संचालित करता है। बच्चे विद्यालय पहुंच कर प्रार्थना सभा से पहले क्यारियों में पानी लगाने विद्यालय की सफाई करने कूड़ा दान बहार निकाल कर रखने आदि कार्य कर लेते हैं। इन कार्यों में एक विशेषता रहती है कि सभी काम सभी बच्चे करते हैं अर्थात लड़के–लड़कियां मिलकर सभी कार्य करते हैं। इसके साथ ही कुछ बच्चे प्रार्थना के लिए बैठने की व्यवस्था करते हैं। शिक्षकों का मानना है कि हम बच्चों में यह भाव देना चाहते हैं कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होत है। विशेष, महिला या पुरुष से नहीं जुड़ा हुआ है।

प्रात:कालीन सभा का संचालन भी सदन अनुसार ही होता है। हाल ही में शिक्षकों द्वारा समाज कल्याण विभाग से प्रात:कालीन सभा के लिए योगा मैट्स की व्यवस्था करवायी गई। इस सभा में योग भी करवाया जाता है जिसे शिक्षक भी बच्चों के साथ करते हैं। शिक्षकों का मानना है की पढ़ने के साथ–साथ बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास भी बहुत जरूरी है जिसके लिए योग को विद्यालय में स्थान दिया गया है। बच्चों द्वारा एक स्वर और लय में गाये गीत मंत्रमुग्ध कर देते हैं। उसके बाद समूह गान, प्रतिज्ञा, सामान्य ज्ञान, समाचार एवं सच्ची बात भी होती है। सच्ची बात में कोई एक बच्चा विद्यालय के पूरे दिन की गतिविधियों की आख्या सुनाता है। यहां के शिक्षक कहते हैं, इस सच्ची बात से कई बार हमें भी अपने बारे में फीडबैक मिल जाता है जैसे कुछ व्यस्ताओं के चलते कुछ दिन सुबह से ही कागजी

कार्यों में लगे रहे तो बच्चों द्वारा जब यह सच्ची बात में आया तो हमारा ध्यान इस ओर गया और तब से हम तीनों ही प्रार्थना में जरूर शामिल होते हैं।

शिक्षक बताते हैं कि विद्यालय की सभी जिम्मेदारी जैसे प्रार्थना सभा, मध्याहन भोजन, पुस्तकालय, फर्स्ट एड आदि सभी की जिम्मेदारी बच्चे ही संभालते हैं। इससे बच्चों में जिम्मेदारी का भाव आता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। बच्चों के चहुमुखी विकास के लिए शिक्षक समय–समय पर नए–नए प्रयोग करते रहते हैं। बच्चों को कक्षा में कोई एक टॉपिक पढ़ाने को दिया जाता है। शिक्षक कहते हैं इससे बच्चे का स्वयं का कांसेप्ट तो मजबूत होता है, साथ ही बच्चों का सामने खड़े होकर बोलने और प्रश्नों के उत्तर देने का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। टॉपिक पढ़ाने के लिए बच्चे घर से तैयारी करके आते हैं। वह कहते हैं कि गांव के बच्चों में किसी के सामने बोलने में थोड़ा झेंप जाते हैं। इस झेंप को तोड़ने के लिए हम यह सब करते हैं। जब बच्चों कक्षा लेते हैं तब शिक्षक भी कक्षा में पीछे बैठे रहते हैं और अवलोकन करते हैं जिससे बच्चे को बाद में फीडबैक दे सकें।

इस विद्यालय की एक और ध्यान आकृष्ट करने वाली बात जो यहां की दीवारों और मेजों में सजी मिलती हैं यह है बच्चों द्वारा लिखा हुआ कार्य और उनकी अपने बारे में जानकारी। शिक्षकों द्वारा सभी बच्चों की फाइल बनायी गयी है जिसमें बच्चों द्वारा अपने बारे में 75 प्रश्नों के उत्तर दिए हुए हैं। सभी कक्षा की दीवारें बच्चों द्वारा बनाये गए चार्ट एवं उनके पाठयक्रम से जुड़े विषय, सामाजिक विषय आदि पर लिखे लेखों से सजी हुई हैं। शिक्षकों का मानना है कि सारी चीजें बच्चे हमसे नहीं सीख सकते और बच्चों को खुद से अपने लिए ज्ञान के नए स्रोत खोजने होंगे, इसलिए हम बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य देते हैं। जब हम बच्चों को कोई प्रोजेक्ट देते हैं तब बच्चे पुस्तकालय से रेफरेंस का मटेरियल ढूंढ़ते हैं साथ ही अपने आस–पड़ोस से भी ऐसे व्यक्तियों को ढूंढ लेते हैं जो उनकी मदद कर सके। आजकल बच्चों को अपने गांव अपने आस पास के बारे ज्यादा जानकारी नहीं रहती और न ही उसके बारे में जानना उन्हें जरूरी लगता है। इन प्रोजेक्ट कार्यों से बच्चे अपने परिवेश से और भी ज्यादा जुड़ते हैं। शिक्षक बताते हैं कि पिछले साल सभी बच्चों को अपनी मां के बारे लिखने को दिया गया था। इसमें बच्चों को कहा गया था कि अपनी मां से बातचीत करने के बाद उसे लिखना और बच्चों ने जब अपनी माताओं से बातचीत की और लिखा, तो हमारी आंखें भर आई। बच्चों ने कहा कि हम अपनी मां के बारे में यह सब कभी नहीं जानते थे। शिक्षक कहते हैं 'कि बच्चों के सबसे करीब मां होती है वो अपने बच्चों को सबसे ज्यादा जानती है उनकी छोटी बड़ी तकलीफ उनको बिना कहे समझ आती है पर हम अपनी मां को कभी नहीं जान पाते और कई बार वो जो हमारे लिए कर रही होती हैं उसे भी देख नहीं पाते। यह कार्य देकर हमारी मंशा थी कि बच्चे अपनी मां के अनकहे संघर्षों को देख पाएं और उन्हें बेहतर समझ पाएं। ऐसे ही बच्चों को अपने घर के बुजुर्गों के बारे में भी लिखने को कहा जाता है। बच्चों द्वारा पुस्तकालय का भी निरंतर उपयोग किया जाता है और इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।'

भगत सिंह मेहर

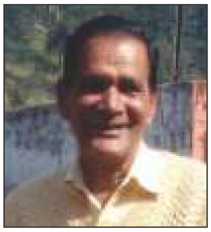

रतन सिंह

भूपेन्द्र शाह

इसी में मातृ सम्मेलन के बारे में पूछने पर शिक्षकों के द्वारा बताया गया, "पहले तो जो पिता जी लोग होते हैं वो अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते कितनी बार बुला लो पर आते नहीं और माताओं को बुलाओ तो वो समय निकाल कर आ ही जाती हैं। उनसे बात करने पर बच्चों में काफी फर्क दिखता है। दूसरा यह कि पिता की अहमियत बच्चे के जीवन में हर जगह दिखती ही रहती है पर मां का महत्त्व नहीं दीख पाता। इसलिए इन सम्मेलनों से हम बच्चों के जीवन में मां के महत्त्व को बताने की कोशिश करते हैं। इन सम्मेलनों के बाद बच्चों की उपस्थिति एवं साफ–सफाई में काफी अंतर देखने को मिल। इनमें सम्मेलनों में बच्चों की शैक्षिक प्रगति साफ सफाई आदि पर चर्चा होती है। बच्चों को भी घर के कार्यों में अपनी माताओं की मदद करने के लिए इन सम्मेलनों के द्वारा प्रेरित किया जाता है। यह सम्मेलन साल में दो बार किया जाता है।

शिक्षकों द्वारा विद्यालय में अलग–अलग मंचों द्वारा महिलाओं की सामाजिक भूमिका एवं

सामानता के लिए प्रयास किये जाते रहते हैं। विद्यालय में बालिका शिक्षा पर निबंध, वाद विवाद भी करवाए जाते हैं। बालक–बालिकाओं को एक साथ बिठाया जाता है। बालिकाओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक मानते हैं कि हमारे समाज में महिलाओं को समानता नहीं मिल पाती और बच्चे अपने सामाज से यह सीखते भी हैं। हमारी विद्यालय में यह कोशिश रहती है कि कैसे यह मानसिकता टूटे और बच्चों में सभी के लिए समानता का भाव जागे।

विद्यालय में बच्चों का बैठने का तरीका भी कुछ अनूठा है। शिक्षकों द्वारा कक्षा में बच्चों को उनके सीखने के स्तर के अनुसार बिठाया जाता है। बच्चों को तीन के ग्रुप में जिसमें बीच में जल्दी सीखने वाला बच्चा और उसके साथ दो थोड़ा धीमी गति से सीखने वाले छात्र बैठते हैं। शिक्षकों का मानना है कि इससे बच्चे आपस में ज्यादा सीख पाते हैं और सभी एक स्तर पर जल्दी पहुंच जाते हैं। इसी प्रकार बच्चों के गांव के अनुसार समूह बने हुए हैं और घर जाकर वह इन समूह में पढ़ाई भी करते हैं। शिक्षकों द्वारा बच्चों के लिए एक्स्ट्रा क्लास भी ली जाती है। इन्हीं सब प्रयासों का नतीजा बच्चों के शैक्षिक स्तर पर दिखता है। बच्चों के शैक्षिक स्तर के साथ साथ बच्चों का लेख भी यहां देखने लायक है।

स्वच्छता अभियान देश भर में जहां विगत तीन वर्ष से चलाया जा रहा है वहीं उस विद्यालय में 2011 से चल रहा है। स्वच्छता का महत्व यहां बहुत पहले ही समझा जा चुका है। जब बहुत बातचीत के बाद भी इसमें सफलता नहीं मिली तब बच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय में सन 2011 से प्रत्येक माह कक्षा वार स्वच्छता पुरुस्कार दिया जाता है। इसका परिणाम यह निकला कि बच्चों में धीरे–धीरे स्वच्छ आदतें विकसित हुई और अब यह रोजमर्रा की जरूरतों में शामिल है। विद्यालय में बाकायदा जैविक, अजैविक दो कूड़े दान रखे हुए हैं। बच्चों के हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था एवं साफ–सुथरे तौलिये सुबह ही बाहर टांग दिए जाते हैं। पिछले दो वर्षों से अब इस पुरुष्कार के लिए स्वच्छता के साथ साथ मासिक उपस्थिति, शैक्षिक कार्यों को भी जोड़ा गया है। जिस माह में मातृ सम्मलेन होता है उस माह में बच्चों के साथ–साथ माताओं को भी यह पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष स्वच्छता पर निबंध प्रतियोगिता में भी यहां के एक छात्र द्वारा जिले में पहला स्थान प्राप्त किया गया।

मध्याह्न भोजन की व्यवस्था भी यहां सुनियोजित है। सदन अनुसार बच्चे भोजन के लिए दरिया लगाते हैं और सभी को हाथ धुलवाते हैं। भोजन के बाद एक बच्चा मध्याहन भोजन की पंजिका में भोजन की गुणवत्ता पर टिपणी लिखता है जिसे पढ़कर अगर आवश्यक हो तो शिक्षकों द्वारा कार्यवाही की जाती है।

विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ खेल को भी पूरा–पूरा स्थान प्राप्त है। बच्चे मध्याहन भोजन के बाद रोजाना कुछ न कुछ खेलते हैं और शिक्षक भी उनके साथ इसमे प्रतिभाग करते हैं। विद्यालय में खेलने के लिए वॉली बाल, बैडमिंटन, गोला फेंक आदि का सामान उपलब्ध है और बच्चों द्वारा उसका निरंतर उपयोग किया जाता है। यहां बच्चों को खेल में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यहां से बच्चे हमेशा ही ब्लॉक एवं जिला स्तर के खेलों में प्रतिभाग करते हैं। दो–तीन वर्षों से यहां के बच्चों ने जिला स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तो शिक्षकों ने उत्साहित होकर बच्चों की प्रतिभा को निखारने के अतिरिक्त प्रयास शुरू किए।

शिक्षक मानते हैं कि बच्चों में बहुत प्रतिभा है पर सुविधाओं के अभाव में वे आगे नहीं बढ़ पाते। हम अगर कोशिश भी करते हैं लेकिन अभिभावक सहयोग नहीं कर पाते। फिर भी वह निरंतर प्रयास में हैं कि बच्चे खेल में कुछ आगे कर पाएं।

विद्यालय में सभी पर्व बहुत उत्साह से मनाये जाते हैं और समुदाय को भी इनमें आमंत्रित किया जाता है। समुदाय को विद्यालय से जोड़ने का यह एक प्रयास है। जहां एक तरफ एसएमसी व अभिभावक विद्यालय में होने वाले कार्यों से संतुष्ट है। वहीं शिक्षक मानते हैं कि यहां के समुदाय से अपेक्षित सहयोग अभी भी शेष है। विद्यालय परिसर की साज–सज्जा व संसाधनों की क्षति का खतरा भी बना रहता है। यद्यपि शिक्षकों द्वारा निरन्तर लोगों से बात की जाती है। कुल मिलाकर इस विद्यालय ने स्वयं को समुदाय को साथ लेकर आगे बढ़ने के सफल–असफल के प्रयास जारी है।

(फोटो : उत्तम व सहयोग : सौरव बनर्जी)

समुदाय का प्यारा स्कूल

राजकीय प्राथमिक विद्यालय जागटा, विकासखण्ड मोरी

– सुमित कुमार, प्रेमचंद चंदानी

जनपद उत्तरकाशी के छह विकासखंडों में से एक विकासखण्ड मोरी। इस विकासखण्ड में दस संकुल हैं जिनमें से एक का नाम टिकोची है, जिसके अंतर्गत एक गांव है जागटा। इस गांव में प्राथमिक विद्यालय जागटा है। यह विद्यालय गांव के बिल्कुल बीच में स्थित है। जागटा गांव ब्लॉक मुख्यालय मोरी से लगभग 60 किमी की दूरी पर स्थित है। आराकोट–चिंवा मार्ग पर चिंवा से 2 किलोमीटर पहले बसा हैं जागटा। गांव जाने के लिए सड़क से 400 मीटर पैदल चलना होता है। गांव तक वाहन पहुंचाने के लिए एक पुल बनाने का काम चल रहा है। गांव के उत्तर में 2 किलोमीटर की दूरी पर चिंवा गांव बसा हैं पश्चिम में विशाल पर्वत, पूर्व में निरंतर बहती आन्द्री और डेडर का संगम और दक्षिण में बसा हैं गांव बरनाली। इस गांव में 68 परिवार रहते हैं। इस गांव की जनसंख्या 336 है। जिसमें 175 पुरुष और 161महिलाएं हैं। यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशु पालन हैं। गांव के कुछ लोग सरकारी विभागों में भी कार्यरत हैं। गांव में शिक्षा का एक मात्र केन्द्र राजकीय प्राथमिक विद्यालय जागटा है। इससे आगे की शिक्षा के लिए बच्चों को चिंवा या टिकोची जाना पड़ता है। गांव के लोगों ने ही विद्यालय भवन निर्माण के लिए जमीन दान दी थी। सन 1978 में इस विद्यालय की स्थापना हुई थी तथा भवन निर्माण का कार्य 1982 में सम्पन्न हुआ।

प्राथमिक विद्यालय जागटा के भवन में कुल दो कमरे हैं। साथ ही एक स्टाफ–कक्ष है। बच्चों के खेलने के लिए एक छोटा सा मैदान है। विद्यालय के चारों ओर चारदीवारी है, जो विद्यालय की सुन्दरता में अपनी अहम भूमिका निभाता है।

शिक्षकों के आवास गांव में ही होने से समुदाय के साथ आपसी विश्वास बढ़ता है और इसका असर विद्यालय के वातावरण तथा बच्चों के शिक्षण पर भी पड़ता है।

विद्यालय में एक व्यवस्थित रसोईघर तथा लड़के और लडकियों के लिए अलग–अलग शौचालय की व्यवस्था है। पानी के लिए नल लगाए गए हैं, जिन्हें पास के जल–स्रोत से जोड़ा गया है। विद्यालय परिसर में ही एक अलग कक्ष में आंगनबाड़ी की कक्षाएं चलती हैं। आंगनबाड़ी में 21 बच्चें नामांकित हैं। विद्यालय में कुल 19 बच्चे नामांकित हैं। इस विद्यालय में अभी दो शिक्षक और एक भोजन माता कार्यरत हैं। श्री मदनपाल सिंह की 2004 में नियुक्ति हुई थी। तब से वह इस विद्यालय में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। सन 2005 में इनके साथी श्री भरत सिंह की पदोन्नति होने के बाद से पिछले कुछ महीने तक मदनपाल जी यहां अकेले ही सारी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते रहे हैं। सितम्बर 2017 में श्रीमती हंसमाला की नियुक्ति सहायक अध्यापक के पद पर इस विद्यालय में हुई है। विद्यालय में एक भोजन माता कार्यरत है जिनका नाम श्रीमती कमला देवी है। भोजन माता बहुत ही प्रेमपूर्वक बच्चों को भोजन परोसती हैं। इस काम में विद्यालय के बड़े बच्चे भोजन माता की मदद करते हैं। जैसे दरी लगाना, पानी लाना, प्लेट बांटना आदि। उसके बाद ही सभी बच्चे एक साथ पंक्ति में भोजन मंत्र के उपरांत भोजन ग्रहण करते हैं। जल शोधन यंत्रों की सफाई तथा संचालन की जिम्मेदारी भी भोजन माता की रहती है। दिन वार विद्यालय की दिवार पर अंकित साप्ताहिक भोजन मेनु के अनुसार नियमित रूप से मध्याह्न भोजन बनाया जाता है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय जागटा के परिसर में प्रवेश करते ही आपको लगेगा कि यहां कुछ खास बात है। विद्यालय की छोटी सी व्यवस्थित इमारत, यहां की सफाई, बैठने के लिए बेंच और छोटा सा खेल का मैदान देख कर लग जायेगा कि यहां बच्चे, शिक्षक और समुदाय के द्वारा किनती मेहनत हुई हैं। किसी विद्यालय की दिनचर्या और शैक्षणिक गतिविधियों का अंदाजा प्रभात समय में आयोजित होने वाली प्रार्थना सभा से काफी हद तक लगाया जा सकता है। सफाई के काम को विभिन्न चरणों में बांटा जाता है, जैसे मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक। समय–समय पर भोजन माता के द्वारा भी सफाई में सहयोग किया जाता है।

प्रार्थना सभा में वंदना, समूहगान, प्रतिज्ञा और राष्ट्रगान के साथ–साथ आज का विचार, समाचार, सामान्य ज्ञान, लघुकथा और कहानियां सुनना–सुनाना, कविताएं बोलना आदि सभी गतिविधियां प्रतिदिन बच्चों द्वारा पूर्ण उत्साह के साथ की जाती हैं। प्रार्थना सभा के दौरान ही दैनिक सफाई निरीक्षण एवं अगले दिन की दिनचर्या के लिए छात्र–छात्राओं को जिम्मेदारी दी जाती है। चयन प्रक्रिया के समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि बारी–बारी से सभी बच्चों को अवसर मिलें। छुट्टी के समय होने वाली सभा में अध्यापक बच्चों को गृहकार्य करने और साथ ही घर में पढ़ने और अच्छे से रहने के विषय में बच्चों से बातचीत करते हैं। साथ ही साथ व्यायाम, पहाड़े और आज किए गए कामों का अभ्यास छुट्टी के समय में करवाया जाता है।

यह विद्यालय दूरस्थ विकासखण्ड के दूरस्थ विद्यालयों में से

एक है। अन्य विद्यालयों की तरह इस विद्यालय में भी सीमित भौतिक और मानव संसाधन उपलब्ध कराए गये हैं। किन्तु इस विद्यालय की अपनी कुछ विशेषताएं और उपलब्धियां हैं जिनका मुख्य कारण हैं श्री मदनपाल सिंह की मेहनत। इन्होंने विद्यालय का शैक्षिक वातावरण के बहुत प्रभावशाली बनाया है और इसमें समुदाय ने इनका भरपूर सहयोग दिया है। समुदाय से सहयोग के बारे में यहां के शिक्षक कहते हैं। 'अपने व्यस्त जीवन में से अपने बच्चों के लिए समय व ध्यान दे पाना बहुत बड़ी बात है, ज्यादातर अभिभावक इस बात का ख्याल रखते हैं। समुदाय के अधिकांश लोग एस.एम.सी बैठकों में नियमित रूप से प्रतिभाग करते हैं। इन बैठकों में विद्यालय के रख–रखाव के साथ ही साथ बच्चों के सीखने के स्तर, बच्चों के नामांकन तथा उनकी उपस्थिति–अनुपस्थिति के सम्बन्ध में भी विस्तार से चर्चा की जाती है।' समुदाय के द्वारा समय–समय पर शिक्षकों को विभिन्न प्रकार जैसे– शादी–विवाह जैसे तमाम आयोजनों में आमंत्रित किया जाता है तथा शिक्षक भी एस.एम.सी. के सदस्यों को राष्ट्रीय पर्व और अन्य खास मौकों पर स्कूल में आमंत्रित करते हैं। जिससे समुदाय तथा विद्यालय के शिक्षकों के रिश्तों में प्रगाढ़ता आती है। यहां राष्ट्रीय पर्वों को भी उमंग व उत्साह के साथ मनाया जाता है। जिनमें विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के कार्यक्रमों में सभी बच्चों को प्रतिभाग करने के समान अवसर दिए जाते हैं। यहां के शिक्षक मानतें हैं कि शिक्षकों के गांव में ही आवास होने से भी प्रभाव पड़ता है। स्कूल में आना–जाना समय पर होता है। स्कूल समय के अतिरिक्त भी गांव में लोगों से बातचीत होती रहती है। इससे आपसी विश्वास बढ़ता है और उसका असर विद्यालय के वातावरण व बच्चों के शिक्षण में भी दिखता है।

विद्यालय में सामुदायिक सहयोग का जीता–जागता उदाहरण, विद्यालय में बने शौचालय की गुणवत्ता,पर्याप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था,समय–समय पर बोर्ड, चाक एवं कॉपी की व्यवस्था और बच्चों के बैठने के लिए बेंच की व्यवस्था आदि है। प्रत्येक वर्ष विद्यालय के विकास के लिए विभाग की ओर से कुछ पैसे आते हैं। विद्यालय प्रबन्धन समिति के द्वारा इन पैसों का सही उपयोग किया जाता है। इतना ही नहीं, जरूरत पड़ने पर गांव के लोग भी मदद करते हैं तथा जो लोग गांव से बाहर रहते हैं या जिनके बच्चे यहां नहीं भी पढ़ते हैं, वह भी इस विद्यालय को सहयोग करते हैं। एस.एम.सी. अध्यक्ष श्री राजकुमार के शब्दों में "मुझसे पहले भी एस.एम.सी. के अध्यक्ष और सदस्यों ने शौचालय निर्माण के समय इसकी गुणवत्ता के लिए अतिरिक्त धनराशि लगायी थी। जिसकी वजह से आज भी शौचालय की गुणवत्ता और पर्याप्त पानी की व्यवस्था बरकरार है। वर्तमान में एस.एम.सी के एक सदस्य जयवीर सिंह चौहान जी ने गांधी जयंती के अवसर पर विद्यालय को पर्याप्त मात्रा में फर्नीचर भेंट किये हैं। जिसकी गुणवत्ता अच्छी है। जिससे बच्चों को अब कक्षा–कक्ष में बैठने में काफी सुविधा होती है।" एक समय जब एस.एम.सी की धनराशि ग्राम प्रधान के खाते में आई थी, तब जयवीर सिंह चौहान जी ने एस.एम.सी के अन्य सदस्यों से बात कर, विद्यालय के लिए वाइट बोर्ड उपलब्ध कराया वे समय–समय पर स्कूल में आते रहते हैं और सामान्य ज्ञान क्विज, निबंध, भाषण आदि प्रतियोगिताएं भी करवाते हैं। इतना ही नहीं परीक्षाफल के समय भी विद्यालय में आकर बच्चों को पुरुस्कृत करतें हैं। शिक्षकों के बारे में भी अभिभावकों की राय सकारात्मक हैं। वे शिक्षकों के कार्य और व्यवहार से संतुष्ट हैं। अभिभावकों का कहना हैं कि गुरूजी के गांव में रहने से हमें यह पता रहता है कि स्कूल में कब, क्या हो रहा है या होने वाला है। शिक्षक विद्यालय के हर काम को समुदाय के साथ साझा करते हैं। हर काम को पूरी पारदर्शिता के साथ मिलकर किया जाता हैं। अभिभावकों को शिक्षक पर पूर्ण विश्वास है और वह मानते हैं कि शिक्षक अपनी ओर से पूरी कोशिश करते हैं कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाए। शिक्षकों और समुदाय के बीच के भावनात्मक रिश्तों का सकारत्मक प्रभाव स्वाभाविक रूप से विद्यालय व बच्चों के जीवन और व्यवहार पर पडता है। यही कारण है कि यहां के बच्चों का अपने अध्यापक के साथ व्यवहार दोस्ताना लगता है। यहां बच्चों का एक–दूसरे से व्यवहार, बड़े बच्चों द्वारा स्कूल की हर शैक्षणिक गतिविधियों से लेकर खेलकूद में छोटे बच्चों का ख्याल रखना, विद्यालय

मदनपाल

हंसमाला

को साफ और स्वच्छ बनाये रखने में अपने शिक्षक और भोजन माता की मदद करना और बड़े बच्चों का गुरूजी द्वारा दिए गए कार्य को ध्यानपूर्वक करना और साथ ही गुरूजी के व्यस्त रहने पर छोटे बच्चों की मदद करना आपको अपनी ओर आकर्षित करता है।

यहां के बच्चे समय–समय पर संकुल, ब्लाक और जिला स्तर पर खेलों में प्रतिभाग करते रहते हैं। इन प्रतियोगिताओं में इनके परिणाम भी संतोषजनक रहते हैं। जैसे पिछले वर्ष संकुल आराकोट में मोहन कुमार (कक्षा 5) ने सामान्य ज्ञान में सफलता हासिल की थी। इस वर्ष एक छात्रा का चयन 200 मीटर दौड़ में जिला स्तर के लिए हुआ है। हमारी मुलाकात इस विद्यालय के ही छात्र रहे रंजित कुमार से हुई जो वर्तमान समय में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय चिवां में अध्ययनरत है। रंजित से बातचीत करने से यह मालूम हुआ कि वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से बेझिझक रखता है। इसका कारण यह है कि प्राथमिक विद्यालय जागटा में बच्चों को अपनी बात रखने की पूर्ण आजादी दी जाती है और साथ ही साथ उनके बातों का सम्मान भी किया जाता है, जिसके कारण प्रत्येक बच्चा अपनी बातों को बेहिचक समूह में रखता है। बच्चों का निःसंकोच मन से अपने अध्यापक से बात करना, अपनी समस्या सहजता से रखना, पूछे गए प्रश्नों का विश्वास के साथ उत्तर देना, राष्ट्रीय पाठयचर्या की उन बातों का समर्थन करती है, जिसमें बच्चों के लिए भयमुक्त शैक्षिक वातावरण तैयार करने की बात की गयी है।

विद्यालय की सबसे खास बात यहां सीखने–सिखाने का मैत्रीपूर्ण वातावरण है। गुरूजी हर समय बच्चों से घिरे रहते हैं और बच्चे भी बेफिक्र होकर रहते हैं। सीखने के लिए इससे बेहतर वातावरण नहीं हो सकता, जहां बच्चे बेफिक्र होकर नन्हीं उंगली को नाक में घुसाएं तथा सोचते हुए हाथों से बालों को तंग करते हों। विद्यालय के शिक्षक बच्चों से बहुत प्रेम से पेश आते हैं एवं विद्यालय को एक ऐसा स्थान बनाने में मदद करते हैं जो बच्चों के विचारों एवं कार्यों को महत्व देने में सार्थक हों। कक्षा–शिक्षण का जिक्र करें तो सुबह की प्रार्थनासभा के साथ ही सीखने–सिखाने का दौर शुरू हो जाता है। एकल शिक्षक होने के कारण सीखने–सिखाने के मामलों में कक्षा (ग्रेड) का कोई बंधन नहीं है। कक्षा 1 और 2 के बच्चें एक साथ एक कक्ष में बैठते हैं तो दूसरे कक्ष में कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चें एक साथ बैठते हैं। शिक्षक बारी–बारी से दोनों कक्षाओं के बच्चों को एक साथ पढ़ाते रहते हैं। आजकल जहां कई विद्यालयों में यह सुनने को मिलता है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखने एवं पढ़ने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है लेकिन जब इस विद्यालय का अवलोकन करेंगे तो आपको इस बात का आभास हो जाएगा कि यह विद्यालय इस धारणा को तोड़ता हुआ नजर आता है। इस विद्यालय के कक्षा 3, 4, और 5 के ज्यादातर बच्चों को हिंदी पढ़ने और लिखने में कोई परेशानी नहीं होती है। छोटे बच्चों को भाषा सिखाने के लिए स्थानीय संदर्भो, जैसे मेलों, त्योहारों आदि पर बातचीत, कहानी, लेखन आदि का उपयोग किया जाता है। बड़े बच्चों के लिए छपी हुयी सामग्री, जैसे 'चकमक', कहानियों की पुस्तकें व पाठय पुस्तकें आदि उपलब्ध हैं। बच्चें कुछ लिखकर टांगने के लिए दीवार से लगी रस्सी का इस्तेमाल भी करते हैं। बच्चे हर विषय में अच्छी समझ रखते हैं। चाहे अंग्रेजी के शब्द हों या फिर गणित की संख्याएं या कोई और गणितीय अवधारणा। विद्यालय में अंग्रेजी विषय के पढ़ने और लिखने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अभी हाल ही में अंग्रेजी विषय से सम्बंधित एक चार्ट विद्यालय में लगाया गया है, जिसमें अंग्रेजी के लगभग 75 वाक्य और उनका हिंदी में अनुवाद लिखे हैं जिसको बच्चे पढ़ने का प्रयत्न करते हैं। अंग्रेजी लेखन का अभ्यास cursive writing में बच्चों को करवाया जाता है। बच्चों में जोड़ एवं घटाव की अवधारणा भी स्पष्ट है। कक्षा 3 और 4 को जोड़ एवं घटाव सिखाने के लिए आसान तरीकों तथा स्थानीय वस्तुओं का उदाहरण दिया जाता हैं। कक्षा 5 के कुछ बच्चे भिन्न जैसी जटिल

संबोध के प्रश्नों का आसानी से जवाब देते हुए नजर आते हैं। अध्यापक से पूछने पर पता चला कि इसका मुख्य कारण यह है कि यहां विद्यालय में गुरूजी बच्चों से ही मिट्टी की गोलियां बनवाते हैं। बच्चे मिट्टी की गोलियां बनाते और उनसे खेलते–खेलते गिनती बोलना और गिनना सीख जाते हैं। अब मिट्टी की गोलियों की संख्या करीबन 1000 हो गई हैं। शिक्षक इन गोलियों की मदद से बच्चों को जोड़ एवं घटाव की अवधारणा भी स्पष्ट कराते हैं। यहां बच्चे आपको मिट्टी के वर्तन, फल, सब्जियां और गणितीय आकृतियों को भी बनाते हुए नजर आएंगे। विद्यालय में और भी कई शिक्षण अधिगम समग्री का निर्माण या जुगाड़ किया गया हैं। विद्यालय की दीवारों पर गिनती, पहाड़े, हिंदी एवं अंग्रेजी की वर्णमाला, ज्यामितीय आकृतियों, मात्राओं के चार्ट की पेंटिंग करवायी गयी हैं। कहानियों के चार्ट, parts of body, राष्ट्रीय एवं राज्य प्रतीक, भारत में विभिन्न सम्पदाओं एवं पर्यटन स्थलों के मानचित्र तैयार किये गए हैं। बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार का संग्रह करके एक हरवेरियम चार्ट भी तैयार किया गया है। गणितीय अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए 'संपर्क गणित किट' का इस्तेमाल बखूबी किया जाता हैं। यह किट आसानी से बच्चों की पहुंच में है, जिससे बच्चें स्वयं भी सामग्री को समय–समय पर निकाल कर खेल–खेल में कुछ न कुछ सीखते रहतें है।

जब मदनपाल सिंह जी से पूछा गया कि इस विद्यालय में काफी समय तक अकेले रहे हैं तो एक साथ सारे बच्चों को कैसे संभालते हैं तथा सभी विषयों को एक साथ कैसे पढ़ा पाते थे? उन्होंने कहा कि जब से मैडम आयी हैं, तब से काफी सुविधा हुई है। अब बच्चों को हम ज्यादा समय दे पाते हैं। पहले जब मैं अकेला था, सारे बच्चों को अकेले संभालने में मुझे कठिनाई तो होती ही थी लेकिन इसके लिए मैं हर रोज पहले से ही कुछ योजना बना लेता था। पहले कक्षा 1 और 2 के बच्चों को ब्लैकबोर्ड पर कुछ कार्य करने को दे देता था। जिससे ये बच्चे उस कार्य को करने में व्यस्त हो जाते थे। तत्पश्चात मैं कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के गृहकार्य को देख लेता था। आज भी बच्चों को रोजाना गृहकार्य दिया जाता हैं। गुरुजी का कहना हैं कि यूं तो हर बच्चें पर ध्यान देना काफी कठिन हुआ करता था, मगर मेरा प्रयास रहता है कि जो बच्चा अभी लिखना–पढ़ना नहीं सीख पाया, उसे कुछ अतिरिक्त समय दिया जाय, जिससे वो बच्चा भी विद्यालय के अन्य बच्चों के स्तर तक आ सके। ताकि अध्यापन कार्य में कुछ आसानी हो जाए। अब मैडम भी हैं मेरे साथ तो इस काम को और गति मिलेगी और प्रत्येक बच्चे को ध्यान से देखना आसान होता लग रहा है।

इसी प्रकार जब विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य जयवीर से बातचीत हुई तो उनका कहना था कि मैं खुद को इस विद्यालय का एक हिस्सा मानता हूं। मैंने इसी विद्यालय से कक्षा 2 पास किया था। फिर मै आगे की पढ़ाई के लिए गांव से बाहर चला गया। जब मैं गांव में वापस आया तो मुझे पता चला कि मेरे मित्र और सहपाठी मदनपाल जी, जोकि मेरे रिश्तेदार भी हैं, इस स्कूल में शिक्षक हैं। वह अपने स्तर से अच्छे प्रयास कर रहे हैं। मुझे लगा कि इस विद्यालय में और बेहतर सुविधा के लिए मुझे भी प्रयास करना चाहिए और यह मेरी जिम्मेदारी भी है। विद्यालय को एक विद्यालय होने के लिए कुछ मूलभूत संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो एक विद्यालय की अवधारणा को पूर्ण करते हैं। जैसे– भवन, बैठने की व्यवस्था, खेलने के मैदान, चारदीवारी, पुस्तकालय आदि। ये कुछ बुनयादी संसाधन हैं जो एक विद्यालय की अवधारणा को अस्तित्व में लाते हैं। मोरी जैसे भोगौलिक क्षेत्र में जहां सर्दियों के मौसम में तापमान 6 डिग्री सेल्सियस से भी कम पहुंच जाता है, ऐसी परिस्थितियों में बच्चों का जमीन पर बैठना एक कष्टदायक काम है। ऐसी सूरत में कक्षा–शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। इसके सम्बन्ध में मेरा विचार है कि एक विद्यालय में भवन के अतिरिक्त कक्षा में बैठने की बुनयादी व्यवस्था पूरी होनी चाहिए।

इस विद्यालय में सकारात्मक अहसास होता है और मन में विश्वास जागता है कि मेहनत और लगन से ही सफलता मिलती है। जिसका उदाहरण इस विद्यालय को देखने पर मिल जाता है। इस विद्यालय के शिक्षक से मिलकर लगा कि नए साथी के आने के बाद अब उनकी उम्मीदें विद्यालय के लिए और बढ़ गयी हैं। समुदाय के साथ प्रेम, अपनत्व की भावना बनाना और विद्यालय की बेहतरी के लिए इसे बनाए रखना, शिक्षक और समुदाय दोनों ही तरफ से निरंतर प्रयास करते रहना, निःसंदेह काबिल–ए–तारीफ हैं और यही स्कूल की सबसे बड़ी मजबूती भी है।

(सहयोग व फोटो : मनोज पन्त)

साझी समझ और साझे प्रयास

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड, विकासखण्ड डुण्डा

– मनोरमा

विद्यालय के प्रति समुदाय का अपनापन और शिक्षकों का पूर्ण समर्पण मिलकर विद्यालय की हर चुनौती को आसान बना देते हैं।

किसी भी सामाजिक संस्थान को बनाने में समुदाय, उसमें काम करने वाले व्यक्ति और उसके लाभार्थियों का विशेष योगदान होता है। इन तीनों स्तम्भों की ही बदौलत कोई संस्थान प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। विद्यालय को भी एक सामाजिक संगठन के रूप में देखा जाता है जो कि तीन स्तम्भों, विद्यार्थी, अध्यापक एवं अभिभावक पर टिका होता है। इन तीनों ही स्तंभों का विद्यालय की प्रगति में बेहद महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसीलिए राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 और RTE ACT 2009 द्वारा SMC को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। हम दिन प्रतिदिन विद्यालयों से जुड़ी कई खबरें अखबारों में पढ़ते हैं। कहीं अभिभावकों के सहयोग से कुछ नया हो रहा होता है, तो कहीं अध्यापकों के अच्छे प्रयासों के बल पर, और कई बार अधिकांश विद्यालय अपने विद्यार्थियों के कारण भी सुर्खियों में बने रहते हैं। उत्तरकाशी जिले के डुंडा विकासखण्ड में संकुल भटवाड़ी के अंतर्गत आने वाला उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड ने इन तीनों स्तंभों की मजबूती के चलते अपने नाम को पूरे जनपद में ऊंचा किया है। हम हमेशा यह कहते हैं कि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती। लेकिन विद्यालय के सन्दर्भ में जब तक तीनों स्तंभों का समन्वय नहीं होगा, तब तक उसकी परिकल्पना सही मायने में साकार नहीं हो सकती है। यहां के विद्यार्थी, अध्यापक और अभिभावक तीनों ही स्तम्भ बराबर का साथ निभाकर, इस विद्यालय को निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर किये हुए हैं। जहां एक ओर अभिभावक इस विद्यालय को उत्तरकाशी बाजार के नामी निजी स्कूल के परस्पर मानते हैं वहीं दूसरी ओर अध्यापक भी निरंतर अपने परिश्रम के बल पर अभिभावकों के विश्वास को और अधिक मजबूती प्रदान कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप यहां के विद्यार्थी न केवल जनपदीय अपितु राज्य स्तरीय कार्यक्रमों में भी अच्छा प्रदर्शन कर दोनों के विश्वासों को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

यह विद्यालय अपने शिक्षकों के कठिन परिश्रम और कर्मठता के लिए पूरे विकासखंड में माना जाता है। इनके प्रयासों से ही पूरे विकासखण्ड में यह सबसे अधिक नामांकन (69 विद्यार्थी) वाला विद्यालय बना हुआ है। इस विद्यालय में कार्यरत तीनों शिक्षक इसी अकादमिक सत्र से विद्यालय में नियुक्त हुए हैं। इससे पहले यह विद्यालय व्यवस्था पर कार्यरत दो शिक्षकों के सहारे ही चल रहा था। इन तीन शिक्षकों में से अरविन्द थपलियाल जी पहले भी इस विद्यालय में व्यवस्था पर अपनी सेवा दे चुके हैं। इस वर्ष स्थायी रूप से वे इस विद्यालय में नियुक्त हुए हैं। इन तीनों शिक्षकों के आने से जो बदलाव की लहर विद्यालय में दौड़ी है वह सभी के लिए प्रेरणादायी है। डुंडा विकासखण्ड के शिक्षा विभाग के अधिकारी तो इस विद्यालय की प्रशंसा करते ही हैं। ब्लॉक के अन्य शिक्षकगण भी इस बात से इत्तेफाक रखते हैं कि यह विद्यालय अपने शिक्षकों की मेहनत और बच्चों की दक्षता स्तर के कारण यहां के श्रेष्ठ विद्यालयों की श्रेणी में आ गया है।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड ब्लॉक मुख्यालय डुंडा से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर है। यह विद्यालय तीन गांव संताण, मांझे और बमण गांव के बीच राज्यमार्ग से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इन तीनों गांव की कुल जनसंख्या लगभग 1500 है। गांव के लोग अपनी आजीविका व जीवन निर्वहन हेतु पूरी तरह खेती व मजदूरी पर ही निर्भर हैं। शिक्षा के पहलू से गांव के विषय में एक विचित्र बात यह है कि गांव में शुरुआत से प्राथमिक विद्यालय तो था परन्तु उच्च व माध्यमिक विद्यालय नहीं था। इस गांव के बच्चे लगभग 12 किलोमीटर पैदल चलकर पिपली इंटर कॉलेज में आगे की शिक्षा– दीक्षा पूरी करते थे। माध्यमिक विद्यालय गांव से बारह किलोमीटर दूर होने के कारण इस गांव के बच्चे उच्च शिक्षा की दौड़ में पिछड़ जाते थे। उसमें खासकर बालिकाएं तो अपनी आगे की शिक्षा पूरी ही नहीं कर पाती थी। 2002 में डी.पी.ई.पी के तहत गांव में उच्च प्राथमिक विद्यालय खुला।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फोल्ड, अपने नाम के भीतर ही अपना अर्थ छिपाए हुए है। तीन गांव के बीच और चारों ओर से घिरी पहाड़ियों के बीच मानो 'फोल्ड' करके एक योजना के तहत बसाया गया हो। इन पहाड़ी वादियों से गुजरते हुए विद्यालय के प्रांगण में पहुंचते ही मन स्वतः आनंदित हो उठता है। विद्यालय के प्रांगण में हंसते–खेलते बालक बालिकाओं का उत्साह मन में उमंग भर देता है। जैसे

एकांत में कहीं पक्षी चहचहा रहे हों। दिन की शुरुआत के साथ विद्यालय में प्रातःकालीन सभा प्रारम्भ होती है जिसमें विद्यालय के बच्चे पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने हाथ में माइक लिए प्रार्थना में होने वाली गतिविधियों को संचालित करते हैं। शिक्षकों द्वारा विद्यालय के बच्चों को तीन समूहों गंगा, यमुना, बद्री में विभाजित किया गया है और प्रत्येक समूह सप्ताहवार प्रार्थना सभा की सभी गतिविधियों को संचालित करता है। इस विद्यालय में अन्य विद्यालयों की भांति गतिविधियां तो सामान्य ही होती हैं परन्तु बच्चे इसे जिस उत्कृष्टता और लयात्मकता के साथ करते हैं वह अपने–आप ही बहुत मजेदार अदभुत प्रतीत होती है। ईश–वन्दना, समूह–गान और प्रतिज्ञा एक दिन अंग्रेजी में और एक दिन हिंदी में होती है। साथ ही बच्चे राष्ट्रीय–गान को सही सुर ताल, लय और शुद्ध उच्चारण के साथ बोल सकें, इसके लिए संगीत का सहारा लिया जाता है। इसके बाद प्रत्येक बच्चा अंग्रेजी में अपना नाम और कक्षा बताकर सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछता है। बच्चों के अंग्रेजी में बोलने वाले प्रयास के पीछे आशय यह है कि विद्यालय में अंग्रेजी का माहौल बने और बच्चे सहजता के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने लगे। बच्चे जब अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछते हैं तो यह देख कर सुखद आश्चर्य होता है कि विभिन्न विषयों के बहुरंगी प्रश्नों की बौछार से बच्चे बेहद सहजता से खेल रहे हैं। सामान्य ज्ञान के जो प्रश्न पूछे जाते है वह बच्चे स्वयं खोजकर लाते हैं ऐसा नहीं है कि शिक्षकों द्वारा दस–बारह प्रश्न लिखवा दिए गए हों और बच्चे रोजाना उन्हीं प्रश्नों को दोहराते हों। प्रत्येक दिन नया प्रश्न होता है और पूछे गये प्रश्नों का स्तर बच्चों के पाठयक्रम से ही नहीं बल्कि देश, दुनिया, विज्ञान, गणित, भाषा, खेल– जगत से सम्बंधित भी होते हैं।

विद्यालय में प्रार्थना सभा के बाद शिक्षण कार्य शुरू होता है। शिक्षकों ने जिस समझदारी से आपस में विषय कक्षा के अनुसार बांट रखे हैं, वह भी अपने–आप में एक मिसाल ही है। प्रधानाध्यापक श्री महिपाल सिंह मटूड़ा जी को विद्यालय के सभी प्रबन्धकीय प्रशासनिक कार्यों सहित कक्षा छः, सात और आठ के बच्चों को अंग्रेजी व सामान्य विज्ञान विषय पढ़ाते हैं। दूसरी शिक्षिका श्रीमती उर्मिला सेमल्टी के हिस्से में हिंदी व संस्कृत विषय है। तीसरे शिक्षक अरविन्द थपलियाल जी बच्चों को विज्ञान व गणित विषय सिखाते हैं। साथ ही जो बच्चे अपेक्षित शैक्षिक स्तर से नीचे हैं शिक्षक उन बच्चों पर विशेष ध्यान देते हैं। शिक्षकों का मानना है कि बच्चों में विषय की अवधारणाओं को समझने और सीखने की नींव शुरुआती दौर में ही पड़ती है और हम यह नहीं चाहते कि हमारी व्यस्तताओं का असर बच्चों की शिक्षा पर पड़े। आखिर बुनियाद मजबूत होगी तभी तो एक मजबूत इमारत बनेगी। शिक्षकों के इस एक छोटे से प्रतीत होने वाले आपसी सहमति के निर्णय में गहरी बात छिपी है।

महीपाल सिंह मटूड़ा

उर्मिल सेमल्टी

अरविन्द थपलियाल

कक्षा छह, सात और आठ के बच्चों को मिलाकर तीन समूह बनाए गये हैं। पहले समूह में वैसे बच्चे हैं जिन्हें गणित की आधारभूत संक्रियाओं जैसे– गिनती, जोड़, गुणा तथा हिंदी में मात्राओं को पहचानने और वाक्य संरचना व धारा प्रवाह से पढ़ने में दिक्कत आती है। ऐसे बच्चों की संख्या विद्यालय में कम ही है। दूसरे समूह में उन बच्चों के साथ कार्य किया जाता है जो हिंदी व सामान्य ज्ञान में लिखे हुए और पद्य को पढ़ तो लेते हैं लेकिन उस पर अपनी समझ नहीं बना पाते है और तीसरा समूह उन बच्चों का है जो कक्षावार विषय की दक्षताओं को समझते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इन समूहों के निर्माण के क्रम में कक्षा की कोई बाध्यता नहीं दिखती है। शिक्षक सभी बच्चों को एक साथ लेकर आगे चलते हैं। उर्मिला जी द्वारा भाषा विषय पढ़ाते समय कक्षा में विशेष ध्यान दिया जाता है। उनका पाठ पढ़ाने का अपना ही तरीका है। वह किसी भी विषयवस्तु या पाठ की शुरुआत सामान्य बातचीत से ही करती है। इसके लिए वह कक्षा में प्रयोग हो रहे उदाहरण भी बच्चों के परिवेश से ही तलाश करती हैं। जिससे कक्षा में सीखने का जीवंत वातावरण तो बनता ही है, बच्चे भी बहुत सहज महसूस करते हैं। उनका उद्देश्य केवल पाठयक्रम पूरा करना नहीं रहता बल्कि उनका ध्यान इस

पर अधिक रहता है कि बच्चे पढ़ाए जाने वाले पाठ को कितना अच्छे ढंग से समझ रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप उनकी कक्षा में शिक्षार्थी बिना किसी झिझक के खड़े होकर प्रश्न करते हैं। यह दृश्य शिक्षिका और बच्चों के मैत्रीपूर्ण संबंधों को तो अभिव्यक्त करता ही है साथ ही बच्चों की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में सीखने की जिज्ञासु प्रवृति को भी दर्शाता है।

विद्यालय में भाषा शिक्षण के साथ ही अन्य विषय गणित, विज्ञान, सामान्य ज्ञान और अंग्रेजी शिक्षण के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। मटूड़ा जी इस बात को स्वीकार करते हैं कि अंग्रेजी शिक्षण में उनका अपना कम ज्ञान बाधक बनता है लेकिन उन्होंने प्रयास करना नहीं छोड़ा है। उनके इस प्रयास का ही फल है कि बच्चे जितने सुंदर ढंग से हिन्दी में प्रातःकालीन सभा में गतिविधियों का वाचन करते हैं, उतने ही सहजता और आत्मविश्वास के साथ अंग्रेजी में भी करते हैं। वह बच्चों को अंग्रेजी सिखाने में बहुभाषिकता का प्रयोग करते हैं। वे स्वयं अंग्रेजी की कक्षा में ज्यादा से ज्यादा अंग्रेजी भाषा में ही बोलते हैं जिससे प्रभावित होकर बच्चे भी अपनी गलतियों पर संकोच किये बिना बेझिझक अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग करते हैं। उनका मानना है कि जब तक हम खुद इस प्रकार के प्रयास नहीं करेंगे, तब तक बच्चों को कैसे सीखने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं? उनका यह विश्वास और अथक प्रयास ही है कि विद्यालय में सभी कक्षा के बच्चे अपनी अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तके ठीक ढंग से पढ़ लेते हैं।

सभी बच्चों को गणित और विज्ञान की बुनियादी अवधारणाओं का स्पष्ट होना अति आवश्यक है तभी बच्चों का आधार मजबूत होगा और उसके उपरांत ही वे आगे आने वाली कक्षाओं के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल कर पाएंगे। अरविन्द जी उपरोक्त दृष्टिकोण का विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। वे स्वयं को विषय का महारथी तो नहीं मानते लेकिन प्रयास करते रहते हैं कि समय के साथ–साथ कुछ नया सीखते–सिखाते रहें। कुछ नया सीखने की उनकी ललक विद्यालय और बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। सीखने के इस क्रम में वह खुद को नहीं आ रही चीजों को साथियों व मित्रों से पूछने में हिचकते और शरमाते नहीं है। उन्होंने बताया कि उनके द्वारा गणित में अगर कोई अवधारणा या

प्रश्न बच्चों को समझने में दिक्कत आती है तो वह पुनः अपने द्वारा सिखाई गयी पद्धति के विषय में विश्लेषण करते हैं और उसमें सुधार करते हैं। वह बच्चों को सिखाते समय एक शिक्षक की तरह न सोचकर बच्चों की तरह ही सोचते हैं जिसकी झलक उनकी कक्षा में दिखाई देती है। वह बच्चों के बीच गोल घेरे में बैठकर ही शिक्षण कार्य करते हैं और पूरी तल्लीनता के साथ बच्चों को सिखाने में डूब जाते हैं। वह इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की क्षमता और तरीका अलग है इसीलिए वे अपनी कक्षा में एक ही प्रश्न को विभिन्न प्रकार से कराते हैं जब तक कि सभी बच्चों को समझ में नहीं आ जाए। इसी प्रकार विज्ञान विषय को पढ़ाते समय यह विशेष ध्यान रखते है कि बच्चों को जितना हो सके व्यवहारिक रूप से विज्ञान की अवधारणाओं से अवगत कराया जाए। वह विद्यालय परिवेश में उपलब्ध सहायक शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल करके बच्चों को विज्ञान विषय की जटिल अवधारणाओं को प्रयोग कराते हुए बच्चों को समझाते हैं जिन्हें बच्चे सरलता से समझ लेते हैं और वह खुद करने लगते हैं। इसी का परिणाम है कि उनके बच्चे गणित व विज्ञान की जटिल से जटिल संक्रियाओं को भी सरलता से कर लेते हैं। वह बताते हैं कि इस कामयाबी के पीछे उनके दो मुख्य सिद्धान्त हैं– पहला यह कि जब तक बच्चों को कोई भी अवधारणा या विषय ठीक ढंग से स्पष्ट ना हो जाये तब तक आगे न बढ़ा जाये और दूसरा यह कि बच्चों को अभ्यास के लिए अधिक से अधिक

अवसर दिये जाए।

बच्चों के सीखने–सिखाने, पढ़ने–पढ़ाने के क्रम में यह भी आवश्यक है कि समय–समय पर देखा जाय कि बच्चे कितना समझ व सीख पा रहे हैं। जब इस विषय पर विद्यालय के शिक्षकों से बातचीत हुई उन्होंने बताया कि छमाही और वार्षिक परीक्षाएं जो विभाग की ओर से निर्देशित हैं, वो तो निर्देशानुसार ही होती हैं लेकिन उसके अतिरिक्त हम कक्षा में विभिन्न प्रकार से बच्चों का मूल्यांकन करते रहते हैं और जब तक सबसे कमजोर बच्चे को भी पढ़ाया गया विषय समझ न आ जाए आगे नहीं बढ़ते हैं। कक्षाओं में मूल्यांकन पाठ पढ़ाने के साथ–साथ ही चलता रहता है। हिन्दी में पाठ पढ़ाने के बाद तो अंग्रेजी में प्रत्येक पैराग्राफ पढ़ाने के बाद ही यह सुनिश्चित करते चलते हैं कि सभी बच्चे ठीक से समझ रहे हैं या नहीं। इसी प्रकार गणित की अवधारणाओं पर कार्य के दौरान भी हम बच्चों को कितना समझा पाये, इसका आकलन करते रहते हैं। अन्य विषयों के साथ भी यही प्रक्रिया चलती है।

बच्चों का शैक्षणिक पक्ष मजबूत हो और सभी विषयों में अधिक–से–अधिक समझ विकसित हो इसके लिए बच्चों को पढ़ने–लिखने और अभ्यास के अधिक–से–अधिक अवसर देने होंगे। यहां के शिक्षक इस तथ्य से भली–भांति अवगत हैं। विद्यालय में पुस्तकालय की सहायक पुस्तिकाएँ पाठय–पुस्तकों को और समृद्ध करती हैं तथा बच्चों की सीख को स्थायी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसीलिए इन्होंने विद्यालय का पुस्तकालय बच्चों को ही सौंप रखा है। बच्चे अपनी रुचि अनुसार पुस्तक, स्वयं रजिस्टर में अपने नाम लिखकर ले जाते हैं। शिक्षक इस विषय में कोई अवरोध नहीं बनते हैं और ना ही उन्हें यह डर होता है कहीं बच्चे किताबें फाड़ न दें या किताब वापस न करें। उनका मानना है कि जो चीज बच्चों के लिए है उसे बच्चों के पास ही रहने दिया जाए, बजाय उसके कि तालों में रखा जाए। बच्चों को स्वयं जिम्मेदारी देने से उनके अंदर अनुशासन उत्पन्न होता है जिसे किसी अन्य तीसरे व्यक्ति को सिखाने की जरूरत नहीं होती है। वह गलत सही का एहसास स्वयं कर पातें हैं जिसके लिए जरूरी है कि हमें बच्चों पर विश्वास करना होगा।

शैक्षणिक पक्ष के विकास के साथ–साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास होना भी बहुत जरूरी है। विद्यालय के तीनों शिक्षक यह मत रखते हैं और कोशिश करते हैं कि बच्चों को खेल खेलने, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चित्रकला आदि गतिविधियों को करने का पूरा अवसर मिले। इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम यह प्रयास किया, ब्लॉक की उपखंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती हर्षा रावत से विद्यालय की धनराशि पर स्वीकृति ली और इस धनराशि से विद्यालय में बच्चों के लिए माइक और ड्रम खरीदे। इसके बाद सभी बच्चों को उसका प्रयोग करना सिखाया गया। इसका उद्देश्य था कि बच्चे बिना झिझक के आगे आकर अपनी बात कहना सीखें। साथ ही इसी वर्ष 15 अगस्त पर विद्यालय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें तीनों गांवों के लोगों को बुलाया गया और सर्व शिक्षा अभियान के जिला समन्वयक ओम बधानी जी ने भी विद्यालय पहुंचकर बच्चों का मनोबल बढ़ाया। इस कार्यक्रम के लिए बच्चों ने पढ़ाई के साथ–साथ लगभग एक माह तैयारी भी की। जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों ने बेहतरीन प्रस्तुति दी। जिससे गांव के लोग आश्चर्य चकित हुए कि बच्चे इतना अच्छा प्रदर्शन भी कर सकते हैं। इस पूरे भव्य आयोजन के लिए टेंट आदि की व्यवस्था विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों द्वारा ही की गयी। विद्यालय के तीनों शिक्षकों का हौसला इतना बुलंद और मजबूत है कि उन्होंने संकुल, ब्लॉक व जिले स्तर पर होने

वाले कार्यक्रमों के लिए बच्चों को तैयार किया और प्रतिभाग करवाया। इसके परिणाम स्वरूप राज्य स्तर के खेलों में कक्षा आठ के एक छात्र ने ऊंची कूद और दौड़ में दूसरा स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के सभी शिक्षकगण इस सफलता के लिए अपने समुदाय और अधिकारियों के सहयोग हेतु आभार प्रकट करते हैं कि जब उन्होंने हमारी मदद की है तो फिर हम अपने कर्तव्य पथ से क्यों हटें?

विद्यालय में शिक्षकों का बच्चों के प्रति अगाध स्नेह और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति इनकी सजगता ही है कि विद्यालय के तीनों शिक्षक विद्यालय समय पर पहुंचते हैं और बिना कारण अवकाश पर भी नहीं जाते है। सभी शिक्षकों की इस विषय में समान राय है कि यदि हममें से एक भी लंबे समय तक विद्यालय नहीं आया तो दूसरे पर कार्यभार बहुत बढ़ जाएगा और सबसे महत्वपूर्ण यह कि बच्चों की पढ़ाई पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा। हम जितना प्रयास करके विद्यालय को यहां तक लेकर आ पाए हैं अनावश्यक अवकाश या ज्यादा अवकाश लेने पर, वह सब व्यर्थ हो जाएगा।

विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों के आपसी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को देखकर यह सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां के शिक्षकों को बच्चों की और बच्चों को अपने शिक्षकों की आदत–सी है। विद्यालय के तीनों शिक्षक स्पष्ट रूप से इस बात को स्वीकार करते हैं कि बच्चों को प्यार और बातचीत करके जितना अच्छे से समझाया और सिखाया जा सकता है उतना भय और डंडे के जोर से नहीं। उससे बच्चों में केवल अशांति उत्पन्न होती है एवं उनका व्यवहार भी अशांत भी होने लगता है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के सीखने की गति पर पड़ता है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को सकारात्मक रूप से बात करके उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।

इस विद्यालय के शिक्षक केवल अपने विद्यालय व बच्चों के प्रति शैक्षणिक पक्ष के लिए ही नहीं बल्कि भौतिक पक्ष के लिए स्वयं को जिम्मेदार समझते हैं। जिसका सुंदर उदाहरण इस विद्यालय में देखने को मिल सकता है। विद्यालय में शौचालयों की दशा इतनी खराब थी कि उसका उपयोग न के बराबर ही था। जिससे विद्यालय में बालकों और बालिकाओं को शौच के लिए काफी दिक्कत होती थी। तब

शिक्षकों ने गांव और SMC के सदस्यों के साथ मिलकर प्रस्ताव बनाया और शिक्षा विभाग को यह प्रस्ताव दिया गया। इसके बाद एक माह के भीतर विद्यालय में बालक व बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय बनवाकर ही दम लिया। शिक्षक यह बात समुदाय को स्पष्ट तौर पर कहते हैं कि गांव में बना यह विद्यालय और इसकी संपत्ति गांव की है परन्तु इसमें पढ़ने वाले बच्चे हमारे हैं। शायद शिक्षकों की इस संवेदनशीलता ने ही गांव वालों के मन में इनके लिए अधिक आदर भर दिया है। अब समुदाय के लोग स्वयं विद्यालय से इतना ताल्लुक रखते हैं कि वह बिना किसी औपचारिकता के शिक्षकों, बच्चों और विद्यालय से जुडे मुद्दे पर बात करने स्वयं ही विद्यालय आते हैं। विद्यालय से जुड़ी किसी समस्या का मिलकर समाधान करने का प्रयास करते हैं। इसका एक उदाहरण यह भी देखा जा सकता है कि यहां सर्दियों के मौसम में धूप बहुत जल्दी चली जाती है और विद्यालय में बच्चों को बैठने के लिए फर्नीचर नहीं है। फर्श बहुत ठंडा हो जाता है और बच्चे इस कड़कड़ाती ठण्ड में भी दरी पर ठिठुरते रहते हैं। शिक्षकों ने बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर बनवाने का प्रस्ताव समुदाय के समक्ष रखा। जिसका परिणाम यह देखने को मिला कि समुदाय के लोगों और विद्यालय ने मिलकर बच्चों के लकड़ी के फर्नीचर बनवाने की ठान ली है।

विद्यालय के गांव के बीच में होने के कारण विद्यालय की

अपनी कई समस्याएं भी हैं चारों ओर से खुला होने के कारण पालतू जानवर विद्यालय के अंदर आ जाते हैं। इससे परिसर गंदा तो होता ही है, साथ ही पौधों व फूलों को भी नुकसान पहुंचाते हैं। शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालय की चारदीवारी को बनवाने के लिए गांव की पंचायत में और विभाग में भी प्रस्ताव बनाकर दिया गया है। इस पर उन्हें आश्वासन भी मिला है कि जल्द ही विद्यालय की दीवार बनयी जाएगी।

यह विद्यालय में कार्यरत तीनों शिक्षक की दृढ़ इच्छाशक्ति और इनकी मेहनत ही है जिसके कारण हर ओर इनका सम्मान होता है। चाहे वह विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य हों, गांव वासी हों, अधिकारी हों अथवा अन्य शिक्षक साथी ही क्यों ना हो। विद्यालय के एसएमसी अध्यक्ष भी इस बात को प्रतिपादित करते दिखाई देते हैं कि विद्यालय के तीनों शिक्षक बेहद मेहनती और कर्मठ हैं और आज उन्हीं की वजह से विद्यालय इतना अच्छा चल रहा है। ना केवल विद्यालय से आंतरिक रूप से जुड़े लोग बल्कि बाहर के लोगों की भी विद्यालय और इन शिक्षकों के बारे में ऐसी ही राय है।

विद्यालय में 69 बच्चों का नामांकन और तीन शिक्षक विभागीय कार्यों के अतिरिक्त शैक्षणिक कार्यों में इतना कुछ कैसे कर पा रहे हैं? जब इस तरह के प्रश्न जेहन में कुलबुलाते हैं तो यहां के शिक्षकों के मुख का तेज और आत्मविश्वास गिजुभाई भाई बधेका के दिवास्वप्न की याद दिलाता है, जो उनके विश्वास और जिद्द को सामने लायी कि शिक्षा में बदलाव संभव है। किन्तु उसके लिए अपनी मान्यताओं और विचारों को चुनौती देनी होगी, और पूरी निष्ठा के साथ स्वयं को समर्पित करना होगा। इस सन्दर्भ में अगर इस विद्यालय के समस्त वातावरण और शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों को देखें, तो मन में उठ रहे सभी प्रश्नों के उत्तर स्वयं मिलते हुए प्रतीत होते हैं।

(सहयोग व फोटो : प्रवीन उनियाल)

सौर मण्डल

आसमान में इतने तारे,
टिमटिम करते प्यारे-प्यारे।
उन सब में है एक बड़ा तारा,
है वो सूरज हमारा प्यारा।
उसके है कुल बच्चे आठ,
जिनको कहते ग्रह हम आठ।
इसमें बुद्ध है सबसे पास,
सूरज जी का सबसे खास।
दूसरा ग्रह है शुक्र हमारा,
धरती का है पड़ोसी प्यारा।
तीसरी अपनी धरती माता,
चौथा नम्बर मंगल का आता।
पांच नम्बर पर वृहस्पति खड़ा है,
आठ ग्रहों में सबसे बड़ा है।
शनि ग्रह है छठे नम्बर पर,
धुएं के छल्ले फैले उसपर
सात नम्बरी अरूण ग्रह है,
आठवां भाई वरूण ग्रह है।
सूरज देव का यह परिवार,
सौर मण्डल है इसका नाम।

– श्रीमती निर्मला वर्मा
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बिग्सी, नौगांव

फोटो : संजीव बिजल्वाण

जहां पोसा जाता है सहकार व प्रेम

राजकीय प्राथमिक विद्यालय छाड़ा, विकासखण्ड पुरोला

– इमरान खां एवं संजय रावत

साधारण से दिखने वाले लोग ही अक्सर असाधारण काम करते हैं। यही बात है कि लोग उन्हें दिल से चाहते हैं और जब भी जरूरत होती है वे उनके हाथ बटाने खुले दिल से चले आते हैं। उनका न कहीं बहुत जिक्र होता है न उनको अपने जिक्र की बहुत फिक्र होती है। वे सालों से अपने काम में लगे हैं। बहुत अच्छा होता है तो ज्यादा इतराते नहीं है पर जब नहीं हो पाता है तो उसकी फिक्र करते हैं। उनको शिकायत है तो खुद से कि हम और अच्छा नहीं कर पा रहे हैं, जबकि वे लगातार अच्छा ही कर रहे हैं। कुछ इस प्रकार की कहानी है राजकीय प्राथमिक विद्यालय छाड़ा की।

पुरोला विकासखंड में पांच संकुल हैं। उन्हीं संकुलों में से एक है 'खडक्यासेम' जिसमें एक गांव छाड़ा है। यह गांव पुरोला–मोरी मार्ग से लगभग 1.5 किलोमीटर तथा ब्लॉक मुख्यालय पुरोला से लगभग 2.5 किलोमीटर दूर है। यह गांव प्राकृतिक सौन्दर्य का धनी है जिसके चारों ओर हरी–भरी फसल लहलहाते हुए देखी जा सकती है। पर्वत, जंगल तथा इन पर्वतों पर कृषि योग्य सीढ़ीनुमा खेत मनमोहक लगते हैं। मुख्य सड़क से इस विद्यालय का भवन कुछ उचांई पर धुंधला सा दिखाई देता है। कच्ची सड़क गांव से होते हुए विद्यालय भवन को मुख्य मार्ग से जोड़ती है। कहीं–कहीं मार्ग संकरा भी हो चला है जिसके कारण

शिक्षण प्रक्रियाओं में शिक्षण अधिगम सामग्री का अधिक से अधिक निर्माण व इस्तेमाल करके बच्चे जटिल से जटिल अवधारणाएं भी सुगमता से समझ पाते हैं। साथ ही विद्यालय का वातावरण और अधिक समृद्ध तथा सौन्दर्ययुक्त बनने लगता है।

लोगों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस गांव में लगभग 40 परिवार निवास करते हैं, जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशु पालन है। 6 परिवारों के सदस्य सरकारी विभागों (जन–कल्याण, जल निगम, शिक्षा, लोक निर्माण विभाग) में भी कार्यरत हैं। इस गांव में सामान्य, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जाति के लोग निवास करते हैं।

विद्यालय भवन का निर्माण सन 1999 ई. में हुआ। इस के लिए भूमि श्री जयपाल सिंह राणा के द्वारा दान दी गई है। ये कोई राजनितिक व्यक्ति नहीं थे वरन बच्चों की शिक्षा को लेकर गंभीर थे। उनका इस बात में गहरा विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही जीवन और समाज को बेहतर बनाया जा सकता है। विद्यालय में दो शिक्षण–कक्ष, एक दफ्तर, एक रसोईघर तथा दिल बहलाने के लिए एक छोटा सा खेल का मैदान है जो शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाता है पर बच्चे इस छोटे से मैदान में भी ही पसीना बहाते हैं। इस विद्यालय में फूलवारी हुआ करती थी लेकिन कुछ माह पूर्व विद्यालय में चारदीवारी का निर्माण कार्य हुआ है, जिसके कारण कुछ पौधों को हटाना पड़ा। फिर से नए पौधे लगाए गये हैं लेकिन पौधों में अभी फूल नहीं आये हैं। क्या हुआ जो अभी पौधों से फूलों की खुशबू नहीं आती पर जब आप बच्चों से मिलेंगे तो इन कमियों को आप बच्चों के द्वारा पूरा होते हुए महसूस करेंगे। इन बच्चों की सादगी, भोलापन, खोजी चंचल निगाहें प्रत्येक क्षण आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। विद्यालय भवन साफ–सुथरा तथा व्यवस्थित है। विद्यालय में 41 बच्चों का नामाकंन है तथा दो शिक्षिकाएं श्रीमती कौशल्या बिजल्वाण और श्रीमती संगीता रावत कार्यरत हैं। इस विद्यालय में भोजनमाता सुनकेशी देवी हैं जो बच्चों को बड़े प्यार से कहती हैं, "क्या रे तुम लोग खीर खाने के लिए एक–एक चम्मच अपने घर से नहीं ला सकते, गर्म खीर में अपने हाथ जला रहे।" वे जैसे ही कक्षा में प्रवेश करती हैं वैसे ही पूरी कक्षा "गुड मॉर्निंग दीदी" की ध्वनियों से गूंज उठती हैं और दीदी भी पूरे आत्मविश्वास के साथ अंग्रेजी में बच्चों को कहती है 'सिट डाउन' बच्चों। इस क्रिया–कलाप से भोजनमाता और बच्चों के बीच के रिश्तों का भान भलीभांति हो जाता है। दीदी के सम्बन्ध में दोनों शिक्षिकाओं का मानना है कि भोजनमाता इस विद्यालय की तीसरी शिक्षिका हैं। वो स्वभाव में तो थोड़ी कड़क सी दिखती हैं पर बच्चों तथा हमसे उनके रिश्ते बहुत सहज हैं। जितनी वो कड़क हैं उतनी ही बच्चों तथा हमारा ध्यान रखती हैं। इस विद्यालय में प्रातःकालीन सभा को खास बनाने का प्रयास किया जाता है। प्रातःकालीन सभा के दौरान बच्चे कविता सुनाना, कहानी कहना, गांव से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को साझा करना, अंग्रेजी शब्दों की

स्पेलिंग बोलना तथा सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित अनेक जानकारियों का आपस में आदान–प्रदान करते हैं। ऐसा प्रतिदिन करने से एक–एक बच्चे को लगभग दर्जनों अंग्रेजी शब्दों के भी स्पेलिंग सहित अर्थ मालूम हैं और बच्चे देश–दुनिया की खबरों से भी अपडेट रहते हैं।

25 लड़कियां तथा 16 लड़के, कुल 41 बच्चे इस विद्यालय में अध्ययनरत हैं। सारे बच्चे मैदान में साथ खेलते हुए नजर आते हैं। बड़े बच्चे, छोटे बच्चों का ध्यान रखते हैं तथा शिक्षण–प्रक्रियाओं में भी बड़े बच्चे अहम भूमिका निभाते हुए नजर आते हैं। विद्यालय के प्रत्येक कार्यों में लड़के तथा लड़कियां सामान रूप से प्रतिभाग करते हैं। इन कार्यों में छोटे बच्चों का सहयोग मनमोहक होता है। वो एक हाथ से अपनी ढीली और नीचे सरकती पतलून को पकड़ते हैं और दूसरे नन्हे हाथों से टाटपट्टी के एक कोने को पकड़ कर फैलाने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में बहती हुई नाक को वो सम्भालने में कभी–कभी नाकाम भी हो जाते हैं। शिक्षिका और बच्चों के बीच दोस्ताना रिश्ते हैं जिनकी झलकियां प्रातःकालीन सभा, मध्यान्ह भोजन, कक्षा–शिक्षण की प्रक्रियाओं में तथा अन्य सभी गतिविधियों में देखी जा सकती हैं। प्रार्थना सभा के दौरान कतार में खड़े बच्चों को मैडम बहुत ही करीब से देखती हैं और उस दौरान उनके कमीज के बटन, कॉलर, बालों की बनावट, रिबन की गांठों को ठीक करते हुए नजर आती हैं। साफ–सफाई का भी पूर्णतः ध्यान रखा जाता है। कुछ ऐसा ही नजारा आप मध्यान्ह भोजन के समय भी देख सकते हैं जब टीचर भोजन माता के पीछे दाल का वितरण बच्चों में कर रही होती हैं। विद्यालय में भोजन माता के अकेले होने के कारण टीचर भी भोजन वितरण में सहायता करते हुए दिखाई देती हैं। इस विद्यालय में बच्चों के जन्मदिन को खूब धूमधाम से मनाया जाता है। सभी बच्चे तथा अध्यापक मिलकर इस दिन कुछ खास करते हैं। जो अब एक परम्परा सी बन गयी है। विद्यालय का वातावरण भयमुक्त प्रतीत होता है जिसका प्रभाव उपस्थिति पर साफ दिखाई देता है। इस विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति संतोषजनक रहती है। उपस्थिति के सम्बन्ध में शिक्षिकाओं का कहना है कि उनके यहां लगभग 95 प्रतिशत उपस्थिति रहती है। इसमें अभिभावकों की जागरूकता भी अपनी भूमिका निभाती है। जब बच्चों से इस सम्बन्ध में बातचीत की गई तो उनका कहना था, "यहां पढ़ने में मजा आता है और खूब खेलने का मौका मिलता है" जब शिक्षिकाओं से इस बारे में बात की गयी तो उनका कहना था कि हम अपने विद्यालय में हमेशा इस भावना को जागृत करने में लगे रहते हैं कि यह बच्चों का स्कूल है, यहां जितनी सामग्री है वह भी उनकी है, इसका ध्यान रखना तथा रख–रखाव की भी प्राथमिक जिम्मेदारी उनकी ही है। यही कारण है कि बच्चे यहां आना पसंद करते हैं। इसका जीवंत उदाहरण यह दिया गया कि कभी–कभार बच्चों को अन्य कार्यों के कारण बाजार तथा अपनी रिश्तेदारी में जाना होता है तो पहले बच्चे विद्यालय में आते हैं, कुछ समय शिक्षण कार्यों में प्रतिभाग करते हैं, तत्पश्चात सूचित करके चले जाते हैं, अर्थात पूरे दिन का अवकाश नहीं लेते हैं।

कौशल्या बिजल्वाण

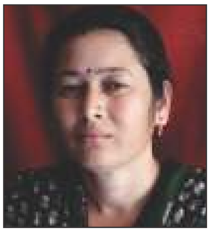

संगीता रावत

स्वअनुशासन स्थापित करने की प्रक्रिया में अपनाए गए तौर तरीकों से विद्यालय में चल रही शैक्षिक प्रक्रियाओं या शैक्षिक गुणवत्ता को समझा जा सकता है। विद्यालय में 'अनुशासन' बनाने हेतु सभी शिक्षिकायें प्रयासरत रहती हैं, ऐसा करने के पीछे उनका विचार है कि यदि विद्यालय में अनुशासन ठीक रहेगा तो बाकी के कार्य सुचारू रूप से चलते हैं। यहां प्रश्न यह भी है कि 'किस प्रकार के कार्यों को तथा उनके करने के तरीके को अनुशासन के अधीन रखा जाए?' और इस अनुशासन को बनाने के तरीके कैसे हो? इस विद्यालय की शिक्षिकाएं विद्यालय में अनुशासन बनाये रखने के लिए किसी भी प्रकार के दंड में विश्वास नहीं रखती हैं। उनका विचार है कि बच्चे बहुत कुछ अपने बड़ों जैसे माता–पिता, भाई–बहन, शिक्षकों के व्यवहार से सीखते हैं। संगीता मैडम का इस बात में गहरा विश्वास है कि जब हम अपने व्यवहार में, कार्य करने के तरीकों में स्व अनुशासन का पुट रखेंगे तो बच्चे स्वयं ही इन प्रक्रियाओं से कुछ न कुछ सीखेंगे। अनुशासन के सम्बन्ध में उनका ये भी कहना है कि 'अनुशासन कोई नैतिक शिक्षा की किताब नहीं है जिसे पढ़ाया जाए और पाठ के अंत में

उसके उद्देश्य या उससे क्या शिक्षा मिली, इस बात को स्पष्ट कर दिया जाए बल्कि यह एक प्रक्रिया है जिसका प्रयोग हम किसी भी कार्य को व्यवस्थित रूप से करने में करते हैं। इन प्रक्रियाओं को देखते, इनमें शरीक होते–होते बच्चे बहुत कुछ सीख जाते हैं। इस प्रकार से बनाई गई अनुशासित व्यवस्था स्थाई रूप से बन जाती है और विद्यालय में बच्चों के क्रिया–कलापों में स्वतः ही देखने को मिलने लगती हैं। जब इस विद्यालय के बच्चों से बातचीत की गई तो यह आभास हुआ कि विद्यालय में खुले संवाद की परम्परा है। बातचीत के दौरान बच्चों के द्वारा पूरे आत्मविश्वास के साथ दिए गए उत्तर या किए गए प्रश्न इस बात के गवाह हैं कि विद्यालय में बच्चों को और उनके विचारों को सम्मान दिया जाता है।

अध्यापकों में परस्पर सहयोग, समन्वयन तथा समुदाय का समर्थन विद्यालय को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है। विद्यालय और समुदाय के बीच के सम्बन्ध के बारे में अध्यापकों का विचार है कि विद्यालय प्रबन्धन समिति की प्रत्येक बैठक में समुदाय की प्रतिभागिता संतोषजनक रहती है। साथ ही साथ समुदाय से निरंतर संवाद इस रिश्ते की प्रगाढ़ता में अपनी अहम भूमिका निभाता है। शिक्षिकाओं के पास समुदाय के अधिकांश लोगों का फोन नम्बर है। इन नम्बरों का प्रयोग केवल बैठक बुलाने में ही नहीं किया जाता अपितु बच्चों की अनुपस्थिति के कारणों को जानने में, वर्षा के मौसम में बच्चों के सही–सलामत घर पहुंचने की सूचना में तथा किसी बच्चे की तबियत बिगड़ जाने पर अभिभावकों तक सूचना पहुंचाने में किया जाता है। जिससे समुदाय की नजरों में इन शिक्षिकाओं की छवि सम्मानजनक है। इस रिश्ते का जीता–जागता उदाहरण तब मिला जब शिक्षिकाओं के स्थानान्तरण की उड़ती हुई खबर समुदाय के किसी सज्जन तक जा पहुंची और समुदाय के लोग हाथ जोड़कर इनको रोकने में लग गए और कहने लगे कि उनको अपनी पूरी नौकरी यहीं पर करनी है, ये उनके बच्चों के भविष्य का सवाल है।

सरकारी विद्यालयों के सम्बन्ध में अमूमन यह सुनने में आता है कि इन विद्यालयों में केवल गरीब परिवार के बच्चे ही पढ़ते है लेकिन इस धारणा को कहीं न कहीं तोड़ते हुए यह गांव नजर आता है। इस विद्यालय में सरकारी विभागों में कार्यरत लोग भी अपने बच्चों का नामाकंन करवाए हुए हैं। वर्तमान समय में इस विद्यालय की कक्षा 5 में अनूप अध्ययनरत है जो पिछले वर्ष किसी निजी विद्यालय में पढता था। ऐसे ही दो बच्चे और हैं जिनका नामांकन निजी विद्यालयों से इस विद्यालय में करवाया गया है। ऐसा करने के पीछे अभिभावकों का विचार है कि यह विद्यालय निजी विद्यालयों से कहीं बेहतर ठहरता है क्योंकि यहां की शिक्षिकाएं बच्चों का अधिक ध्यान रखती हैं। यह ध्यान जितना शैक्षिक होता है उतना ही उनके स्वास्थ्य से सम्बन्धित भी होता है। समुदाय के सम्बन्ध में इस विद्यालय की शिक्षिकाओं का विचार है कि जो परिवार कुछ पढ़े–लिखे हैं वो अपने बच्चों पर अधिक ध्यान देते हैं, अपेक्षाकृत कम या नहीं पढ़े–लिखे परिवारों की तुलना में। समुदाय के सम्बन्ध में शिक्षिकाओं का विचार है कि इस विद्यालय को समुदाय का भरपूर सहयोग मिलता है।

विद्यालय प्रबन्धन समिति के पूर्व अध्यक्ष का कहना था, ''मैं अन्य सरकारी विद्यालयों की बात नहीं करती पर हमारा स्कूल निजी विद्यालयों से कहीं बेहतर है। हमने खुद अपने बच्चों का नामाकंन प्राईवेट विद्यालय से इस विद्यालय में करवाया है। मैडम लोगों ने और लोगों को भी प्रेरित किया और आज हमारे गांव के अधिकतर बच्चे इसी विद्यालय में पढ़ते है। मेरे बच्चे इस विद्यालय में नहीं पढ़ते फिर भी मैं यहां आती रहती हूं'' नामांकन के सम्बन्ध में कौशल्या मैडम का भी कहना था कि एक समय ऐसा भी आया जब इस विद्यालय में बच्चों की संख्या 20 से कम हो गयी थी। फिर हमने अभिभावकों से बातचीत की और उनसे कहा कि आप एक बार हम पर विश्वास करिए, यदि परिणाम आपके अनुकूल न हुआ तो आप अपने बच्चों को जहां दिल करे ले जाईयेगा और आज स्थिति यह है कि हमारे विद्यालय में 41 बच्चों का नामांकन है।

कक्षाओं में प्रवेश करते ही बहुत सारी शिक्षण अधिगम सामग्रियों (TLM) को आप देख सकते हैं। इन सामग्री की देख–रेख की जिम्मेदारी बच्चों की है। बच्चे इनको छूते हैं, देखते हैं, इनसे खेलते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि सामग्रियां बच्चों की पहुंच में हैं। ऐसा करते हुए कभी–कभार कुछ सामग्रियां टूट भी जाती हैं लेकिन ऐसा करने से बच्चों को डराया या धमकाया नहीं जाता है बल्कि फिर से उन सामग्रियों का निर्माण बच्चों के साथ मिलकर किया जाता

है। बच्चों से बातचीत करके ये मालूम हुआ कि इन सामग्रियों को शिक्षिकाओं के साथ मिलकर बनाया गया है। कुछ मैडम लोगों के द्वारा भी बनायी गयी है लेकिन अधिकांश सामग्री को बनाने में बच्चों का पूर्ण सहयोग रहा है। शिक्षण प्रक्रियाओं में इन सामग्रियों के माध्यम से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सुगम किया जाता है। मैडम लोगों का विचार है कि इन सामग्रियों के माध्यम से जटिल से जटिल अवधारणाओं को भी आसानी से बच्चों को स्पष्ट कराया जा सकता है। गणित विषय में इन सामग्रियों की भूमिका और बढ़ जाती है क्योंकि गणित विषय की प्रकृति अमूर्त होती है जिसके कारण इस विषय को समझने में बच्चों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शिक्षक अधिगम सामग्रियों के माध्यम से इन कठिनाइयों को बहुत हद तक कम करने की कोशिश की जाती है या कम की जाती है। भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में कौशल्या मैडम का विचार है कि भाषा से बच्चों का गहरा सम्बन्ध होता है क्योंकि बच्चा भाषा के द्वारा ही अपने आस–पास में घटित होने वाली घटना को समझने की कोशिश करता है या समग्रता में आप कह सकते हैं कि भाषा ही वह औजार है जिसके द्वारा बच्चा समाज को जानने या पहचानने का प्रयत्न करता है। वो समाज के साथ रह कर ये समझ या जान जाता है कि कौन सी बात कहां और कब बोलनी है या नहीं बोलनी है। हिंदी भाषा का विद्यालय में पढ़ाई जाने वाली प्रत्येक विषय में प्रयोग होता है। जब तक बच्चा हिंदी भाषा को अच्छी तरह से लिख या पढ़ नहीं सकता तब तक उस बच्चे को दूसरे विषयों को पढ़ने में कठिनाई होगी क्योंकि वर्तमान समय में विद्यालय में प्रत्येक विषय हिंदी में ही पढ़ाया जाता है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को हिंदी विषय का ज्ञान तो होना ही चाहिए। इनका विचार है कि भाषा सिखाने में मातृभाषा की अपनी महत्ता है जिसको नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। इसकी महत्ता तब और बढ़ जाती है जब हम छोटे बच्चों के साथ बातचीत कर रहे होते हैं। क्योंकि शुरूआती दिनों में छोटे बच्चों को हिंदी भाषा को समझने में कठिनाई होती है जिसके कारण शिक्षण कार्य के दौरान वो अपने आप को कटे–कटे से महसूस करते हैं, इसलिए हम शिक्षण कार्य के दौरान मातृभाषा का अधिक प्रयोग करते हैं। इसके कारण बच्चों से रिश्ते सहज हो जाते है और अपने स्तर की अवधारणाओं को शीघ्र समझ जाते हैं।

हालांकि दोनों शिक्षिकाओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी तकलीफें हैं, फिर भी उत्साह में कोई कमी नहीं दिखाई देती है। हमेशा कुछ नया करने की ललक रहती है जिसे पूरा करने के लिए इन बच्चों को शिक्षकों के द्वारा अतिरिक्त समय भी दिया जाता है। इतना ही नहीं, अपने घरों पर भी बुलाकर बच्चों को निःशुल्क पढ़ाया जाता है। अतः छाड़ा का यह प्राथमिक विद्यालय अपने उद्‌देश्यों की ओर निरन्तर अग्रसर है।

(सहयोग : सौरव ठाकुर व फोटो : इमरान)

फूल

फूलों के कई रंग है होते,
जिनके ऊपर मंडराते भौंरे।
फूल बहुत कोमल होते हैं,
इन फूलों को कभी न तोड़ो।
अलग–अलग होते हैं फूल,
सबको अच्छे लगते फूल।
इन फूलों से जीना सीखो,
ये हैं प्यारे फूल।

– रवीना वर्मा
कक्षा– 7 रा.क.उ.प्रा. विद्यालय,
डामटा, नौगावं, उत्तरकाशी

बेहतर शैक्षिक संस्कृति रचने का प्रयास

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बजलाड़ी, नौगांव

– दिनेश कोठियाल, परमोद बक्शी

शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक पक्षों के संतुलन से बच्चों में आत्मविश्वास स्वतः बढ़ने लगता है और रचनात्मकता भी बनी रहती है। इसके लिए जरूरी है शिक्षकों का खुद का अनुभव और रुझान भी इस दिशा में हो।

"कुछ करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए इस दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं।"

–अब्राहम लिंकन

अक्सर इस विपर्यय के दौर में हम अपने आसपास निराशाजनक उदाहरणों को देखकर अपनी स्वप्रेरणा को खो देते हैं, और बिना प्रयास के हार मान लेते हैं। इस हार का पूरा दोष सरकार और व्यवस्था पर डाल देते हैं। अगर हम अपने आसपास के हतोत्साहित करने वाले तत्वों को नज़रअंदाज करके कुछ करने का प्रयास करते हैं तो हम पाते हैं कि हमेशा ऐसा नहीं होता कि हम प्रयास करें और हमारे हाथ निराशा लगे। बस, जरूरत शुरूआत करने की होती है। इसमें यदि सफलता न भी मिले तो सीख अवश्य मिलती है। जब कोई स्वप्रेरित होकर, स्वयं लीक से हट कर कुछ विशेष करने का प्रयास करता है, तो उस कार्य के अच्छे और बुरे परिणाम को वह सहर्ष स्वीकार करता है और उन्हें बेहतर करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहता है। जिन्होंने इस तरह के प्रयास करने की कोशिश की है, वह बहुत हद तक सफल भी हुए हैं। ऐसे ही प्रयास हमें नौगांव विकासखण्ड के एक दूरस्थ विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय बजलाड़ी में देखने को मिलते हैं। जहां शिक्षकों ने स्वप्रेरणा से अपने स्तर पर छोटे–छोटे प्रयास करके विद्यालय को एक नयी दिशा देने का काम किया है। इस विद्यालय से हमें यह सीख भी मिलती है कि परिवर्तन के लिए छोटे–छोटे प्रयास भी कितने महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बजलाड़ी में कार्यरत श्री जनार्दन प्रसाद नौटियाल, श्री हरिओम वर्मा और श्री बर्फिया लाल विद्यालय को नयी ऊंचाई में पहुंचाने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। शांत स्वभाव के नौटियाल जी, जो कि प्रधानाध्यापक हैं, कुछ वर्षों तक अकेले ही इस विद्यालय को संचालित करते रहे। अब उत्साह और रचनात्मकता के गठजोड़ ने विद्यालय

को एक नया मुकाम दिया है। श्री हरिओम वर्मा और श्री बर्फिया लाल इस विद्यालय में वर्ष 2014 से कार्यरत हैं। जिस वर्ष इन्होंने इस विद्यालय में कार्यभार संभाला था, उस समय कक्षा–8 के पासआउट होने के बाद विद्यालय में छात्र संख्या बहुत कम रह गई थी। इसके बाद तीनों शिक्षकों ने मिलकर इसे एक चुनौती के रूप में लिया और इससे निपटने के लिए प्रयास शुरू किये। इस विद्यालय के आसपास के चारों गांवों के समुदाय से सम्पर्क किया। तीनों शिक्षकों की मेहनत रंग लायी और विद्यालय के आस–पास के सभी गांवों के अभिभावकों ने अपने बच्चों का नामांकन इस विद्यालय में करवाया। उस समय से चारों गांव के अभिभावक अपने बच्चों का नामांकन इसी विद्यालय में करवाते हैं। यहीं से शुरूआत हुई थी इस विद्यालय को नयी दिशा ले जाने की।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बजलाडी ब्लॉक मुख्यालय नौगावं से 39 किमी और संकुल संसाधन केन्द्र तियां से 4 किमी. दूरी पर स्थित है। बजलाडी दिल्ली–यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर बर्नीगाढ़ से लगभग 30 किमी. दक्षिण–पूर्व दिशा में देवराना के देवदार के घने जंगल के नीचे बसा है। इस गांव से लगे हुए तीन और गांव, पमाड़ी, नरियूंका और खाबला हैं। इस क्षेत्र के प्रसिद्ध देवता लुद्रेश्वर महादेव का मन्दिर भी इसी गांव में बना हुआ है। यहां के रीति–रिवाज व पहनावे आदि जौनपुर, जौनसार बावर से मिलते हैं। सर्दियों में यहां बर्फ गिरने के कारण ठंड अधिक होती है और गर्मियों में यहां का मौसम सामान्य रहता है। इस गांव में कुल 45 परिवार रहते हैं। यहां अभी भी संयुक्त परिवार प्रथा देखने को मिलती है। यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है।

इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 1994–95 में हुई थी। वर्तमान में यहां कुल 56 बच्चों का नामांकन है। जिसमें 23 बालक और 33 बालिकाएं हैं। मध्याह्न भोजन व्यवस्था हेतु दो भोजन माता कार्यरत हैं। भौतिक पक्ष की बात करें तो इस विद्यालय में 4 कक्षा–कक्ष, एक अतरिक्त कक्ष, बालक व बालिकाओं के लिए अलग–अलग शौचालय हैं। अतरिक्त कक्ष में कार्यालय, पुस्तकालय व कम्प्यूटर कक्ष बनाया गया। विद्यालय में 2 लाउड स्पीकर 2 माईक तथा 1 ढ़ोलक है। बच्चों के लिए खेलने हेतु फुटबॉल, चक्का और गोला उपलब्ध है। खेलने के लिए पर्याप्त मैदान है। विद्यालय में बच्चों के लिए 2 कम्प्यूटर और पुस्तकालय उपलब्ध हैं। शिक्षक बच्चों को कम्प्यूटर का शिक्षण भी नियमित रूप से करवाते हैं। बच्चे कम्प्यूटर पर टाईपिंग और चित्रकारी कर

लेते हैं। विद्यालय में समाचार पत्र नियमित आता है जिसको बहुत सारे बच्चे रुचि से पढ़ते हैं। विद्यालय के पुस्तकालय का उपयोग और प्रबंधन भी बच्चे नियमित रूप से करते हैं।

किसी विद्यालय की दिनचर्या का अंदाजा विद्यालय की प्रातःकालीन सभा से ही लगाया जा सकता है। विद्यालय में इस सभा का आयोजन इस तरह से किया जाता है कि बच्चों में पूरे दिन स्फूर्ति का संचार बना रहे। उच्च प्राथमिक व प्राथमिक विद्यालय बजलाड़ी एक ही परिसर में हैं। दोनों विद्यालय के बच्चों का खेल मैदान एक ही है। इसलिए दोनों विद्यालयों की प्रातःकालीन सभा एक साथ होती है। इसमें साउन्ड सिस्टम का उपयोग किया जाता है। यहां की प्रार्थना सभा की मुख्य विशेषता यह है कि यहां बच्चे प्रार्थना जमीन पर बैठकर करते हैं। प्रातःकालीन सभा में बच्चे अलग–अलग प्रार्थनाओं के साथ समूहगान, सामान्य ज्ञान व विषयों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी भी करते हैं। कक्षा 1 व 2 वाले बच्चे कविताएं सुनाते हैं। जिस दिन जिस कक्षा की बारी प्रार्थना सभा की होती है उस दिन उस कक्षा का प्रत्येक बच्चा 5–5 प्रश्न तैयार करके लाता है और प्रार्थना सभा में पूछता है। शिक्षकों द्वारा सह–शैक्षणिक गतिविधियों को उतना ही महत्व दिया जाता है जितना कि शैक्षिणिक गतिविधियों को। शिक्षकों का मनाना है कि बच्चों के साथ सह–शैक्षणिक गतिविधियां जितनी बेहतर होगीं बच्चे शैक्षणिक गतिविधियों में उतना ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे। विद्यालय में प्रत्येक शनिवार को बाल सभा और माह के अन्तिम शनिवार को प्रतिभा दिवस का आयोजन किया जाता है। इन दिवसों में बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियां की जाती हैं, जिसमें कविताएं, कहानी, पहेलियां, समूहगान, पहाड़ों, हिन्दी शब्दों की, अंग्रेजी शब्दों की अन्त्याक्षरी, प्रार्थना, चित्रकारी, सूक्तियां, नाटक, मौन नाटक, लोक नृत्य, लोक गीत और खेल आदि। बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग करते हैं। राष्ट्रीय पर्वों को रा. प्रा. वि. पमाड़ी, बजलाड़ी और उच्च प्राथमिक विद्यालय बजलाडी मिलकर मनाते हैं।

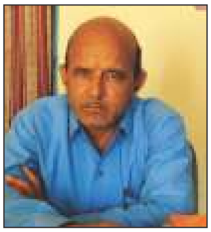

जनार्दन प्रसाद नौटियाल

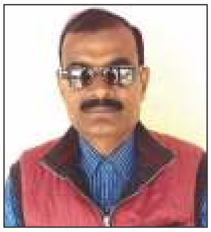

हरिओम वर्मा

बर्फिया लाल

शिक्षकों द्वारा विद्यालय में जो प्रक्रियाएं अपनाई गयी हैं उनसे बच्चे आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर हैं। बच्चों की आत्मनिर्भरता विद्यालय प्रबन्धन के कार्य से ही स्पष्ट झलकती है। विद्यालय प्रबन्धन का पूरा कार्य बच्चे स्वयं ही करते हैं। बच्चों का आपसी तालमेल देखने लायक है। बच्चे एक–दूसरे के सहयोग के लिए हर समय तैयार रहते हैं। विद्यालय के प्रबन्धन से सम्बन्धित सभी कार्य मिलजुलकर करते हैं। कक्षा कार्य में एक–दूसरे की सहायता करना उनके स्वभाव का हिस्सा बन गया है। विद्यालय प्रबन्धन हेतु दो मुख्य मॉनिटर बनाए गये हैं। इसके साथ प्रत्येक कक्षा में भी दो–दो मॉनिटर बनाए गये हैं। मुख्य मॉनिटर द्वारा पूरे विद्यालय का प्रबन्धन कार्य करवाया जाता है।

विद्यालय के शैक्षिक माहौल का अन्दाजा कक्षा–कक्षों के प्रिन्ट–रिच वातावरण से लगाया जा सकता है। कक्षाओं में बच्चों और शिक्षकों द्वारा अलग–अलग विषय से सम्बन्धित चार्ट–पोस्टर लगाए गये हैं। यहां बच्चे सीखने के लिए उत्सुक रहते हैं और शिक्षक सिखाने के लिए तत्पर रहते हैं। शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के लिए पूर्व तैयारी करते हैं। जिसके लिए वे पुस्तकों और इन्टरनेट का उपयोग करने के साथ–साथ सरकारी और गैर–सरकारी प्रशिक्षणों में जहां मौका मिलता है, वहां प्रतिभाग करते हैं। शिक्षण के लिए सह–समाग्री को बनाने के लिए कबाड़ से जुगाड़ वाली प्रक्रिया भी अपनाते हैं। अर्थात खराब वस्तुओं से टीएलएम बनाते हैं। शिक्षक बच्चों को विषयों की अवधारणाओं को स्पष्ट कराने के लिए विभिन्न प्रकार के टीएलएम का उपयोग करते हैं। मानचित्र की अवधारणा, मानचित्र को दिखाकर और उसको बच्चों के द्वारा बनवाकर स्पष्ट कराई जाती है। इसके साथ ग्लोब से पृथ्वी के झुकाव तथा उसके परिभ्रमण एवं परिक्रमण को समझाया जाता है। इस तरह से पूरानी एवं नयी पद्धत्ति के शिक्षण का मिश्रित रूप यहां देखने को मिलता है। हरिओम गुरूजी का कहना है कि मैं बच्चों को किसी ऐतिहासिक घटना को स्पष्ट करते समय मानचित्र का उपयोग करता हूं जिससे बच्चों

को यह स्पष्ट हो जाय कि कौन सी घटना किस स्थान विशेष में घटित है। गणित की अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए अधिक से अधिक टीएलएम का उपयोग किया जाता है।

शिक्षक बच्चों को अवधारणओं को स्पष्ट कराने और उन्हें समृद्ध करने के लिए इस प्रकार के कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ गणित शिक्षण में माचिस की तीली का प्रयोग करके बीज गणित की शुरुआती अवधारणा को बच्चे आसानी से समझ पाते हैं। विज्ञान के शिक्षण में बच्चों को नियमित रूप से प्रेक्टिकल करवाये जाते हैं जिससे बच्चों को विज्ञान विषय से सम्बन्धित अवधारणएं स्पष्ट हो जाएं। बच्चों की आवश्यकता के अनुसार अवधारणाओं को और स्पष्ट करवाने हेतु समूह कार्य भी करवाया जाता है। इस सन्दर्भ में बच्चों ने कहा कि हमें शिक्षक बहुत सरल तरीके से पढ़ाते हैं। बच्चों द्वारा यह भी बताया गया कि शिक्षक हमें मज़े–मज़े से पढ़ाते हैं और श्री बर्फिया लाल जी हमें शिक्षण के दौरान हंसाते भी हैं। यदि किसी के समझ में कोई अवधारणा स्पष्ट नहीं होती है तो शिक्षक हमें दो–दो या चार–चार के समूह बनवाकर आपस में सीखने का मौका प्रदान करते हैं। बच्चों के मूल्यांकन प्रक्रिया के बारे में श्री हरिओम वर्मा जी बताते हैं कि मूल्यांकन में बच्चों के शैक्षणिक पक्ष के साथ–साथ सह–शैक्षणिक पक्ष का भी ध्यान रखा जाता है। शिक्षकों द्वारा बच्चों के किये गये कार्यों का संकलन बॉक्स फाईल में संकलित किया गया है। सभी कक्षाओं में बच्चे हिन्दी अच्छी तर से पढ़ते और समझते हैं। गणित की सामान्य संक्रियाओं को अच्छी तरह से करते हैं। शिक्षक बच्चों को बहुत सारे अंग्रेजी के शब्दों को लिखवाते व पढ़वाते हैं। इससे बच्चे अंग्रेजी सीखने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बच्चे इन शब्दों को याद करते हैं और बाल सभा और प्रतिभा दिवस के दिन शब्दों की शब्दान्त्यक्षरी खेलते हैं। इस खेल को खेलने में आनन्द लेने के साथ बहुत सारी शब्द अवधारणाएं भी स्पष्ट भी हो जाती हैं।

बच्चों और शिक्षकों का आपसी सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बच्चे बिना किसी भय के शिक्षकों से सवाल–जबाब करते हैं। बच्चे शिक्षकों के साथ बहुत ही खुले हैं। वह आपस में हर मुद्दे पर बातचीत करते हैं। बच्चे शिक्षकों से बिना किसी झिझक के किसी भी मुद्दे पर बातचीत करते हैं। बातचीत का मुद्दा

चाहे शैक्षणिक हो या अन्य, बच्चे अपनी राय रखते हैं तथा शिक्षकों की सलाह लेते हैं।

बच्चों द्वारा आपसी तालमेल के बारे में बताया गया कि यदि किसी बच्चे का कक्षा कार्य छूट जाता है या कोई किसी दिन विद्यालय नहीं आता है तो उसके कार्य को पूरा करवाने में मदद करते हैं। बच्चे आपस में एक दूसरे को भी सिखाते हैं। यदि किसी को पढ़ना या कोई सवाल समझ नहीं आता तो हम आपस में एक दूसरे को भी सिखाते हैं। यदि कोई बच्चा कुछ खाने–पीने की वस्तु लाता है तो आपस में सभी कक्षाओं के बच्चे मिलकर खाते हैं। बच्चों ने कहा कि यदि कोई मट्ठा लाता है तो उसे भी हम सभी बच्चों को बांटते हैं चाहे वह सब के हिस्से थोड़ी–थोड़ी ही क्यों न आये।

इस विद्यालय के शिक्षकों ने बच्चों के लिए एक नई पहल की है। इस पहल के तहत शिक्षकों द्वारा बच्चों के लिए सामान्य ज्ञान गतिविधि का आयोजन किया जाता है। इस सामान्य ज्ञान गतिविधि को अपने ही विद्यालय तक ही सीमित नहीं रखते बल्कि आसपास के सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को इसमें शामिल करते हैं। सामान्य ज्ञान गतिविधि के लिए तीन स्तर के प्रश्न पत्र तैयार किये जाते हैं– कक्षा एक व दो, कक्षा तीन से पांच तथा कक्षा छह से आठ। वर्ष 2015 से इस गतिविधि को किया जा रहा है, इसमें टीम भावना का भी ख्याल रखा जाता है। इस गतिविधि के लिए रूद्रेश्वर शिक्षा समिति का गठन किया गया है। विभिन्न गतिविधियों के आयोजन हेतु बच्चों को

शिक्षण सामग्री भी उपलब्ध करवाते हैं जिसमें कॉपी, पेन, पेसिंल, मानचित्र एवं चार्ट पेपर आदि शामिल हैं।

शिक्षकों द्वारा सह–शैक्षणिक गतिविधियों को भी उतना ही महत्व दिया जाता है जितना कि शैक्षणिक गतिविधियों को। यही कारण है कि शिक्षकों द्वारा बच्चों की संकुल और ब्लॉक स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों के लिए बड़ी सिद्दत से तैयारी करवायी जाती है। शिक्षकों द्वारा बताया गया कि इस विद्यालय के बच्चे वर्ष–2014 से खेलकूद गतिविधियों में प्रतिभाग कर रहे हैं। इस वर्ष इस विद्यालय से खो–खो के लिए छः बच्चों का चयन जिला स्तर के लिए हुआ। विद्यालय में बच्चों के खेलने के लिए फुटबॉल, चक्का, गोला आदि की व्यवस्था है। इस सामग्री का उपयोग बच्चे समयानुसार करते हैं।

बच्चों के प्रति शिक्षकों के नज़रिये की बात करें तो शिक्षकों का यह मानना है कि हर एक बच्चा सीख सकता है। शिक्षकों का कहना है कि स्कूल के बच्चों की सफलता ही हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। बच्चों की सफलता के लिए वह निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। कक्षा में उन बच्चों को ज्यादा मौके दिये जाते हैं जो सीखने में पिछड़ रहे होते हैं। कक्षा शिक्षण के साथ सह–शैक्षणिक गतिविधियों में सभी बच्चों को समान अवसर दिये जाते हैं। विद्यालय प्रबन्धन, प्रातःकालीन सभा, बाल सभा, कक्षा–कक्ष व्यवस्था, खेलकूद में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियां की जाती हैं। जिसमें बच्चों को समूह में कार्य देना एक मुख्य गतिविधि है। बच्चों द्वारा स्कूल के पीछे क्यारियां बनायी गयी हैं। इनमें बच्चे मिलकर कार्य करते हैं। इन क्यारियों में सब्जी की बेलें और दाल उगाई जाती है जिसका उपयोग मध्याह्न भोजन में किया जाता है।

शिक्षकों द्वारा अपने रहने की व्यवस्था गांव और गांव के नजदीक ही की गयी है। इससे गांव के लोगों के साथ समन्वय अच्छा बना रहता है। शिक्षकों के गांव में रहने से गांव के बच्चों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति से अच्छी तरह से रू–ब–रू हैं। इसका फायदा यह भी होता है कि शिक्षकों को यह मालूम होता है कि बच्चे स्कूल क्यों नहीं आ रहे हैं। जैसे खेती कार्य व फसल के कटने के समय बच्चे घर में सहयोग करते हैं। शिक्षक बच्चों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनकी मदद भी करते हैं। गांव के लोगों द्वारा विद्यालय के लिए साउन्ड सिस्टम खरीदने में सहयोग किया गया। इन्हीं के सहयोग से विद्यालय के मैदान के दोनों तरफ बच्चों के बैठने के लिए पक्की सीढ़ियां बनाई गयी हैं। इसके अलावा सभी अभिभावक राष्ट्रीय पर्वों पर विद्यालय में आते हैं। विद्यालय में होने वाली बैठकों में भी प्रतिभाग करते हैं। समुदाय के लोग शिक्षकों पर विश्वास करते हैं। समुदाय के लोगों का कहना है कि जब से यहां पर शिक्षक पूरे आये हैं तबसे शिक्षण कार्य बहुत अच्छा चल रहा है। अभिभावक अपने बच्चों को समय से शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाते हैं। कुल मिलाकर यह विद्यालय बिना किसी अधिक चकाचौंध, हो–हल्ला और संसाधनों के नौनिहालों के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर प्रयासरत है।

(सहयोग : कमलेश गौड़ व फोटो : परमोद बक्शी)

टीचर लर्निंग सेन्टर (TLC)

प्रिय शिक्षक साथियो, हम जानते हैं कि आपके पास अनुभवों की एक विशाल दुनिया है। अनुभव बच्चों को समझने, उनके सीखने की विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल होने, विभिन्न विषयों को समझने और उन्हें बरतने व नई प्रक्रियाओं को ईजाद करने के।

कुछ इच्छायें भी हैं, साथ मिलकर बैठने की, बोलने बतियाने की, कुछ अपना लिखा–पढ़ा, देखा–सुना साझा करने की, कभी–कभार खेलों में भागीदारी करने की भी...इस सबके लिए शैक्षिक एवं मानवीय संसाधनों युक्त जगह के तौर पर टीचर लर्निंग सेन्टर संचालित है।

यह सेन्टर शिक्षकों को अपनी बात रखने, शैक्षणिक चुनौतियों को साझा करने, मिलकर फिल्में देखने, आपसी अनुभवों से सीखने, मिल–जुलकर कुछ रुचिकर पढ़ने, अकादमिक चर्चाएं करने के लिए उपलब्ध है। ताकि विद्यालय में कक्षाकक्षीय प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के नये–नये तरीकों पर बातचीत हो सके।

आपकी स्वैच्छिक भागीदारी ही टीचर लर्निंग सेंटर का आधार है।

उत्तरकाशी के टीचर लर्निंग सेंटर

टीचर लर्निंग सेंटर
मां गंगा गेस्ट हाउस, द्वितीय तल
निकट भारतीय स्टेट बैंक
चिन्यालीसौड़, पिन– 249196

टीचर लर्निंग सेंटर
निकट राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय
मेन मार्केट, मोरी, पिन– 249128

टीचर लर्निंग सेंटर
आई.एस.बी.टी. कॉम्पलेक्स
कुमोला रोड, पुरोला पिन– 249185

टीचर लर्निंग सेंटर
निकट रावत होटल
आई.टी.आई. रोड, बड़कोट, पिन– 249141

टीचर लर्निंग सेंटर
अत्रा गेस्ट हाउस
निकट एस.बी.आई. ए.टी.एम.
ब्रह्मखाल, पिन– 249152

उत्तरकाशी जिला संस्थान
महिमानन्द कुडियाल भवन
भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी, पिन– 249193

नोट– यह सेन्टर आपकी सुविधा का ख्याल रखते हुए रविवार समेत अधिकांश सार्वजनिक अवकाशों पर भी खुला रहेगा।

Azim Premji Foundation

Towards a just, equitable, humane and sustainable society

सम्पादक– कैलाश चन्द्र काण्डपाल, **सम्पादकीय सहयोग–** आशीष त्रिपाठी, संजय सेमवाल, खजान सिंह, संजीव बिजल्वाण, मदनमोहन पाण्डेय, प्रतिभा कटियार, **डिजायन–** बिजेन्द्र बलोनी, **प्रकाशक–** अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट, 53 ई.सी. रोड, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) **फोन/फैक्स–** 0135–2659864

निःशुल्क वितरण हेतु